कृति
णमोकार भारती
(प्रश्नोत्तर सहित)
रचयिता
105 ऐलक दयासागर जी महाराज
मंगलमय शुभाशीष
संत शिरोमणि परम पूज्य
गुरुवर आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज
संयोजन
पं. श्री सनतकुमार जी
विनोदकुमार जी रजवांस (सागर)
तृतीय आवृति–पयूषर्ण पर्व–2012
प्रतियां – 500
मूल्य – स्वाध्याय हेतु
अवसर
पूज्य आर्यिका रत्न श्री 105गुरुमति माताजी ससंघ के गुना नगर में पावन वर्षायोग पर आयोजित वीरान्त विद्या शिक्षण शिविर के अवसर पर .

प्रकाशन सहयोग

श्रीमति ऊषा जैन — ध. पं. श्री सुरेन्द्र जैन
श्रीमति सन्ध्या — ध. पं. स्व. जिनेन्द्र जैन
श्रीमति मंजू जैन — ध. पं. श्री सुनीलजैन किसान कटपीस परिवार
श्री सुगनचंद जी विनोदकुमार जैन विशाल श्री ऑटो पार्ट्स, गुना
श्री वीरेन्द्रकुमार जैन सराफ एवं समस्त परिवार

मुद्रक :
विकास ऑफसेट प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स, भोपाल, फोन : 0755-2601952

प्राक्कथन

किसी भी विषय को गहराई से समझकर उसे जीवन में आत्मसात करने के लिये उसका क्रमिक पठन पाठन, अध्ययन आवश्यक होता है। जिन्हें बचपन से ही जैन धर्म के क्रमिक अध्ययन का शुभ अवसर प्राप्त हुआ वे तो सौभाग्यशाली हैं ही, परन्तु जिन्होंने एक दृष्टि से क्रमिक अध्ययन करने की अवस्था व्यतीत हो जाने पर भी क्रमिक अध्ययन करने की अभिरुचि जाग्रत की, वे भी कम पुण्यशाली नहीं हैं।

आज मनुष्य शारीरिक व मानसिक अशांति से दु:खी है, उनको मोक्षमार्ग पर लाने के लिये हम सब पर करुणाभाव करके परम पूज्य आचार्य गुरुवर 108 श्री विद्यासागर ही महाराज के शिष्य ऐलक 105 श्री दयासागर जी महाराज ने **"णमोकार भारती"** को सरल भाषा में प्रश्नोत्तर रुप में सृजन कर हम सब पर बहुत उपकार किया है।

दिगम्बर जैन समाज, गुना ने **णमोकार मंत्र** की महिमा जन–जन के हृदय तक पहुंच सके इसी उद्देश्य की प्राप्ति हेतु परम पूज्य आचार्य श्री 108 श्री विद्यासागर जी महाराज से प्रथम दीक्षित

ज्येष्ठ व श्रेष्ठ आर्यिकारत्न 105 श्री गुरुमति माताजी के ससंघ गुना नगर में **पावन वर्षायोग 2012** में उनकी प्रेरणा से **"णमोकार भारती"** का पुनः प्रकाशन का हमें सुअवसर प्राप्त हुआ हे।

ऐलक श्री ने जो कठिन परिश्रम कर इस महामंत्र का विस्तार प्रश्नोत्तर शैली में कर हम अबोध बालकों व अल्पज्ञानियों पर जो उपकार किया है उसको कभी भी भुलाया नहीं जा सकता।

प्रस्तुत पुस्तक के पुनः प्रकाशनार्थ जिन साधर्मी जनों ने आर्थिक सहयोग दिया है हम उनके आभारी हैं। हम सभी वीरान्त विद्या शिक्षण शिविर के माध्यम से इसका विस्तृत अध्ययन, मनन कर और हृदयांगन कर लाभान्वित हों यही, सद्भावना है।

अध्यक्ष	संयोजक	मंत्री
अनिल जैन (नं.भा.)	महेन्द्र जैन बांझल	अनिल जैन (अंकल)
जैन समाज, गुना	वीरान्त विद्या शिक्षण शिविर गुना (म.प्र.)	जैन समाज, गुना

दो शब्द

सुख प्राप्ति का सच्चा उपाय रत्नत्रय है, इसके बिना अतीन्द्रिय सुख प्राप्त नहीं हो सकता है। अतः सर्वप्रथम हमें सम्यग्दर्शन प्राप्त करना है। आज तक हमने निज पर का भेद नहीं कर पाया है जिससे पर वस्तु को निज मानकर निरन्तर दुःखी होते आ रहे हैं। सुखाथी को तत्व निर्णय के म ाध्यम से अपनी श्रद्धा को समीचीन बनाना चाहिये तब ही सुख प्राप्ति के मूल कारण सम्यक् दर्शन को प्राप्त किया जा सकता है। तत्व निर्णय स्वाध्याय से होता है। आज के व्यस्ततम जीवन में व्यक्ति के पास समय का इतना अभाव है कि वह अपने आवश्यक कार्य को भी सयय से नहीं कर पाता फिर स्वाध्याय जैसे कार्य को तो समय ही नहीं निकल पाता। इस कारण वह अज्ञानी बना रहता है। यदि कोई समय निकालकर स्वाध्याय करता भी है तो भाषा एवं विषय की दुरुहता के कारण उसे कुछ समझ में नहीं आता, तब उसे स्वाध्याय से अरुचि होने लगती है। आचार्यों की भाषा शैली और विषय प्रतिपादन की विस्तृत पद्धति से ग्रंथ वृहदकार है। जिन्हें देखकर ही आज का व्यक्ति सोचता है यह ग्रंथ कब तक पढ़ सकेंगे। अतः स्वाध्याय के प्रति उदासीन हो जाता है

समय के अनुसार शास्त्रों का सरलीकरण/आधुनिकीकरण भी हो रहा है जिसमें लोगों की रुचि दिखाई दे रही है। वृहदाकार ग्रंथों की अपेक्षा छोटी-छोटी पुस्तकों के प्रति लोगों का आकर्षण बढ़ता जा रहा है। इसे दृष्टि में रखकर पूज्य आचार्य, मुनि, आर्यिका आदि लघुकाय ग्रंथों की सृजना कर लोगों पर उपकार कर रहे हैं।

इसी श्रृंखला में संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के प रम पूज्य ऐलक श्री 105 दयासागर जी महाराज ने इस पुस्तक के माध्यम से सम्यक दर्शन उत्पत्ति में मूल कारण पञ्च परमेष्ठी के स्वरुप को प्रश्नोत्तर के माध्यम से अत्यंत सरल बना दिया है। जिससे बालक या अल्प ज्ञानियों को लाभ हो सकता है। महाराज श्री ने अथक परिश्रम कर महान ग्रंथों के स्वाध्याय, मनन, चिन्तन एवं शोध करके स्व-पर कल्याण की भावना से इस ज्ञानवर्धक लघुकाय ग्रंथ की रचना की है, जो सुखी जीवन एवं आत्म चिन्तन के लिये अत्यंत उपयोगी है।

इसकी प्रूफरीडिंग एवं प्रकाशन आदि में लगे श्रम की कल्पना नहीं की जा सकती है। लेखक का श्रम एक लेखक ही समझ सकता है जिन्होंने इसमें सहयोग किया है। हम उनके बहुत बहुत आभारी है और वे आभार के पात्र हैं जिन्होंने इसके प्रकाशन में अर्थ सहयोग दिया है।

इस ग्रंथ में यदि भव्य जीव लाभ लेंगे तो महाराज ऐलक श्री का श्रम सार्थक होगा।

पं. सनत कुमार विनोद कुमार जैन
रजबांस (सागर) म.प्र. 470442
फोन नं. 07581-73211.

हृदयोदगार

मानव जीवन बड़ा महान है। उस महानता को प्रदान करने में हमें पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु एवं वनस्पति इन सभी का सहयोग परस्पर रुप से प्राप्त हुआ है। यह भी गौण नहीं किया जा सकता है क्योंकि इनके माध्यम से इस भौतिक शरीर को ऊर्जा शक्ति प्राप्त होती है। परंतु जीवन का दूसरा पहलू आध्यात्म पथ की ओर अग्रसर होना भी है। चूंकि यह मार्ग परम गुरु की कृपा से ही प्राप्त होता है उनकी असीम कृपा से मैं ने गुरु चरण सानिध्य में जो कुछ सीखा/ग्रहण किया उनकी ही अनुकम्पा इस प्रश्नोत्तर माला को शंका समाधान की इस सरल विद्या से आप तक पहुंचाने में सहयोगी है–उनकी यह अनुकम्पा भी धन्य है वह तो प्रशंस–नीय है ही, आज भौतिकता की चमक दमक से भरा हुआ यह वातावरण हमें अनेक प्रकार की शारीरिक, मानसिक अशांति को दे रहा है। यही कारण है कि हमारा मन अनेक प्रकार की व्याधियों से कुंठित होता जा रहा है। ऐसी स्थिति में यदि मंत्र शक्ति पर विश्वास किया जाये तो सारी समस्याओं का निदान हो सकता है। यह मंत्र रुपी अमोद अस्त्र हमारी सोयी हुई चेतना को जागृत कर हमें नई स्फूर्ति एवं ऊर्जा प्रदान करता है। वृक्ष की पहचान उसके फूल–फल से होती है। ठीक उसी प्रकार मंत्र की पहचान उसकी श्रद्धा/भक्ति विनय भाव से होती है। हमारी जितनी आस्था, भक्ति–विनय होगी, उसी के गुणन में हमें उसका फल प्राप्त होगा। यह "णमोकार भारती" (प्रश्नोत्तर) उसी मंत्र की उपज है। णमोकार मंत्र को मूल रुप से इस कृति का विषय बनाया गया है। इस कृति की संयोजना में उन सुधी की प्रेरणा भी सम्मिलित है जो मेरी दक्षिण भारत की यात्रा के दौरान गजपंथा सिद्ध क्षेत्र पर मुम्बई के सद्–गृहस्थ काशीप्रसाद जी ने दस उपवास दस लक्षण पर्वराज में वर्षा योग के समय किये। उन्होंने अपनी भावना रखी कि हम महानगरों में रहते हैं तथा वहां पर भागम भाग की जिन्दगी जीते हैं। हमें इतना समय नहीं मिलता है कि हम बड़े पुराणों तथा ग्रंथों को पढ़ सकें। अतः कोई सरल संक्षिप्त कृति हो जिसे आबाल–वृद्ध सभी समझ सकें उसी भावना स्वरुप मैंने इस कृति की संयोजना की। आशा है, इससे समस्त आबाल वृद्ध जिन धर्म के मूल सिद्धांतों का सूत्रपात कर सकेंगे। इसके पूर्व ब्र. श्री प्रदीप जी पीयूष द्वारा यह कृति जल्दबाजी में प्रकाशित की गई है। जो मुख्य तथ्य उसमें छूट गये थे। इसमें संशोधन कर नूतन शब्द शैली को परिमार्जित किया है। कुछ नवीन प्रश्नों को जोड़कर इसे आप तक प्रस्तुत करने में पंडित जी सनत कुमार विनोद कुमार जी का भी अमूल्य सहयोग हमें मिला। उन्होंने इस कृति को जन उपयोगी बनाने में अपना अमूल्य समय दिया है। वह भी धन्यवाद के पात्र हैं।

इस कृति में साधु परमेष्ठी ही अपनी साधना को बढ़ाकर उपाध्याय, आचार्य एवं अरिहंत तथा परमात्मा सिद्ध पद को प्राप्त होते हैं। उसी क्रम से इस कृति का विषय बनाया गया है।

परम पूज्य गुरुदेव श्री के चरणों में कोटिशः प्रणाम.

पौष सुदी वीर निर्माण सं. 2527

श्री दिगम्बर जैन मंदिर जी — ऐलक दया सागर

नरसिंहपुर (कंदेली)

विषय तालिका

1.	मंगलाचरण	1
2.	परमेष्ठी विवेचन	3 –37
3.	साधु परमेष्ठी	38–63
4.	उपाध्याय परमेष्ठी	64–71
5.	आचार्य परमेष्ठी	72–80
6.	अरिहंत परमेष्ठी	81–111
7.	सिद्ध परमेष्ठी	112–121
8.	सामान्य परमेष्ठी वाचक	122–126

मंगलाचरण

हे घाति कर्म घात कर स्वभाव धाता,
हे प्रशान्त शान्त देवाधि देव अनंत ज्ञाता।
हे सर्व कर्म मुक्त महा मुक्ति प्रदाता,
है सिद्ध प्रसिद्ध यह आगम बताता ॥1॥

हे संघ प्रमुख, दयालू है सूरि प्यारे,
जा हिंसादिक से बचा, भव से उवारे।
जो दीक्षा दे, ज्ञान सुधा पिलाते,
जे रत्नत्रय दानकर भव पार लगाते ॥2॥

जो चतु संघ को पठन पाठन करावें
जो ज्ञान साधन से मन को अचल बनावें।
जो त्याग धर्म धार सर्व सङ्ग तजै है,
जो ज्ञान–तप सुलीन साधु कहे है ॥3॥

यह पञ्च परम्, विज्ञान ही सार है।
जिनकी परम भक्ति, भव से तार है॥

शंका — **प्रश्न किसे कहते हैं ?**

समाधान — किसी पदार्थ/वस्तु को जानने की इच्छा विशेष को प्रश्न कहते हैं।

शंका — **उत्तर किसे कहते हैं ?**

समाधान — जिसके द्वारा मानव की जिज्ञासाओं, इच्छाओं का समाधान होवे उसे ही उत्तर कहते हैं।

परमेष्ठी विवेचन

प्रश्न 1 — **मंत्र किसे कहते हैं ?**

उत्तर — जो मन को शुद्ध करे, जिसके द्वारा सोई हुई चेतना शक्ति जागृत हो, मन को वश में करने वाले ऐसे बीज अक्षरों को मंत्र कहते हैं।

प्रश्न 2 — **मंत्र के जपने से क्या लाभ है ?**

उत्तर — मंत्र को जपने से शान्ति,सुख, समता, आत्म लाभ की उपलब्धि एवं योगों की शुद्धता होती है।

प्रश्न 3 — **योग किसे कहते हैं ?**

उत्तर — मन,वचन,काय की प्रवृत्ति को योग कहते हैं।

प्रश्न 4 — **वह कौनसा मंत्र है जिसके समस्त पद के आरम्भ में तथा अंत में "ण" रहता है ?**

उत्तर — वह मंत्रराज "णमोकार मंत्र" ही है।

प्रश्न 5 — **"णमोकार मंत्र" के जपने/पढ़ने से क्या लाभ होता है?**

उत्तर — "णमोकार मंत्र" जपने से पापों का नाश तथा मंगल की प्राप्ति होती है और मन की आकुलता को दूर करता है।

प्रश्न 6 — **इस मंत्र राज में कितने पद होते हैं ?**

उत्तर — सामान्य रुप से णमोकार मंत्र में पांच पद तथा विशेष रुप से 11 पद होते हैं।

प्रश्न 7 – **पद किसे कहते हैं ?**

उत्तर – योग्यता प्राप्त गुणी (पूज्य स्थान)को पद कहते हैं, एवं शब्दों के/अक्षरों के समूह को भी पद कहते हैं।

प्रश्न 8 – **यह मंत्रराज कौनसी भाषा में लिखा है ?**

उत्तर – यह मंत्रराज प्राकृत भाषा में लिखा गया है।

प्रश्न 9 – **भाषा किसे कहते है ?**

उत्तर – जिसके द्वारा मनुष्य अपने मन के विचारों को व्यक्त करे उसे भाषा कहते हैं।

प्रश्न 10 – **यह मंत्रराज क्या गद्यात्मक रचा गया है ?**

उत्तर – नहीं ! यह मंत्रराज पद्यात्मक ही रचा गया है।

प्रश्न 11 – **णमोकार मंत्र कौनसे छन्द से लिखा गया है ?**

उत्तर – णमोकार मंत्र "आर्या" छन्द में लिखा गया है।

प्रश्न 12 – **णमोकार महा मंत्र के रचियता कौन हैं ?**

उत्तर – णमोकार मंत्र के रचियता कोई भी नहीं हैं,यह अनादि निधन मंत्र है।

प्रश्न 13 – **णमोकार मंत्र को छन्दबद्ध किसने कहाँ पर किया है ?**

उत्तर – णमोकार महा मंत्र को आचार्य प्रवर श्री भूतबली और पुष्पदंत जी महाराज ने अपने महान ग्रंथकार 'षटखण्डागम्' में अंकलेश्वर में छन्दबद्ध किया।

प्रश्न 14 – **णमोकार मंत्र कब लिपिबद्ध किया गया है**

उत्तर – यह मंत्रराज प्रथम शताब्दी में लिखा गया है।

प्रश्न 15 – **इस मंत्रराज को णमोकार मंत्र के नाम से ही क्यों जाना जाता है ?**

उत्तर – इस मंत्रराज का आरम्भ "णमो" से हुआ तथा उच्चारण में "कार" प्रत्यय लगा देते हैं।

प्रश्न 16 – **णमोकार मंत्र के "णमो" का शाब्दिक अर्थ क्या है ?**

उत्तर – नमस्कार/प्रणाम हो यह "णमो" का अर्थ होता है।

प्रश्न 17 – **णमोकार मंत्र का प्रथम पद कौनसा है तथा उसमें कितने अक्षर हैं ?**

उत्तर – "णमो अरिहंताणं" है जिसमें सात अक्षर हैं।

प्रश्न 18 – **द्वितीय पद कौनसा है उसमें कितने अक्षर हैं ?**

उत्तर – "णमो सिद्धाणं" है जिसमें पांच अक्षर हैं।

प्रश्न 19 – **तृतीय पद कौनसा है उसमें कितने अक्षर हैं ?**

उत्तर – "णमो आयरियाणं" है जिसमें सात अक्षर हैं।

प्रश्न 20 – **चतुर्थ पद कौन सा है उसमें कितने अक्षर हैं ?**

उत्तर – "णमो उवज्झायाणं" है जिसमें सात अक्षर हैं।

प्रश्न 21 – **पांचवां पद कौन सा है उसमें कितने अक्षर हैं ?**

उत्तर – "णमो लोए सव्वसाहूणं" है जिसमें नौ अक्षर हैं।

प्रश्न 22 – **संपूर्ण पांचों पदों में कितने अक्षर होते हैं ?**

उत्तर – सम्पूर्ण णमोकार मंत्र में 35 (पैंतीस)अक्षर होते हैं।

प्रश्न 23 – **अक्षर किसे कहते हैं ?**

उत्तर – जिस वर्ण का कभी 'न क्षर: इति अक्षर:' अर्थात् नाश नहीं होता उन्हें अक्षर कहते हैं अथवा शब्द के खण्ड को अक्षर कहते हैं,अर्थात् जिसका विभाजन न हो सके।

प्रश्न 24 – **अक्षर कितने प्रकार के होते हैं ?**

उत्तर – अक्षर स्वर तथा व्यंजन के भेद से दो प्रकार के होते हैं।

प्रश्न 25 – **णमोकार मंत्र में कितनी मात्रायें हैं ?**

उत्तर – णमोकार मंत्र में 58 मात्रायें होती हैं। (वैसे तो णमोकार मंत्र की 59 मात्रायें होती हैं परन्तु 'लोए' के 'ए' की एक ही मात्रा ली गई है।)

प्रश्न 26 – 58 मात्राओं का अंकों में क्या महत्व है ?

उत्तर – 5 का अंक पांच पापों का प्रतीक है तथा 8 का अंक आठ कर्मों का प्रतीक है 5+8=13 यह योग भी तेरह (तेरा) आत्मा का प्रतीक है जिसका अर्थ है (एक) आत्मा (तीन) रत्नत्रय जिनसे आत्मा सुसज्जित होती है वह तेरह प्रकार के चारित्र का प्रतीक है इसलिये इसमें 58 मात्राओं की विशेष उपयोगिता है।

प्रश्न 27 – णमोकार मंत्र में कितने स्वर है ?

उत्तर – णमोकार मंत्र में पैंतीस स्वर होते हैं जैसे "णमो अरिहं –ताणं प्रथम पद में सात स्वर हैं यथा –अ,ओ,अ,इ, अ,आ,अ इसी प्रकार शेष पदों में जानना चाहिये।"

प्रश्न 28 – स्वर किसे कहते हैं ?

उत्तर – वह वर्ण जिसका उच्चारण सरलता से हो तथा जिस शब्द में एक से अधिक मात्रा पायी जाती है।

प्रश्न 29 – णमोकार मंत्र में कितने व्यंजन हैं ?

उत्तर – णमोकार मंत्र में 33 व्यंजन हैं, जैसे पहिले पद में आठ व्यंजन हैं तथा ण् म् र् ह् न् त् ण् म्।

प्रश्न 30 – मात्रा की क्या विशेषतायें हैं ?

उत्तर – मंत्र की शक्ति मात्राओं के म ाध्यम से बढ़ती हैं।

प्रश्न 31 – णमोकार मंत्र में अक्षरों की गणना करने का क्या नियम हैं ?

उत्तर – इस मंत्रराज में जो संयुक्त अक्षर होते हैं, उनको एक ही

गिना जाता है जैसे कि "सिद्धाणं" में द्धा द् ध् आ इसमें दो व्यंजन एक स्वर हैं तब 1 ही अक्षर होता है।

प्रश्न 32 – व्यंजन किसे कहते हैं ?

उत्तर – स्वर रहित वर्ण को व्यंजन कहते हैं, अथवा जिस वर्ण में अर्ध मात्रा होती है, उसे व्यंजन कहते हैं।

प्रश्न 33 – णमोकार मंत्र को हम कितने नामों से जानते हैं ?

उत्तर – णमोकार मंत्र को हम अनेक नामों से जानते हैं, कुछ प्रमुख नाम निम्नलिखित हैं।

(1) अनादिनिधन मंत्र (2) अपराजित मंत्र
(3) महामंत्र (4) मूल मंत्र
(5) पञ्च नमस्कार मंत्र (6) केवलज्ञान मंत्र
(7) आदि मंत्र

प्रश्न 34 – णमोकार मंत्र को अनादिनिधन मंत्र क्यों कहते हैं ?

उत्तर – इस मंत्र की उत्पत्ति का कोई आदि और अंत नहीं है। यह न किसी के द्वारा बनाया गया है न किसी के द्वारा नष्ट होगा एवं इसके समस्त पदों में परिवर्तनं संभव नहीं है, इसलिये इस मंत्र को अनादिनिधन मंत्र कहते हैं।

प्रश्न 35 – णमोकार मंत्र को अपराजित मंत्र क्यों कहते हैं ?

उत्तर – जीवधारी जो भी इस मंत्रराज पर हृदय से विश्वास करता है, उसको दुनिया की कोई भी शक्ति पराजित नहीं कर सकती है।

प्रश्न 36 – णमोकार मंत्र को महामंत्र क्यों कहा गया हैं ?

उत्तर – सामान्य मंत्र सांसारिक पदार्थों की सिद्धि में सहायक होते हैं परन्तु णमोकार महामंत्र जपने से ये तो प्राप्त होते ही हैं, साथ ही परमार्थ पद प्राप्त कराने में यह सहायक होता है।

प्रश्न 37 – णमोकार मंत्र को मूलमंत्र क्यों कहते हैं ?

उत्तर – सभी मंत्र णमोकार मंत्र से उत्पन्न हुये हैं अर्थात् सभी मंत्रों में प्रमुख होने से णमोकार मंत्र को मूल मंत्र कहते हैं।

प्रश्न 38 – णमोकार मंत्र को मूलमंत्र कहने के औरकुछ भी कारण है ?

उत्तर – क्योंकि इसके द्वारा संसार के मुख्य कारण "कर्म" हैं उनका भी नाश किया जाता है।

प्रश्न 39 – णमोकार मंत्र को पंच नमस्कार मंत्र क्यों कहते है ?

उत्तर – इस मंत्र राज में पाँच महान पदों को नमस्कार किया गया है। इसलिये इसे पंच नमस्कार मंत्र कहते हैं।

प्रश्न 40 – णमोकार मंत्र को केवल-ज्ञान मंत्र क्यों कहते है ?

उत्तर – जो साधक इस महामंत्रराज की साधना करते हैं वे इसके ध्यान से "असहायज्ञान" को प्राप्त कर लेते हैं इसलिये इसे केवलज्ञान मंत्र भी कहते हैं।

प्रश्न 41 – णमोकार मंत्र को आदिमंत्र क्यों कहते है ?

उत्तर – यह मंत्रराज सभी मंत्रों में प्रथम मंत्र होने से णमोकार मंत्र को आदिमंत्र भी कहते हैं।

प्रश्न 42 – नमस्कार का तात्पर्य क्या हैं ?

उत्तर – मान रहित होकर पूज्य पुरुषों के चरणों में समर्पण भाव से विनय पूर्वक माथा नवाकर नमन करना ही नमस्कार है।

प्रश्न 43 – नमस्कार कितने प्रकार से होता है ?

उत्तर – नमस्कार अनेक प्रकार से होता है सामान्य से तथा विशेष रुप से दो प्रकार है।

(1) द्रव्य नमस्कार (2) भाव नमस्कार

प्रश्न 44 – नमस्कार कैसे करना चाहिये ?

उत्तर – वंदन करते समय हाथ जोड़कर श्रीफल के समान अपने हाथोंको पोले रखकर के वंदन करना चाहिये।

प्रश्न 45 – सामान्य नमस्कार क्या हैं ?

उत्तर – लोक व्यवहार के लिये या शिष्टाचार पालने को हाथ जोड़कर आपस में जय जिनेन्द्र करना ।

प्रश्न 46 – विशेष नमस्कार क्या है ?

उत्तर – पंचाङ्ग तथा अष्टाङ्ग (गाय के समान तथा लेटकर) ये दो विशेष प्रकार के नमस्कार हैं ।

प्रश्न 47 – णमोकार मंत्र से कितने मंत्रो की उत्पत्ति हुई है ?

उत्तर – णमोकार मंत्र से 84 लाख मंत्रों की उत्तपत्ति हुई है।

प्रश्न48 – णमोकार मंत्र में किसको नमस्कार किया गया है ?

उत्तर – (अ) णमोकार मंत्र में पंच परमेष्ठियों को नमस्कार किया गया है।

(ब) रत्नत्रय के फल स्वरुप तथा उससे सहित शुद्धात्माओं को प्रणाम किया गया है।

प्रश्न 49 – परमेष्ठी किसे कहते हैं ?

उत्तर – जो वीतराग रुप परमोत्कृष्ट पद में स्थित रहते हैं, अथवा राजा, महाराजा इत्यादि श्रेष्ठ पुरुष भी जिनको सिर झुकाते हैं उन्हें परमेष्ठी कहते हैं।

प्रश्न 50 – कौन सी गति के जीव परमेष्ठी पद को धारण कर सकते हैं ?

उत्तर – सर्वश्रेष्ठ मनुष्य गति के जीव ही इस पद के धारी होते हैं।

प्रश्न 51 – परमेष्ठी कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर – सर्व लोक में पांच प्रकार के ही परमेष्ठी होते हैं।

प्रश्न 52 – पांचों परमेष्ठियों को कितने नामों से जाना जाता है ?

उत्तर – 1. अरिहंत जी 2. सिद्ध जी 3. आचार्य जी 4. उपाध्याय जी 5. साधु जी आदि इत्यादि नामों से जाना जाता है।

प्रश्न 53 – णमोकार मंत्र में 'लोए' और 'सव्व' शब्द की उपयोगिता क्या है ?

उत्तर – 'लोए' और 'सव्व' ये दोनों शब्द णमोकार मंत्र के समस्त पदों में मिले हुये हैं।

प्रश्न 54 – 'णमो' और 'लोए सव्व' शब्द का अर्थ क्या है ?

उत्तर – णमो = नमस्कार हो, लोए = लोक के, सव्व = समस्त अर्थात् लोक के समस्त परम पद धारियों को नमन होवे।

प्रश्न 55 – णमोकार मंत्र के प्रत्येक पद का अर्थ बताईये ?

उत्तर – (1) णमो अरिहंताणं = लोक के समस्त अरहिंतों को प्रणाम हो।

(2) णमो सिद्धाणं = लोक के समस्त सिद्धों को प्रणाम हो।

(3) णमो आयरियाणं = लोक के समस्त आचार्यों को प्रणाम हो।

(4) णमो उवज्झायाणं = लोक के समस्त उपाध्यायों को प्रणाम हो।

(5) णमो लोए सव्वसाहूणं = लोक के समस्त साधुओं को प्रणाम हो।

प्रश्न 56 – णमोकार मंत्र में क्रमशः ही नमस्कार किया गया है ?

उत्तर – णमोकार मंत्र में क्रमशः नमस्कार नहीं किया गया है।

प्रश्न 57 – द्वितीय परमेष्ठी महान् होते हैं परन्तु उन्हें प्रथम पद में क्यों नहीं रखा गया है ?

उत्तर – सिद्ध परमेष्ठी बोलते नहीं हैं, अरिहंतों के द्वारा ही मोक्ष मार्ग का उपदेश दिया जाता है इसलिए अरिहंतों को पहले नमस्कार किया है।

प्रश्न 58 – क्या णमोकार मंत्र के साथ 'ओम्' पढ़ना आवश्यक है ?

उत्तर – नहीं णमोकार मंत्र के साथ 'ओम्' लगाना अनिवार्य नहीं है क्योंकि 'ओम्' एकाक्षरी मंत्र अपने आप में अलग से ही एक मंत्र है।

प्रश्न 59 – क्यों णमोकार मंत्र के साथ में 'ऐसो पंच णमो यारो' यह श्लोक पढ़ना आवश्यक है ?

उत्तर – "नहीं" यह श्लोक णमोकार मंत्र की महिमा बताने वाला है णमोकार मंत्र के साथ नहीं है। उसमें तो 5 ही पद होते हैं।

प्रश्न 60 – क्या महामंत्र पढ़कर सभी देवी देवताओं को नमन कर सकते हैं ?

उत्तर – नहीं, उसमें रागी द्वेषी तथा मायाचारी का दोष उत्पन्न होता है।

प्रश्न 61 – रागी द्वेषी देवताओं को नमन क्यों नहीं करना चाहिये ?

उत्तर – उनका नमस्कार संसार के बढाने में कारण है इसलिये रागी द्वेषी देवताओं को नमस्कार नहीं करना चाहिये।

प्रश्न.62 – णमोकार मंत्र को कब और कहां स्मरण करना चाहिये ?

उत्तर – णमोकार मंत्र पढ़ने के लिए कोई मुहूर्त नहीं होता, इसे तो कहीं भी, कभी भी मन में स्मरण कर सकते हैं।

प्रश्न63 – णमोकार मंत्र में 'अ' वर्ण से प्रारम्भ होने वाले कितने परमेष्ठी हैं ?

उत्तर – णमोकार मंत्र में 'अ' वर्ण से प्रारम्भ होने वाले दो परमेष्ठी हैं–

1. अरिहंत जी 2. आचार्य जी

प्रश्न64 – णमोकार मंत्र में 'स' कार से प्रारम्भ होने वाले कितने परमेष्ठी हैं ?

उत्तर – 'स' कार से प्रारम्भ होने वाले दो परमेष्ठी हैं –

1. सिद्ध जी 2. साधु जी

प्रश्न65 – कितने परमेष्ठीयों के आज भी साक्षात् दर्शन होते हैं ?

उत्तर – 1. आचार्य जी 2.उपाध्याय जी

3. साधु परमेष्ठी के आज भी साक्षात् दर्शन होते हैं।

प्रश्न66 – णमोकार मंत्र में जिन्हें नमन किया गया है उन्हें एक वाक्य में क्या कहते हैं ?

उत्तर – ''परमेष्ठी'' ही कहते हैं।

प्रश्न67 – णमोकार मंत्र का क्या फल है ?

उत्तर – यह मंत्र सभी पापों का नाश करने वाला है, यही इसका फल है।

प्रश्न68 – णमोकार मंत्र की उत्तमता क्या है ?

उत्तर – यह मंत्र सर्व मंगल को प्राप्त कराने वाला सर्वोत्तम है।

प्रश्न69 – मंगल का तात्पर्य क्या है ?

उत्तर – 'म' =पाप 'गल' = गलाने वाला तथा दूसरा अर्थ यह भी है 'मङ्ग' =आनन्द आनंद तथा 'ल' =लाने वाला अर्थात् जो पापों को गलाये तथा आनंद को लाये वही मंगल है।

प्रश्न70 – णमोकार मंत्र में किसका सार बतलाया गया है ?

उत्तर – णमोकार मंत्र में समस्त जिन आगम का सार बताया गया है।

प्रश्न71 – मंत्रराज में नमन कितनी बार किया गया है ?

उतर – मंत्रराज में पांच बार नमन किया गया है।

प्रश्न72 – मंत्रराज में पांच बार ही नमन क्यों किया जाता है ?

उत्तर – पांच इन्द्रियों के विषयों से तथा पांचों पापों से मुक्त होने के लिये पांच बार ही नमन किया गया है।

प्रश्न73 – नमन में क्या छोड़ा जाता है ?

उत्तर – नमन में अहंकार तथा ममकार को छोड़ा जाता है।

प्रश्न74 – नमन में किन भावों को व्यक्त किया जाता है ?

उत्तर – नमन में आस्था,भक्ति तथा पूजन के भावों को प्रगट किया जाता है।

प्रश्न75 – अपनी चर्या से मोक्षमार्ग को प्रदर्शित करने वाले कितने परमेष्ठी होते हैं ?

उत्तर – सिद्ध परमेष्ठी को छोड़कर चारों परमेष्ठी मोक्षमार्ग को प्रदर्शित करते हैं।

प्रश्न76 – पांचों परमेष्ठीयों में कितने परमेष्ठी भगवत् पद के धारी होते हैं ?

उत्तर – पांचों परमेष्ठीयों में से अरिहंत और सिद्ध भगवत् पद के धारी होते हैं।

प्रश्न77 – कितने परमेष्ठी मृत्युंजयी होते हैं ?

उत्तर – अरिहंत जी और सिद्ध जी मृत्युंजयी (मृत्यु को जीतने वाले) होते हैं।

प्रश्न78 – **पाँचों परमेष्ठीयों में से कितने परमेष्ठी गुरुपद के धारी होते हैं ?**

उत्तर – आचार्य, उपाध्याय, साधु ये तीनों परमेष्ठी गुरु पद के धारी होते हैं।

प्रश्न79 – **सम्पूर्ण पाप एवं कर्म रुपी अंजन से रहित कौनसे परमेष्ठी हैं ?**

उत्तर – सिद्ध परमेष्ठी ही हैं।

प्रश्न80 – **नव देवताओं में कितने परमेष्ठी गर्भित हैं ?**

उत्तर – नव देवताओं में पाँचों परमेष्ठी गर्भित हैं।

प्रश्न81 – **नव देवता कौनसे हैं ?**

उत्तर – 1. अरिहंत जी 2. सिद्ध जी 3. आचार्य जी
4. उपाध्याय जी 5. साधुजी 6. जिन मंदिर
7. जिन प्रतिमा 8. जिन आगम 9. जिन धर्म

प्रश्न82 – **जिनालय किसे कहते हैं ?**

उत्तर – जिनेन्द्र देव की मूर्ति स्थापित करने के प वित्र स्थान को जिनालय कहते हैं एवं इसे चैत्यालय भी कहते हैं।

प्रश्न83 – **जिन प्रतिमा किसे कहते हैं ?**

उत्तर – जिनेन्द्र भगवान के प्रतिबिम्ब जिसमें उनके गुणों का आरोपण किया गया हो, उन्हें जिन प्रतिमा कहते हैं।

प्रश्न84 – **जिन आगम किसे कहते हैं ?**

उत्तर – जिनेन्द्र देव की वाणी को जिनागम कहते हैं, जो आचार्यों द्वारा रचित होती है।

प्रश्न85 – **जिन धर्म किसे कहते हैं ?**

उत्तर – जिनेन्द्र भगवान द्वारा कहे गये अहिंसामयी वीतराग धर्म को

जिन धर्म कहते हैं।

प्रश्न86 – **नमन किसको और क्यों करना चाहिये ?**

उत्तर – गुणों की प्राप्ति के लिये नव देवताओं को नमन आदि करना चाहिये।

प्रश्न87 – **कितनी इन्द्रिय वाले जीव परमेष्ठी बन सकते हैं ?**

उत्तर – पांचों इन्द्रियों से परिपूर्ण जीव ही परमेष्ठी बन सकते हैं।

प्रश्न88 – **इंद्रिय किसे कहते हैं ?**

उत्तर – जिसके द्वारा संसारी आत्मा की पहचान होती है ऐसे जीवों के चिन्ह विशेष को इंद्रिय कहते हैं।

प्रश्न89 – **इन्द्रियां कितनी होती हैं ?**

उत्तर – इँद्रिया पांच होती हैं –
1. स्पर्शन (चर्म) 2. रसना (जीभ)
3. घ्राण (नाक) 4. चक्षु (आंख)
5. श्रोत्र (कर्ण)

प्रश्न90 – **ऐसे कितने परमेष्ठी हैं जो एकदेश संयमी होते हैं ?**

उत्तर – कोई भी परमेष्ठी एकदेश संयमी नहीं होते हैं।

प्रश्न91 – **ऐसे कितने परमेष्ठी हैं जोसकल संयमी होते हैं ?**

उत्तर – आचार्य, उपाध्याय,साधु,परमेष्ठी, सकल संयमी ही होते हैं।

प्रश्न92 – **णमोकार मंत्र में कितने परमात्मा है ?**

उत्तर – णमोकार मंत्र में अरिहंत जी और सिद्ध ही परमात्मा हैं।

प्रश्न.93 – **णमोकार मंत्र में परमात्मा के कितने भेद हैं ?**

उत्तर – णमोकार मंत्र में परमात्मा के दो भेद हैं –
1. सकल परमात्मा 2. निकल परमात्मा

प्रश्न94 – **सकल परमात्मा किसे कहते हैं ?**

उत्तर – अरिहंत परमेष्ठी को सकल परमात्मा कहते हैं। स=सहित, कल = शरीर, यानि शरीर सहित

प्रश्न95 – **निकल परमात्मा किसे कहते हैं ?**

उत्तर – नि=रहित, कल = शरीर अत: जो शरीर से रहित है ऐसे सिद्ध परमेष्ठी को निकल परमात्मा कहते हैं।

प्रश्न96 – **परमात्मा किसे कहते हैं ?**

उत्तर – कर्म मल से रहित जो सर्वोत्कृष्ठ अवस्था को प्राप्त हो गये हैं उन्हें परमात्मा कहते हैं।

प्रश्न97 – **ऐसे कितने परमेष्ठी हैं जो अन्तरात्मा हैं ?**

उत्तर – आचार्य, उपाध्याय,साधु ये तीन परमेष्ठी अंतरात्मा हैं।

प्रश्न98 – **अंतरात्मा किसे कहते हैं ?**

उत्तर – शरीर आदिक से भिन्न अपने आप को समझने वाले जो विषय कषायों से अपने को भिन्न रखें वही अन्तरात्मा हैं।

प्रश्न99 – **ऐसे कितने परमेष्ठी हैं जो सामान्य मनुष्य की तरह पग रखते हुये चलते हैं ?**

उत्तर – आचार्य, उपाध्याय,साधु ये परमेष्ठी सामान्य मनुष्य की तरह चलते हैं।

प्रश्न100 – **ऐसे कौनसे परमेष्ठी हैं जो अधर (अंतरिक्ष) में चलते हैं ?**

उत्तर – अरिहंत परमेष्ठी अधर (अंतरिक्ष) में चलते हैं।

प्रश्न101 – **ऐसे कौनसे परमेष्ठी हैं जो बिना पैर के रखे आकाश में गमन करते हैं ?**

उत्तर – अरिहंत एवं साधु परमेष्ठी भी ऋद्धि के ब ल से आकाश में

गमन करते हैं ?

प्रश्न102 – **वह कौनसा मंत्र है जिसमें पांचों परमेष्ठी तथा तीन लोक गर्भित हैं ?**

उत्तर – ''ॐ'' मंत्र में पाँचों परमेष्ठी व तीनों लोक समा जाते हैं।

प्रश्न103 – **''ॐ'' में तीनों लोक कैसे गर्भित होते हैं ?**

उत्तर – अ = अधोलोक, ऊ =ऊर्ध्व लोक, म = मध्य लोक
अ +ऊ =ओम (''ॐ'')इस प्रकार तीनों लोक गर्भित हैं।

प्रश्न104 – **''ॐ'' में पाँचों परमेष्ठी किस तरह गर्भित होते हैं ?**

उत्तर – अरिहंत का प्रारम्भ का –अ

सिद्ध याने अशरीरि का --अ	अ +अ = आ
आचार्य परमेष्ठी का –आ	आ+आ = आ
उपाध्याय परमेष्ठी का – उ	आ +उ = ओ
साधु परमेष्ठी याने मुनि का – म्	ओ +म् = ओम्

इस तरह ओम् में पांचों परमेष्ठियों का समावेश होता है।

प्रश्न105 – **''णमोकार मंत्र'' में क्या व्यक्ति विशेष को नमन् किया गया है ?**

उत्तर – नहीं , णमोकार मंत्र में गुण सहित सर्वोत्कृष्ट प द को नमन किया गया है व्यक्ति विशेष को नहीं।

प्रश्न106 – **''णमोकार मंत्र'' में किस बात का ख्याल रखा गया है?**

उत्तर – इसमें कोई व्यक्ति, शक्ति या देवता का ध्यान नहीं परन्तु दिव्यता व ज्ञानियों का ध्यान रखा गया है।

प्रश्न107 – **''महामंत्र ''का जाप कैसे करना चाहिये ?**

उत्तर – शोरगुल तथा उपद्रव से रहित पूर्व अथवा उत्तर की ओर मुख करके शुद्ध वस्त्रों को पहनकर निराकुल भावों से जाप करना

चाहिये।

प्रश्न108 – करांगुलियों पर णमोकार मंत्र का जाप करने का क्या महत्व है ?

उत्तर – जिस प्रकार से गारुणी विद्या सर्प के विष को नाश करती है उसी प्रकार मंत्र को अंगुलियों पर जाप करने से वह साधक भी अनेक प्रकार के पापों का नाश करता है।

प्रश्न109 – मंत्रराज को जपना चाहिये या पढ़ना चाहिये ?

उत्तर – मंत्रों की उपासना करते समय प्रारम्भिक दशा में तो शुद्ध उच्चारण पूर्वक पढ़ना चाहिये।

प्रश्न110 – जाप किसे कहते हैं ? वह कैसे करते हैं ?

उत्तर – मंत्रों, शब्दों, बीजपदों का बार–बार उच्च स्वर से बोलना या स्मरण करना जाप कहलाता है जो मन एवं वचनों के द्वारा करते हैं।

प्रश्न111 – जाप किसके द्वारा किया जाता है ?

उत्तर – जाप प्रारम्भ में माला के द्वारा किया जाता है उसमें दक्ष/निपुण हो जाते हैं तब हाथ की अंगुलियों से जाप करते हैं और अधिक अभ्यस्त होने पर बिना सहारे के मन में भी जाप करते हैं।

प्रश्न112 – जाप के कितने भेद कहे गये हैं ?

उत्तर – जाप के तीन भेद कहे गये हैं –

1. वाचक 2. उपांशु 3. मानस

प्रश्न113 – वाचक किसे कहते हैं ?

उत्तर – जिन मंत्रों का वचनों के द्वारा उच्चारण किया जाता है उसे वाचक कहते हैं।

प्रश्न114 – उपांशु जाप किसे कहते हैं ?

उत्तर – जिन मंत्रों का अक्षर मात्राएं पदों का स्पष्ट व शुद्ध कंठ से उच्चारण करना उपांशु जाप कहलाता है।

प्रश्न115 – मानस जाप किसे कहते हैं ?

उत्तर – जिन विशुद्ध मंत्र और बीजाक्षर को मन का विषय बनाते हैं उसे मानस जाप कहते हैं।

प्रश्न116 – कराँगुलियों पर मंत्र का जाप कैसे करना चाहिये ?

उत्तर – सर्वप्रथम पद्मासन या सुखासन से बैठकर बांएं कर (हाथ) पर दाँहिना कर रखकर रीढ़ की हड्डी को सीधा रखकर 90^0 का कोण बनाना चाहिये और अपनी दृष्टि को यहाँ वहाँ न फेरते हुए नासा के अग्रभाग पर अर्ध खुले हुये नेत्र होवें।

प्रश्न117 – खड्गासन में किस प्रकार से जाप करना चाहिये ?

उत्तर – इस मुद्रा में खड़े होने पर दोनों एड़ियों में चार अंगुल का अंतर हो तथा अंगुलियों के तरफ 9 इंच का अन्तर होवे तथा दोनों हाथ की भुजायें सीधी रहें। इसे कायोत्सर्ग मुद्रा भी कहते हैं।

प्रश्न118 – जाप को सर्वप्रथम किस अँगुली से प्रारंभ करना चाहिये ?

उत्तर – मनुष्य के कर में पाँच अंगुलियां हैं, जिसमें सबसे सक्रिय अंगुष्ठ है, दाहिने कर का वह अंगूठा सर्वप्रथम अनामिका के मध्य पोरे से प्रारंभ कर ऊपर की ओर मध्यमा के तीनों पोरे पूर्ण कर अनामिका के नीचे पोरे से होते हुये कनिष्ठका के तीनों पोरे पूर्ण करने पर एक बार नौं बार मंत्र पढ़ते हुये

इसी तरह से बांयें हाथ के समस्त बारह पोरों में 9×12=108 बार में एक पूर्ण माला होती है।

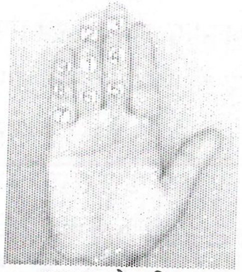

हाथ का रेखाचित्र

प्रश्न119 – जाप कितने प्रकार का होता है ?

उत्तर – जाप तीन प्रकार के कहे गये हैं –

1. मानसिक जाप 2. वाचनिक जाप
3. कायिक जाप .

प्रश्न120 – मानसिक जाप किसे कहते हैं ?

उत्तर – मन में मंत्र का जाप करना ही मानसिक जाप कहलाता है।

प्रश्न121– वाचनिक जाप किसे कहते हैं ?

उत्तर – उच्च स्वर में मंत्र को पढ़ना वाचनिक जाप कहलाता है।

प्रश्न122 – कायिक जाप किसे कहते हैं ?

उत्तर – बिना बोले मंत्र पढ़ना, जिसमें ओंठ जिव्हा हिलते रहें उसे कायिक जाप कहते हैं।

प्रश्न123– धर्म ध्यान के लिये किस प्रकार से जाप करना चाहिये?

उत्तर – धर्म ध्यान के लिये अँगूठे एवं तर्जनी से माला लेकर जाप करना चाहिये।

प्रश्न124 – शांति के लिये जाप किस तरह करना चाहिये ?

उत्तर – शांति के लिए मध्यमा और अँगूठे से जाप करना चाहिये।

प्रश्न125 – मन की एकाग्रता लाने के लिये किस प्रकार का जाप करना चाहिये ?

उत्तर – मन की एकाग्रता लाने के लिये समय सीमा बांध कर मन, वचन,काय की एकाग्रतापूर्वक जाप करना चाहिये।

प्रश्न126 – मुमुक्षु साधक को किस प्रकार से जाप करना चाहिये?

उत्तर – साधकों को स्फटिक तथा सूत की माला सर्वश्रेष्ठ आचार्यों ने कही है इसी से इन्हें जाप देना चाहिये।

प्रश्न127 – वह किस प्रकार का जाप है जो फल से रहित है?

उत्तर – जिस मंत्र का जाप अंगुली के अग्र भाग से तथा व्याकुलता से युक्त तथा मेरु का उल्लंघन करके किया जाता है वह फल से रहित होता है।

प्रश्न128 – णमोकार मंत्र के प्रथम पद का ध्यान करते समय किस वर्ण का स्मरण करें ?

उत्तर – “णमो अरिहंताणं” पद का ध्यान करते समय चंद्रमा के समान उज्जवल श्वेत वर्ण (रंग) का ध्यान करना चाहिये क्यों कि वह धातिया कर्मों के नष्ट होने पर निर्मलता का प्रतीक है।

प्रश्न129 – णमोकार मंत्र के लिये द्वितीय पद का ध्यान करते समय किस वर्ण का स्मरण करें ?

उत्तर – “णमो सिद्धाणं” का ध्यान करते समय अरुण वर्ण (रंग) याने कुमकुम के रंग का स्मरण करना चाहिये क्यों कि वह धातिया कर्मों की निर्जरा का प्रतीक है।

प्रश्न130 – णमोकार मंत्र के तृतीय पद का ध्यान करते समय किस वर्ण का स्मरण करना चाहिये ?

उत्तर – “णमो आयरियाणं”का ध्यान करते समय पीले वर्ण (रंग)

का ध्यान करना चाहिये। क्योंकि वह शिष्यों के प्रति वात्सल्यता का प्रतीक है।

प्रश्न131 — णमोकार मंत्र के चतुर्थ पद का ध्यान करते समय किस वर्ण का स्मरण करना चाहिये ?

उत्तर — ''णमो उवज्झायाणं ''का ध्यान करते समय नीले रंग का स्मरण करें क्योंकि यह प्रेम तथा विश्वास का प्रतीक है।

प्रश्न132— णमोकार मंत्र के पंचम पद का ध्यान करते समय किस वर्ण का स्मरण करना चाहिये ?

उत्तर — ''णमो लोए सव्वसाहूणं ''का ध्यान करते समय श्याम वर्ण का स्मरण करना चाहिये क्योंकि वह सभी प्रकार की बुराईयों को समाप्त करने का प्रतीक है

प्रश्न133 — इस प्रकार परमेष्ठियों का स्मरण करते समय ध्यान करने से क्या लाभ है ?

उत्तर — इस प्रकार परमेष्ठियों के ध्यान के साथ, रंगों का स्मरण करने से जल्द ही दु:खों का नाश, कर्मो का क्षय तथा मन की एकाग्रता होती है।

प्रश्न134 — मानव के शरीर में परमेष्ठियों का किस प्रकार ध्यान करना चाहिये ?

उत्तर — परमे ष्ठियों का ध्यान निम्नलिखित रुपों में करना चाहिये —

1. सिर में अरिहंतों का ध्यान।
2. मुख में सिद्धों का ध्यान।
3. कंठ में आचार्यों का ध्यान।
4. हृदय में उपाध्यायों का ध्यान।
5. नाभि में साधु का ध्यान करना चाहिये।

प्रश्न135 — किस दिन (वार) में कौनसे परमेष्ठी का स्मरण/ ध्यान विशेष रुप से करना चाहिये ?

उत्तर — 1. प्रथम परमेष्ठी को (सोमवार,मंगलवार) को स्मरण करें।
2. द्वितीय परमेष्ठी को (बुद्धवार) को स्मरण करें। बुधवार
3. तृतीय परमेष्ठी को (गुरुवार) को स्मरण करें।
4. चतुर्थ परमेष्ठी को (शुक्रवार) को स्मरण करें।
5. पंचम परमेष्ठी को (शनिवार रविवार) को स्मरण ध्यान विशेष रुप से करना चाहिये।

प्रश्न136 — जैन तिथियों के अनुसार परमेष्ठियों को कब कब स्मरण/ध्यान करना चाहिये ?

उत्तर — नंदा तिथि में अरिहंतों का ध्यान रखना चाहिये।
भद्रा तिथि में सिद्धों का ध्यान रखना चाहिये।
जया तिथि में आचार्यों का ध्यान रखना चाहिये।
रिक्ता तिथि में उपाध्यायों का ध्यान रखना चाहिये।
पूर्णा तिथि में साधु परमेष्ठियों का ध्यान रखना चाहिये।

प्रश्न137— नंदा तिथि कब आती है तथा उसका क्या प्रभाव होता है ?

उत्तर — यह तिथि एकम, षष्ठी, एवं ग्यारस को रहती है इसके सभी कार्य विशेष शुक्रवार को शुभ होते हैं।

प्रश्न138— भद्रा तिथि कब आती है तथा उसके क्या प्रभाव होते हैं ?

उत्तर — यह तिथि दूज,सप्तमी तथा द्वादशी (बारस)को आती है। इसका विशेष प्रभाव बुधवार को हो तो पौष्टिक प्रभाव होता है।

प्रश्न139 – जया तिथि कब आती है तथा उसके क्या प्रभाव होते हैं ?

उत्तर – यह तिथि तीज, अष्टमी तथा त्रयोदशी को आती है। यदि इन तिथियों में मंगलवार हो तो अच्छे प्रभाव होते हैं।

प्रश्न140 – रिक्ता तिथि कब आती है तथा उसके क्या प्रभाव होते हैं ?

उत्तर – यह तिथि चौथ, नवमी तथा चौदस को आती है। इसके घातक प्रभाव कहे हैं परन्तु इन तिथियों में शनिवार पड़े तो विशेष रुप से शुभ मानी जाती है।

प्रश्न141 – पूर्णा तिथि कब आती है तथा उसके क्या प्रभाव होते हैं ?

उत्तर – यह तिथि पंचमी, दसमी तथा पूर्णिमा (अमानवस्या)को पड़ती है तथा ये तिथियां यात्रा करने में गुरुवार हो तो विशेष शुभ मानी जाती हैं।

प्रश्न142 – णमोकार मंत्रराज के ज ाप से आत्म–लाभ की प्राप्ति सहज ही होती है परन्तु इस मंत्रराज से और अन्य लाभ क्या हैं ?

उत्तर – णमोकार मंत्रराज के ज ाप करने से समस्त ग्रहों की बाधायें भी दूर हो जाती हैं।

1. अरिहंत के प्रथम पद का जाप करने से चन्द्र, शुक्र ग्रह की शांति होती है।
2. सिद्धों के द्वितीय पद का जाप करने से सूर्य, मंगल ग्रह की शांति होती है।
3. आचार्यों के तृ तीय पद का जाप करने से गुरु, बुध ग्रह की शांति होती है।

4. उपाध्यायों के चतुर्थ पद का जाप करने से केतु ग्रह कीशांति होती है।
5. मुनीश्वरों के पांचवें पद का जाप करने से शनि राहु ग्रह कीशांति होती है।

प्रश्न143 – णमोकार मंत्र का व्रत किस समय से प्रारम्भ कर किस समय निष्ठापन पूर्ण करना चाहिये ?

उत्तर – णमोकार मंत्र का व्रत आषाढ़ सुदी सप्तमी से प्रारम्भ कर अठारह मास में पूर्ण करना चाहिये।

प्रश्न144 – णमोकार मंत्रराज के मूल में कितने व्रत या उपवास होते हैं ?

उत्तर – इसके मू ल में 35 दिनों तक अलग–अलग तिथियों में व्रत तथा उपवास कहे गये हैं।

प्रश्न145 – णमोकार मंत्रराज के प्रथम पद के कितने किन तिथियों में व्रत कहे हैं ?

उत्तर – इस व्रत के प्रथम पद के सात अक्षरों व सात सप्तिमियों में व्रत कहे हैं जो आषाढ़ सुदी सप्तमी से कुँवार (अश्विन) सुदी सप्तमी तक सात होते हैं।

प्रश्न146 – णमोकार मंत्र के द्वितीय पद में कितने किन तिथियों में व्रत कहे हैं ?

उत्तर – इस पद के पॉच बीच अक्षरों के कार्तिक वदी पंचमी से पौष वदी पंचमी तक के पांच व्रत होते हैं।

प्रश्न147 – णमोकार मंत्र में तृतीय पद के कितने, किन तिथियों में व्रत कहे गये हैं ?

उत्तर – इस पद के सात अक्षरों के (चतुदर्शी में) पौष वदी चतुदर्शी से चैतवदी चतुर्दशी तक सात व्रत कहे हैं।

प्रश्न148 – णमोकार मंत्र के चतुर्थ पद के कितने किन तिथियों में व्रत कहे हैं ?

उत्तर – इस पद के सात अक्षरों के चैत सुदी चतुर्दशी से आषाढ़ सुदी चतुर्दशी तक सात व्रत पूर्व आचार्यो ने कहे हैं।

प्रश्न149 – णमोकार मंत्र केपांचवें पद के कितने किन किन तिथियों में व्रत कहे हैं ?

उत्तर – इस पद के नौ अक्षरों के श्रावण वदी नवमी से प्रारंभ करके अगमन (मगशिर)वदी नवमी तक के नव व्रत कहे हैं ।

प्रश्न150 – माला/जाप में 108 ही मणि/दाने क्यों रहते हैं ?

उत्तर – माला में 108 दाने इसलिये रहते हैं कि सभी संसारी प्राणी पाप कर्मों को 108 प्रकार से ही करते हैं।

प्रश्न151 – वह 108 प्रकार के पाप कौन से हैं ?

उत्तर – मन, वचन, काय3, कृत, कारित, अनुमोदन 3, पूर्वक, समरम्भ, समारम्भ,आरंभ 3 आपस में इन सबको गुणित करने से 27 तथा क्रो ध ,मान,माया, लोभ इन चार कषाय को गुणा करन से (27 × 4 = 108 पाप हाते हैं।

यथा – समरंभ, समारंभ, आरंभ, मन, वच तन कीने प्रारंभ।
कृत कारित म ोदन करिकै, क्रोधादि चतुष्टय धरिके ॥
(आलोचना पाठ)

प्रश्न152 – णमोकार मंत्र को अपवित्र दशा में जाप व ध्यान कर सकते हैं ?

उत्तर – णमोकार मंत्र को अशुद्ध एवं शुद्ध दशा में सुमरन कर सकते हैं परंतु अपवित्र दशा में माला का उपयोग नहीं करनाचाहिये उच्चारण नहीं करना चाहिये।

प्रश्न153 – यह मंत्रराज कैसा है एवं इसका कब जाप करना चाहिये ?

उत्तर – यह मंत्रराज सर्वोत्तम शक्तिशाली तथा शक्तिदायक है, जब जहां जैसे ही फुरसत मिले इसका जाप करते रहना चाहिये।

प्रश्न154 – क्या पाप कार्यों की सिद्धि के लिये महामंत्र का प्रयोग कर सकते हैं ?

उत्तर – नहीं, पाप कार्यों की सिद्धि के लिये मंत्रराज का प्रयोग करने से अनिष्ट होता है।

प्रश्न155 – यह महामंत्र किस कारण से प्रभावशाली होता है ?

उत्तर – इय णमोकार मंत्र में महान पवित्र तथा सातिशय पुण्यशाली आत्माओं की महान ऊर्जा /चेतना शक्ति होने के कारण से ही यह मंत्र प्रभावशाली होता है।

प्रश्न156 – क्या इस मंत्र में किसी धर्म या पंथ का उल्लेख है ?

उत्तर – इस मंत्रराज में किसी धर्म या पंथ की बात नहीं है, इसमें तो गुणों को नमन किया गया है।

प्रश्न157 – कितने परमेष्ठियों के न ाम के पहले स्वर हैं ?

उत्तर – तीन परमेष्ठियों के न ाम के पहले स्वर हैं ।

प्रश्न158 – कितने परमेष्ठियों के आदि में व्यंजन हैं ?

उत्तर – साधु और सिद्ध परमेष्ठि इनके प्रारंभ में व्यंजन हैं।

प्रश्न159 – सभी मंगलों में प्रथम मंगल कौनसा है ?

उत्तर – सभी मंगलों में णमोकार मंत्र ही सबसे पहला मंगल है।

प्रश्न160 – मंगल कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर मंगल 6 प्रकार के ह ोते हैं –

1. द्रव्य मंगल 2. क्षेत्र मंगल
3. काल मंगल 4. भाव मंगल
5. नाम मंगल 6. स्थापना मंगल

प्र.161 – द्रव्य मंगल किसे कहते हैं ?

उत्तर – आचार्य,उपाध्याय सर्व साधु परमेष्ठियों के शरीर द्रव्य–मंगल कहलाते हैं।

प्र.162 – क्षेत्र मंगल किसे कहते हैं ?

उत्तर – तप कल्याणक एवं केवल ज्ञान उत्पत्ति के स्थानों को क्षेत्र मंगल कहते हैं।

प्र.163 – काल मंगल किसे कहते हैं ?

उत्तर – जिन–महिमा से संबद्ध अष्टानिका पर्व दश लक्षण पर्व, रत्नत्रयपर्व आदि को काल मंगल कहते हैं।

प्र.164 – भाव मंगल किसे कहते हैं ?

उत्तर – मंगल पर्याय से परिणत जीव–द्रव्य को ही भाव मंगल कहते हैं।

प्र.165 – नाम मंगल किसे कहते हैं ?

उत्तर – पाँचों परमेष्ठियों के न ामों का स्मरण नाम मंगल है।

प्र.166 – स्थापना मंगल किसे कहते हैं ?

उत्तर – अकृत्रि म जिनालय, कृत्रिम जिनालय एवं जिन बिम्ब आदिक समस्त स्थापना मंगल हैं ।

प्र.167 – मूल मंत्र और श्रावक में क्या संबंध है ?

उत्तर – मूल मंत्र पूज्य है एवं श्रावक पूजक होता है।

प्र.168 – कितने परमेष्ठी सामान्य रुप से उपदेश देते हैं ?

उत्तर – आचार्य उपाध्याय और साधु परमेष्ठी सामान्य रुपे उपदेश देते हैं

प्र.169 – सूक्ष्म कषाय से युक्त कितने परमेष्ठी हो सकते हैं ?

उत्तर – सूक्ष्म कषाय से युक्त तीन परमेष्ठी हो सकते हैं –
1. आचार्य जी 2. उपाध्याय जी 3. साधु जी

प्र.170 – कितने परमेष्ठी ध्यान करते हैं ?

उत्तर – सिद्ध परमेष्ठी को छोड़कर सभी परमेष्ठी ध्यान करते हैं। अरिहंतों का ध्यान उपचार से होता है।

प्र.171 – कौनसे परमेष्ठी सम्यग्दृष्टि हैं ?

उत्तर – पांचों परमेष्ठी सम्यग्दृष्टि हैं।

प्र.172 – पाँचों परमेष्ठी में से कौनसे परमेष्ठी बने बिना भी मोक्ष जा सकते हैं ?

उत्तर – आचार्य, उपाध्याय परमेष्ठी बने बिना भी मोक्ष जा सकते हैं।

प्र.173 – जिन धर्म में कौन से परमेष्ठी वस्त्र सहित हैं ?

उत्तर – जिन धर्म में कोई भी परमेष्ठी वस्त्र सहित नहीं हैं।

प्र.174 – जिन धर्म में क्षुल्लक जी, ऐलक जी कौनसे परमेष्ठी हैं ?

उत्तर – जिन धर्म में ये परमेष्ठी नहीं सर्वोत्तकृष्ठ श्रावक कहे हैं।

प्र.175 – आर्यिका माता जी कौन सी परमेष्ठी हैं?

उत्तर – आर्यिका माता जी परमेष्ठी नहीं होती परंतु महिला समाज में सर्वोत्कृष्ट प द को धारण करती हैं। (ये उपचार से महाव्रती होती हैं।)

प्र.176 – मंदिर जी में विराजमान प्रतिमा जी कौन से परमेष्ठ हैं?

उत्तर – मंदिर में विराजमान प्रतिमा अरिहंत परमेष्ठी तथा सिद्ध परमेष्ठी की हैं।

प्र.177 – पंचम काल में कौन से परमेष्ठी सल्लेखनापूर्वक मरण कर स्वर्ग जाते हैं?

उत्तर – आचार्य, उपाध्याय जी साधु जी ये तीन परमेष्ठी संल्लेखनापूर्वक मरणकर स्वर्ग जाते हैं।

प्र.178 – वर्तमान में कितने परमेष्ठी परम धर्माध्यक्ष हैं?

उत्तर – आचार्य, उपाध्याय तथा साधु परमेष्ठी परम धर्माध्यक्ष भी हैं।

प्र.179 – **कौन से परमेष्ठी आठ प्रातिहार्यों के धारी होते हैं?**

उत्तर – अरिहंत (तीर्थंकर) परमेष्ठी आठ प्रातिहार्यों के धारी होते हैं।

प्र.180 – **कितने परमेष्ठी दिगंबर होते हैं?**

उत्तर – सिद्धों को छोड़कर चारों परमेष्ठी दिगंबर होते हैं।

प्र.181 – **दिगम्बर किसे कहते हैं?**

उत्तर – दिक् = दिशायें, अंबर= वस्त्र अर्थात् दिशायें ही जिनके अंबर (वस्त्र) है वे दिगम्बर कहलाते हैं।

प्र.182 – **आज कितने परमेष्ठी के साक्षात् दर्शन होते हैं?**

उत्तर – आज आचार्य,उपाध्याय एवं साधु परमेष्ठी के साक्षात् दर्शन होते हैं।

प्र.183 – **कितने परमेष्ठी मन की सहायता से कार्य करते हैं?**

उत्तर – आचार्य जी,उपाध्याय जी,साधु जी ये तीन परमेष्ठी मन की सहायता से कार्य करते हैं।

प्र.184 – **कितने परमेष्ठी अवधिज्ञानी हो सकते हैं?**

उत्तर – अंत के तीनों परमेष्ठी अवधिज्ञानी हो सकते हैं।

प्र.185 – **कितने परमेष्ठी केवलज्ञानी होते हैं?**

उत्तर – अरिहत एवं सिद्ध परमेष्ठी केवलज्ञानी होते हैं।

प्र.186 – **कितने परमेष्ठी भव्यों का कल्याण करने में निमित्त होते हैं?**

उत्तर – सिद्धों को छोड़कर सभी चारों परमेष्ठी भव्यों का कल्याण करने में निमित्त होते हैं।

प्र.187 – **कितने परमेष्ठी पुण्यात्मा होते हैं?**

उत्तर – आचार्य,उपाध्याय और साधु परमेष्ठी पुण्यात्मा होते हैं।

प्र.188 – **कितने परमेष्ठी पुण्यातीत होते हैं?**

उत्तर – सिद्ध परमेष्ठी पुण्यातीत होते हैं।

प्र.189 – **कितने परमेष्ठी पुण्य के ही फल भोगते हैं?**

उत्तर – अरिहंत की बाह्यय लक्ष्मी पुण्य ही का सुफल हैं।

प्र.190 – **वे कौन से परमेष्ठी हैं जो त्रस नाम कर्म से सहित हैं?**

उत्तर – सिद्ध परमेष्ठी को छोड़कर सभी परमेष्ठी त्रस नाम कर्म से सहित हैं।

प्र.191 – **वे कौन से परमेष्ठी हैं,जिनकी छहों पर्याप्तियां होती हैं?**

उत्तर – सिद्धों को छोड़कर सभी परमेष्ठीयों की छहों पर्याप्तियाँ होती हैं।

प्र.192 – **पर्याप्ति क्या है एवं कितनी होती हैं?**

उत्तर – आहार,शरीर,इन्द्रिय,श्वासोच्छ्वास भाषा और मन रुप शक्तियों को पूर्णता को पर्याप्ति कहते हैं। ये छह होती है।

प्र.193 – **पंच परमेष्ठीयों के स्मरण को किस नाम से कह सकते हैं?**

उत्तर – णमोकार मंत्र में पंच परमेष्ठियों के स्मरण को बोधि भी कहते हैं।

प्र.194 – **अकारण ही नि:स्वार्थ भावना से जगत के जीवों का कल्याण की भावना रखने वाले कितने परमेष्ठी हैं?**

उत्तर – सिद्ध परमेष्ठियों को छोड़कर सभी परमेष्ठी जगत का कल्याण नि:स्वार्थ भावना से करने वाले होते हैं।

प्र.195 – **त्रेसठ शलाका पुरुषों में कौन से परमेष्ठी आते हैं?**

उत्तर – त्रेसठ शलाका पुरुषों में मात्र अरिहंत परमेष्ठी आते हैं।

प्र.196 – **परमेष्ठी किसके सहारे (आधार) होते हैं?**

उत्तर – परमेष्ठी रत्नत्रय के सहारे रहते हैं।

प्र.197 – **सर्वश्रेष्ठ मंगल कौन सा हैं?**

उत्तर – सभी मंगलों में सर्वश्रेष्ठ मंगल णमोकार मंत्रराज ही है क्योंकि इसमें भगवान के द्वारा कही हुई द्वादशाङ्ग का सारभूततत्व है।

प्र.198 – **मंगल कौन –कौन से होते हैं?**
उत्तर – जगत में चार ही मंगल स्वरुप कहे हैं।

चत्तारि मंगल – चार मंगल स्वरुप कहे गये हैं।
अरिहंता मंगल – अरिहंत मंगल हैं।
सिद्धा मंगल – सिद्ध मंगल हैं।
साहू मंगल – साधु मंगल स्वरुप हैं।
केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगल – केवली द्वारा कहा धर्म मंगल है।

प्र.199 – **उत्तम किसे कहते हैं?**
उत्तर – जो जगत में सर्वोत्कृष्ट हो, महान हो उन्हें उत्तम कहते हैं। जैसे – दूध में घी उत्कृष्ट व उत्तम है।

प्र.200 – **जगत में उत्तम कौन हैं?**
उत्तर – "उद्गता तम इति उत्तम:"
निकल गया है अज्ञान रुपी अंधकार उसे उत्तम कहते हैं।

चत्तारि लोगुत्तमा – लोक में चार ही उत्तम कहे गये हैं।
अरिहतां लोगुत्तमा – अरिहंत जी उत्तम है।
सिद्धा लोगुत्तमा – सिद्ध उत्तम है।
साहू लोगुत्तमा – साधु उत्तम है।
केवलीपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो –
केवली द्वारा कहा गया धर्म ही सर्वोत्तम है।

प्र.201 – **जगत में शरण किसे कहते हैं?**
उत्तर – जो "श" यानि संसार में 'रण्' अर्थात् युद्ध से बचावें जो सच्चा मार्ग दिखावे संसार के जन्म जरा मृत्यु से रक्षा करे, उसे शरण कहते हैं।

प्र.202 – **जगत में शरण कितने हैं?**
उत्तर – जगत में चार शरण हैं :–

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि – संसार में चार की शरण में जाता हूं

अरिहंते सरणं पव्वज्जामि – अरिहंतों की शरण में जाता हूं।
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि – सिद्धों की शरण में जाता हूं।
साहू सरणं पव्वज्जामि – साधूओं की शरण में जाता हूं।
केवलि पण्णतं धम्मं सरणं पव्वज्जामि – केवली द्वारा कहे हुए धर्म की शरण में जाता हूं।

प्र.203 – **मंत्रराज को कब पढ़ें ?**
उत्तर – आते–जाते, उठते–बैठते, चलते–फिरते, कभी भी मंत्र को मन में स्मरण कर सकते हैं, जपते समय बैठकर विधि पूर्वक णमोकार मंत्र का जाप करना चाहिये। सामान्य रुप से मंत्र पढ़ने को कोई मुर्हूत की आवश्यकता नहीं है।

मूहूर्त

प्र.204 – **मंत्र काजाप करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिये ?**
उत्तर – (1) जाप के स मय पूर्व में तथा उत्तर दिशा में मुख करके शांत बैठें।
(2) आकुलता रहित होकर पद्मासन से, सुखासन से स्थिर बैठकर जपें।
(3) आँखें एकदम खोलकर भी यहां वहां ना देखते हुए परंतु अर्ध आँखें खुली हुई और दांतों को बंद करके ही जाप करें।
(4) मंत्र जपते समय शब्द के अर्थ को समझते हुए जपें तो मन लगेगा, नहीं तो मन में विकल्प आवेंगे, तन को हिलायें डुलायें नहीं।
(5) मंत्र का साफ तथा शुद्ध उच्चारण करें बन सके तो लिखकर मंत्र को शुद्ध कर लेवें।

प्र.205 – **णमोकार मंत्र से आप क्या समझते हैं ?**
उत्तर – जिसमें अपने पूज्यों को नमन, प्रणाम या वंदन किया हो।

प्र.206 – **णमो बोलते समय क्या करें ?**

उत्तर – हाथ जोड़कर प्रणाम/नमस्कार करें।

प्र.207 – **णमोकार व नमस्कार में क्या अंतर है ?**

उत्तर – णमोकार प्राकृत में है और नमस्कार यह संस्कृत भाषा है परन्तु अर्थ में कोई अन्तर नहीं है।

प्र.208 – **हाथी सिंह बंदर भी परमेष्ठी हो सकते हैं ?**

उत्तर – ये तिर्यंच पशु भी साधना के ब ल से अगले भव में मनुष्य होकर परमेष्ठी हो सकते हैं परन्तु वर्तमान अवस्था में परमेष्ठी पद को प्राप्त नहीं हो सकते है।

प्र.209 – **परमेष्ठी किसलिए पूज्य है ?**

उत्तर – वे समस्त पदों में सर्वोत्कृष्ठ पद से युक्त सद्गुणों से सहित हैं इसलिए पूज्य हैं।

प्र.210 – **परमेष्ठीयों की अर्चन–पूजन कैसे करें ?**

उत्तर – सावधानी पूर्वक जिसमें कम से कम आरंभ हो इस प्रकार अर्चन–पूजन करना चाहिये।

प्र.211 – **पूजा कितने प्रकार की होती है ?**

उत्तर – पूजा के दो भेद हैं – (1) द्रव्यपूजा (2) भावपूजा

प्र.212 – **भावपूजा किसे कहते हैं ?**

उत्तर – परमेष्ठियों के गु णों में अनुराग पूर्वक जिनेन्द्र आदि का ध्यान करना भाव पूजा कहलाता है।

प्र.213 – **द्रव्य पूजा किसे कहते हैं ?**

उत्तर – परमेष्ठियों की अष्ट मंगल द्रव्यों–जल,चंदन,अक्षत्,पुष्प,नैवैद्य दीप,धूप,फल 'अर्घ' से तथा वचनों द्वारा भक्तिपूर्वक

गुणानुवाद करना!,हाथ जोड़कर नमन/वंदना करना,भक्ति भावसहित तीन प्रदक्षिणा देकर शीश नवाना यही द्रव्य पूजा है।

प्र.214 – **परमेष्ठियों की पूजा का क्या फल होता है ?**

उत्तर – परमेष्ठियों की पूजा से कर्मों की निर्जरा तथा पुण्य कर्मों का अर्जन तथा उनकी गुणों की भक्ति से योग की एकाग्रता होती है जिससे असाता कर्म साता रुप में परिवर्तित हो जाते हैं।

प्र.215 – **वे कौनसे परमेष्ठी होते हैं जिनकी इन्द्रियां तो होती हैं लेकिन वे इंद्रियों से कार्य नहीं करते हैं ?**

उत्तर – अरिहंत परमेष्ठी की इंद्रियां होते हुए भी इंद्रियों से कार्य नहीं करते हैं।

प्र.216 – **णमोकार मंत्र के पांच पदों में सर्वाधिक अक्षर किस पद में हैं ?**

उत्तर – पांचवां पद " णमो लोए सव्वसाहूर्णं " इस पद में सर्वाधिक अक्षर हैं।

प्र.217 – **परमेष्ठी वाचक मंत्र और कौन–कौन से हैं ?**

उत्तर – 16 अक्षर " अरिहंत–सिद्ध–आयरिय–उवज्झाय–साहू" अर्हत् सिद्धाचार्योपध्याय सर्व साधुभ्यो नम: "

8 अक्षर –"ओं णमो अरिहंताणं"

7 अक्षर – नम: सर्व सिद्धेभ्य

6 अक्षर –अ. अरिहंत सिद्ध

ब. अरिहंत साहू

स. ऊँ नम: सिद्धेभ्य:

द. ऊँ णमो सिद्धाणं

5 अक्षर —अ. अ सि आ उ सा
ब. णमो सिद्धाणं

4 अक्षर —अ. अरिहंत

2 अक्षर —अ. सिद्ध ब.ऊँ हीं

1 अक्षर – ऊँ हीं

प्र.218 – महावीर स्वामी के प्रमुख गणधर कौन एवं कितने थे ?

उत्तर – महावीर स्वामी के प्रमुख गणधर गौतम स्वामी (इंद्रभूति) आदिक ग्यारह थे।

प्र.219 – वर्तमान शासक नायक भगवान महावीर स्वामी का समवशरण सर्वाधिक कहां रहा ?

उत्तर – भगवान वीर प्रभु का सर्वाधिक समवशरण राजग्रही के विपुलाचल पर्वत पर रहा।

प्र.220 – मंत्रराज को कैसे पढ़ना चाहिये ?

उत्तर – णमोकार मंत्र को धीरे–धीरे तीन श्वास् उच्छवास में पढ़ना चाहिये।

प्र.221 – मंत्रराज पर दृढ़ श्रद्धान करने से, किसको–बोध एवं मोक्ष की प्राप्ति हुई थी ?

उत्तर – मंत्रराज पर दृढ़ श्रद्धान करने से अंजन चोर (ललितांग को) आकाशगामी विद्या एवं मोक्ष की प्राप्ति हुई थी।

प्र.222 – पाचों परमेष्ठियों के कितने मूल गुण होते हैं ?

उत्तर – पांचों परमेष्ठियों के 1 43 मूल गुण होते हैं यथा अहिरंतों के 46, सिद्धों के 8 आचार्यों के 3 6,उपाध्यायों के 2 5

साधु परमेष्ठियों के 2 8 मूल गुण होते हैं।

प्र.223 – मंत्रराज को तीन श्वाँस्–उच्छ्वास में कैसे पढ़ना चाहिए ?

उत्तर – मंत्रराज को श्वाँस–उच्छ्वास में पढ़ते समय सर्वप्रथम "णमो अरिहन्ताणं" यह पद बोलते हुए श्वाँस को नाभि केन्द्र तक लेवें तथा दूसरा पद "णमो सिद्धाणं" यह बोलते समय वह श्वाँस को उच्छ्वास (धीरे–धीरे छोड़ दें) दूसरे श्वाँस लेते समय"णमो आयरियाणं" यह तृतीय पद को कहें तथा श्वाँस को छोड़ते समय " णमो उवज्झायाणं " यह चौथा पद कहें,तृतीय श्वाँस के प्रारंभ में "णमो लोए" यह आधा पद कहें एवं श्वाँस को धीमे छोड़ते हुए "सव्व साहूणं " यह उच्चारित करें इस प्रकार से तीन श्वाँसोच्छवास के ए क बार णमोकार मंत्र पढ़ा जाता है।

प्र.224 – महिला समाज में सर्वोत्कृष्ट श्री आर्यिकाओं की वंदना करते समय क्या कहना चाहिये ?

उत्तर – आर्यिका /माताजी को वंदन करते समय हे ! आर्यिका जी वन्दामी वन्दामी वन्दामी यह कहना चाहिए।

साधु परमेष्ठी

प्र.1 – णमो लोए सव्व साहूणं यह अंतिम पद का अर्थ बतलाइये ?

उत्तर – लोक के स भी साधु/मुनियों को नमस्कार हो।

प्र.2 – साधु परमेष्ठी किसे कहते हैं ?

उत्तर – (1) जो समस्त पापों का त्याग कर ज्ञान ध्यान रुपी तप में लीन रहते हैं वे साधु परमेष्ठी हैं।

(2) जो आत्मा की साधना में लीन रहते हैं अथवा रत्नत्रय से युक्त मोक्ष मार्ग को भले प्रकार से साधते हैं

(3) जो घर गृहस्थी त्याग कर आत्म साधना में तल्लीन होने की साधना करें वे साधु परमेष्ठी हैं।

प्र.3 – साधु व श्रावक कौन से जीव हैं ?

उत्तर – सांसरिक जीव है क्योंकि दोनों प्रकार के जीवात्मा संसार में पाये जाते हैं।

प्र.4 – साधु परमेष्ठी के मूलगुण कितने होते हैं ?

उत्तर – साधु परमेष्ठी के 28 मूलगुण होते हैं ।

प्र.5 – साधु परमेष्ठी कौन से ग्रंथ से रहित होते हैं ?

उत्तर – साधु परमेष्ठी संपूर्ण परिग्रह से रहित होते हैं।

प्र.6 – साधु परमेष्ठी कितने प्रकार के परिग्रह से रहित होते हैं ?

उत्तर – साधु परमेष्ठी अंतरङ्ग तथा बहिरंङ्ग दोनों प्रकार के परिग्रहों से रहित होते हैं।

प्र.7 – परिग्रह किसे कहते हैं ?

उत्तर – पर पदार्थों में ममत्व भाव रखना ही परिग्रह है।

प्र.8 – अंतरङ्ग परिग्रह किसे कहते हैं वह कितने प्रकार का होता हैं ?

उत्तर – जो इंद्रियों के प कड़ में नहीं आता है वह अंतरङ्ग परिग्रह है वह 14 प्रकार का है :– क्रोध,मान,माया,लोभ,मिथ्यात्व हास्य, रति, अरति,शोक,भय,ग्लानि,स्त्रीवेद,पुरुषवेद,नपुंसकवेद ये अंतरंग परिग्रह के 14 भेद हैं।

प्र.9 – बहिरङ्ग परिग्रह किसे कहते हैं ?

उत्तर – जो इंद्रियों की पकड़ में आते है उसे बहिरङ्ग परिग्रह कहते हैं बहिरङ्ग परिग्रह 10 प्रकार का होता है :–

धन,धान्य,दासी,दास,बर्तन,वस्त्र,खेत,सोना ,चांदी,मकान ।

प्र.10 – साधु परमेष्ठी सूक्ष्म तत्वों के अर्थों में संशय होने पर वह संशय कैसे दूर करते हैं ?

उत्तर – सूक्ष्म अर्थ के संदेह को दूर करने के लिए ऋद्धियों से वह केवली भगवान के पास जाकर अपने संशय को दूर करते हैं।

प्र.11 – साधु परमेष्ठी कितने पापों का त्याग करते हैं ?

उत्तर – साधु परमेष्ठी हिंसा,झूठ ,चोरी,कुशील,परिग्रह इन पांचों पापों का त्याग करते हैं।

प्र.12 – वे इन पापों का त्याग कितने प्रकार से करते हैं ?

उत्तर – वे इन पापों का त्याग नौ प्रकार से करते हैं।

प्र.13 – पाप त्याग के नौ भेद कौन से हैं ?

उत्तर – मन,वचन,काय और कृत कारित,अनुमोदन इन नौ कोटियों से साधु परमेष्ठ के पापों का त्याग होता है।

प्र.14 – पाप किसे कहते हैं ?

उत्तर – जिन बुरे कार्यों से जीवों को दुख,कष्ट या भय लगे वे पाप कहलाते हैं।

1.जिससे जीव के अ शुभ भाव हों

2. जिसका फल दु:खदायक हो

3.जिस कर्म से अनिष्ट हो .

à.15 – हिंसा पाप किसे कहते हैं ?

उत्तर – असावधानीपूर्वक किये गये कार्य से किसी भी प्राणी को सताना/मारना हिंसा है।

प्र.16 – असत्य पाप किसे कहते हैं ?

उत्तर – असावधानीपूर्वक ऐसे वचनों का प्रयोग करना जिससे अन्य प्रार्णियों को कष्ट होवें अन्यथा प्रलाप करना असत्य है।

प्र.17 – चोरी पाप किसे कहते हैं ?

उत्तर – असावधानी पूर्वक किसी की बिना दी हुई वस्तु को ले लेना उठा लेना, सो चोरी है।

प्र.18 – अब्रह्म या कुशील पाप किसे कहते हैं ?

उत्तर – स्त्री का पुरुष में रति भाव होना, या पुरुष का स्त्री में रति भाव होना अब्रह्म है।

प्र.19 – परिग्रह पाप किसे कहते हैं ?

उत्तर – पर पदार्थों में ममत्व भाव (मूर्छा) रखना ही परिग्रह है।

प्र.20 – पापों से बचने के लिये जीव क्या करें ?

उत्तर – पापों का एकदेश व सम्पूर्ण त्याग करें तथा सांसारिक भोगों से भयभीत रहें।

प्र.21 – साधु परमेष्ठी कितने प्रकार के संयम का पालन करते हैं ?

उत्तर – साधु परमेष्ठी दो प्रकार के संयम का पालन करते हैं ।

1. प्राणी सयम 2. इंद्रिय संयम

प्र.22 – प्रार्णी संयम किसे कहते हैं ?

उत्तर – पंच स्थावर (पृथ्वी, जल,अग्नि, वायु ,वनस्पति) और त्रस जीवों की हिंसा से विरत होना प्राणी संयम है।

प्र.23 – इंद्रिय संयम किसे कहते हैं ?

उत्तर – स्पर्शन,रसना,घ्राण,चक्षु,श्रोत्र इन पाँचों इन्द्रियों के विजय करने को इंद्रिय समय कहते हैं।

प्र.24 – जीव किसे कहते हैं ?

उतर – जो जीता है, जीता था तथा जियेगा, श्वासं लेता है, सुख दुख का अनुभव करता है , व जानता देखता है जो छोटे से बड़ा होता है उसे जीव कहते हैं।

प्र.25 – जीव कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर – जीव दो प्रकार के होते हैं –

1. संसारी जीव 2. मुक्त जीव

प्र.26 – संसारी जीव किसे कहते हैं ?

उत्तर – जो जीव जन्म तथा मरण के दु:खों को सहते हुए संसार में घूमते रहते हैं तथा जिनके कर्म /शरीर पाये जाते हैं।

प्र.27 – संसारी जीव के कितने भेद हैं ?

उत्तर – संसारी जीव के दो भेद हैं – त्रस और स्थावर।

प्र.28 – त्रस जीव किसे कहते हैं ?

उत्तर – जो जीव दो इंद्रिय से लेकर पांच इंद्रिय तक होते हैं तथा जिन जीवों के त्र स नाम कर्म का उदय होता है व जिनके मांस मज्जा,रस,रुधिर आदि पाये जाते हैं वे त्रस जीव कहलाते हैं।

प्र.29 – स्थावर जीव किसे कहते हैं ?

उत्तर – जिनके ए क इंद्रिय होती हैं तथा जिनके स्थावर नाम,कर्म का उदय होता है उन्हें स्थावर जीव कहते हैं।

प्रश्न 30 — त्रस जीवों के कितने भेद होते हैं ?
उत्तर — त्रस जीवों के दो भेद होते हैं –
1. सकलेन्द्रिय 2. विकलेन्द्रिय

प्र.31 — सकलेन्द्रिय जीव किसे कहते हैं ?
उत्तर — जिनके सम्पूर्ण इन्द्रियां पाई जाती हैं उन्हें सकलेन्द्रिय जीव कहते हैं।

प्र.32 — विकलेन्द्रिय जीव किसे कहते हैं ?
उत्तर — जिनके पूर्ण इन्द्रियां नही पाई जाती है उन्हें विकलेन्द्रिय जीव कहते हैं उनके तीन भेद हैं – दो इन्द्रिय , तीन इन्द्रिय तथा चौ इन्द्रिय।

प्र.33 — सकलेन्द्रिय जीव के कितने भेद होते हैं ?
उत्तर — सकलेन्द्रिय जीव के दो भेद होते हैं –
1. समनस्क (संज्ञी) 2.अमनस्क (असंज्ञी)

प्र.34 — समनस्क जीव किसे कहते हैं ?
उत्तर — मन सहित जो हित अहित को समझे तथा उपदेश को ग्रहण करते हैं उन्हें समनस्क जीव कहते हैं।

प्र.35 — अमन्सक जीव किसे कहते हैं ?
उत्तर — मन रहित जीवों को अमनस्क जीव कहते हैं।

प्र.36 — वह कौनसे परमेष्ठी है जो त्रस जीव हैं ?
उत्तर — सिद्धों को छोड़कर सभी चार परमेष्ठी त्रस जीव हैं।

प्र.37 — इन्द्रिय किसे कहते हैं ?
उत्तर — ऐसे चिन्ह विशेष जिससे संसारी आत्मा की पहचान होवे तथा जिनसे स्पर्श– रस–गंध – रंग एवं शब्दों का ज्ञान होवे वे इन्द्रियां हैं।

प्र.38 — साधु के सिर व दाड़ी के बाल बढ़ने पर क्या करते हैं ?
उत्तर — साधु परमेष्ठी शरीर के प्रति ममत्व भाव रहित होने से केश लौंचन करते हैं।

प्र.39 — साधु परमेष्ठी कितने दिनों के बाद केश लौंचन करते हैं ?
उत्तर — साधु परमेष्ठी चार महीने के पूर्व नियम से केंश लौंच करते हैं।

प्र.40 — केशलौंच करने के कितने भेद हैं ?
उत्तर — केशलौंच करने के तीन भेद हैं –
(1) उत्तम (दो माह) (2) मध्यम (तीन माह)
(3) जघन्य (चार माह)

प्र.41 — साधु परमेष्ठी किसके द्वारा केश लौंच करते हैं ?
उत्तर — साधु परमेष्ठी कंडे के भस्म (राख) के द्वारा केश लों च करते हैं।

प्र.42 — केंश लोंच कंडे के भस्म के द्वारा ही क्यों करते हैं।
उत्तर — कंडे की भस्म रुक्ष होती है इससे बालों को पकड़कर निकालने में सहायता होती है तथा उससे रक्त निकलने पर जख्म आदि नहीं होते हैं।

प्र.43 — साधु का बाह्य भेष किस प्रकार का होता है।
उत्तर — साधु का बाह्य भेष नवजात बालक के समान नग्न अविकारी एवं पिच्छी कमण्डल सहित होता है।

प्र.44 — साधु के पास क्या अन्य और भी उपकरण होते हैं।
उत्तर — साधु के पास शास्त्र, आगम ग्रंथ (चश्मा, पेन) चटाई भी रहते हैं।

प्र.45 – वह पिच्छिका किससे बनायी जाती हैं ?

उत्तर – वह पिच्छिका मयूर के पंखों से तैयार की जाती है।

प्र.46 – पिच्छिका मयूर पंख से ही क्यों बनती है ?

उत्तर – क्योंकि मयूर पंख बहुत हल्के एवं कोमल होते हैं जिससे जीवों की विराधना (पीड़ा) नहीं होती।

प्र.47 – पंख तो जीव के है फिर पंख प्राप्त करने में हिंसा क्यों नहीं होती ?

उत्तर – यद्यपि पंख तो जीव के ही होते है परन्तु पंख मयूर के चलने पर अपने आप ही गिर जाते हैं अत: हिंसा नहीं होती।

प्र.48 – पिच्छिका को साधु किस कार्य में लेते हैं ?

उत्तर – साधु परमेष्ठी जीव–जन्तुओं को कष्ट से बचाने के लिए जगह को देखभाल कर, झाड़ पौंछकर, उपकरण उठाते रखते समय पिच्छिका का उपयोग करते हैं।

प्र.49 – साधु परमेष्ठी अपने पास कमण्डलु क्यों रखते हैं ?

उत्तर – साधु परमेष्ठी शरीर की शुद्धि के लिए कमण्डलू रखते हैं।

प्र.50 – साधु कमण्डलु के लिए पानी कहां से लाते हैं ?

उत्तर – साधु के कमण्डलु का जल भक्तजन विधिपूर्वक कुँआ से निकालकर प्रासुक करके लाते हैं।

प्र.51 – साधु प्रासुक जल का उपयोग क्यों करते हैं ?

उत्तर – प्रासुक जल में जीवों की उत्पत्ति नहीं होती इसलिए साधु प्रासुक जल का उपयोग करते हैं।

प्र.52 – प्रासुक (गर्म) जल में जीवों की उत्पत्ति कब तक नहीं होती ?

उत्तर – उबले हुए पानी में 24 घंटे तक जीवों की उत्पत्ति नहीं होती है। (यदि चाय के स मान उबाल दें तब उत्पत्ति नहीं होती)

प्र.53 – साधु परमेष्ठी अपने साथ धर्मशास्त्र शास्त्र क्यों रखते है ?

उत्तर – ज्ञान की वृद्धि के लिए, अज्ञान की निवृत्ति के लिए तथा मोक्ष मार्ग में दृढ़ता लाने के लिए साधु परमेष्ठी अपने पास शास्त्र रखते हैं।

प्र.54 – साधु परमेष्ठी तप क्यों करते है ?

उत्तर – परम साधु कर्मो की निर्जरा के लिए तप करते हैं।

प्र.55 – तप कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर – तप दो प्रकार के होते है –

(1) बाह्य तप (2) अंतरंग तप

प्र.56 – बाह्य तप किसे कहते हैं ?

उत्तर – उपवास आदि जो बाहर देखने में आते है उन्हें बाह्य तप कहते हैं।

प्र.57 – बाह्य तप के कितने भेद होते हैं ?

उत्तर – बाह्य तप छह प्रकार का होता है–

(1) अनशन (उपवास) (2) अवमौदर्य

(3) वृत्ति परिसंख्यान (4) रसपरित्याग

(4) विविक्त शय्यासन (6) कायक्लेश

प्र.58 – अनशन तप किसे कहते हैं ?

उत्तर – राग को समाप्त करने के लिए तथा ध्यान की सिद्धि के लिए चारों प्रकार के आहार का त्याग करने को अनशन (उपवास) कहते हैं।

प्र.59 – चार प्रकार के आहार कौन–कौन से होते हैं ?

उत्तर – (1) खाद्य – पूड़ी, सब्जी, चाँवल आदि

(2) स्वाद – लवंग, इलायची आदि

(3) लेह्य – आइसक्रीम ,रबड़ी,खीरादि

(4) पेय – दूध,पानी,जूस आदि

प्र.60 – **अवमौदर्य तप किसे कहते हैं ?**

उत्तर – भूख से कम भोजन करने को अवमौदर्य तप कहते हैं।

प्र.61 – **वृति परिसंख्यान तप किसे कहते हैं ?**

उत्तर – भिक्षा को जाते समय अट–पटा नियम लेने को वृति परिसंख्यान तप कहते हैं।

प्र.62 – **रस परित्याग तप किसे कहते हैं ?**

उत्तर – घी, दूध, लवण आदि रसों का त्याग करने को रस परित्याग तप कहते हैं।

प्र.63 – **सच्चे साधु किस प्रकार के होते हैं ?**

उत्तर – जो समस्त प्रकार की शल्यों से रहित होते हैं वे सच्चे साधु होते हैं।

प्र.64 – **शल्य किसे कहते हैं ?**

उत्तर – चुभन को शल्य कहते हैं, जो काटें के समान मन तथा तन को चुभे उसे शल्य कहते हैं ।

प्र.65 – **शल्य कितने प्रकार की होती है ?**

उत्तर – शल्य तीन प्रकार के होते हैं।

1. माया शल्य 2. मिथ्या शल्य
3. निदान शल्य

प्र.66 – **माया शल्य किसे कहते हैं ?**

उत्तर – सरल वचनों को बोलकर उसके विरुद्ध सोचने को माया शल्य कहते हैं।

प्र.67 – **मिथ्या शल्य किसे कहते हैं ?**

उत्तर – जैसा वस्तु का स्वरुप है, उसको उस तरह न मानकर अन्यथा का मानने को मिथ्या शल्य कहते हैं ।

प्र.68 – **निदान शल्य किसे कहते हैं ?**

उत्तर – भविष्य के लिये भोगों की इच्छा करने को निदान शल्य कहते हैं।

प्र.69 – **विविक्त शय्यासन तप किसे कहते हैं ?**

उत्तर – स्वाध्याय, ध्यान तथा ब्रह्मचर्य की सिद्धि के लिये एकान्त में बैठना,शयन करने को विविक्त कहते हैं।

प्र.70 – **कायक्लेश तप किसे कहते हैं ?**

उत्तर – शारीरिक कष्टों को सहन करने, अनेक प्रकार के आसनों से ध्यान करने को कायक्लेश कहते हैं।

प्र.71 – **मुनिराज कायक्लेश तप क्यों करते हैं ?**

उत्तर – शारीरिक दु:ख तप वृद्धि न करने को सुख की आसक्ति दूर करने को, तथा कर्म के क्षय करने को मुनिराज कायक्लेश तप करते हैं।

प्र.72 – **अंतरंग तप किसे कहते हैं उसके कितने भेद हैं ?**

उत्तर – जिसमें मानसिक क्रिया की प्रधानता हो तथा जिससे ब्राह्य क्रिया होते हुए अंतरंग भावों की शुद्धता होवे उसके 6 भेद होते हैं –

1.प्रायश्चित 2. विनय 3. वैयावृत्त
4.स्वाध्याय 5. व्युत्सर्ग 6. ध्यान

प्र.73 – **मुनि किसे कहते हैं ?**

उत्तर – 28 मुनि गुणों के धारक नग्न दिगम्बर साधु जो मौन की साधना करें उन्हें मुनि कहते हैं।

प्र.74 – **ऋषि किसे कहते हैं ?**

उत्तर – ऋद्धि प्राप्त मुनि को ऋषि कहते हैं।

प्र.75 – **यति किसे कहते हैं ?**

उत्तर – जो अपने यत्न से प्रयत्नशील रहते हैं,जो उपशम श्रेणी व क्षपक श्रेणी में रहते हैं उन्हें यति कहते हैं।

प्र.76 – **अनगार किसे कहते हैं ?**

उत्तर – सामान्य साधुओं को अनगार कहते हैं जो आत्मा की साधना में लीन रहते हैं।

प्र.77 – **कितने परमेष्ठी रत्नत्रय से सहित होते हैं ?**

उत्तर – आचार्य,उपाध्याय ,साधु परमेष्ठी रत्नत्रय से सहित होते हैं। अरहंत ,सिद्ध परमेष्ठी में रत्नत्रय का फल पाया जाता है।

प्र.78 – **जिन देव –शास्त्र–गुरु को किस प्रकार से विनय नमन करना चाहिये ?**

उत्तर – जिन–देवशास्त्र गुरु को उत्तम द्रव्यों सहित पंचाङ्ग, अष्टांगासन से नमस्कार करना चाहिये।

प्र.79 – **जिन शास्त्र को किस प्रकार से नमस्कार करना चाहिए ?**

उत्तर – जिन शास्त्र के समक्ष चार मेरु बनाकर पंचाग नमस्कार करना चाहिये। (जो चारों अनुयोगों के प्रतीक होते हैं)

प्र.80 – **जिन देव को नमस्कार करने की विधि क्या हैं ?**

उत्तर – जिन–देव के स मक्ष अक्षत के पंचमेरु बना पंचांग अष्टांग पूर्वक नमस्कार करना चाहिये।

प्र.81 – **अंत के तीन परमष्ठियों को नमस्कार करने की विधि क्या हैं ?**

उत्तर – रत्नत्रय के धारी गुरुओं को पुंज के तीन मेरु बनाकर

गवासन से नमस्कार करना चाहिये तथा मुख से नमोस्तुनमोस्तु–नमोस्तु 3 बार उच्चारण करना चाहिये।

à.82 – **मुनिराज जी कितने उत्तर गुण से सहित होते हैं ?**

उत्तर – मुनिराज 84 लाख उत्तर गुणों से सहित होते हैं।

प्र.83 – **जिनलिङ्ग को धारण करते समय सर्वप्रथम साधक कौन से तप को अङ्गीकार करते हैं ?**

उत्तर – दिगम्बरत्व को धारण करते समय मुनिवर सर्वप्रथम केश लौंच तथा उपवास तप को धारण करते हैं।

प्र.84 – **तेरह प्रकार का चारित्र किसके पास होता है,वह कौन–कौन हैं ?**

उत्तर – तेरह प्रकार का चारित्र साधु परमेष्ठी के सामान्य रुप से होता है। वह5 महाव्रत + 5 समिति + 3 गुप्ति =13 हैं ।

प्र.85 – **तेरह प्रकार के चरित्र का अर्थ क्या हैं ?**

उत्तर – 1+3= 4 चार संख्या संज्ञाओं एवं कषायों का प्रतीक है। अर्थात् जो चारों गतियों,चारों संज्ञाओं ,चारों कषायों से जीव को बचावें वही चारित्र कहलाता है।

प्र.86 – **चारित्र किसे कहते हैं ?**

उत्तर – मन वचन काय की अशुभ प्रवृति को त्याग कर व्रत समिति आदि शुभ प्रवृतियों में लीन होना चारित्र है।

प्र.87 – **चारित्र कितने प्रकार के होते वह कौन–कौन से हैं ?**

उत्तर – चारित्र पाँच प्रकार के होते हैं वह निम्न प्रकार है :
1. सामायिक चारित्र 2. छेदो–पदस्थापना 3.परिहार विशुद्धि 4. सूक्ष्म सम्पराय 5. यथाख्यात चारित्र

प्र.88 – **सामायिक चारित्र किसे कहते हैं ?**

उत्तर – समस्त सावद्य (पाप) कर्मों एवं शुभ–अशुभ भावों को त्यागकर अपने शुद्ध आत्म के स्वरुप में लीन होना सामायिक चारित्र है।

प्र.89 – **छेदो पदस्थापना चारित्र किसे कहते हैं ?**

उत्तर – प्रमादवश चारित्र में लगे दोषों को छेद कर पुन: उसमें स्थापित होना छेदो–पदस्थापना चारित्र कहते हैं।

प्र.90 – **परिहार विशुद्धि चारित्र किसे कहते हैं ?**

उत्तर – जिस चारित्र में मिथ्या एवं जीवों के पीड़ा के परिहार रुप अर्थात् विशेष त्याग रुप विशुद्ध भाव हो उसे परिहार विशुद्धि चारित्र कहते हैं।

प्र.91 – **सूक्ष्म सम्पराय चारित्र किसे कहते हैं ?**

उत्तर – श्रेणी में अति सूक्ष्म लोभ कषाय के उदय रहने पर जो संयम होता है वही सूक्ष्म सम्पराय–चारित्र कहलाता है।

प्र.92 – **यथाख्यात् चारित्र किसे कहते हैं ?**

उत्तर – चारित्र मोहनीय कर्म के सर्वथा उपशम से अथवा क्षय से यथावस्थित वीतराग निर्विकार आत्म स्वभाव की प्राप्ति होना यथाख्यात चारित्र है।

प्र.93 – **साधु परमेष्ठी के कौन–कौन से चारित्र हो सकते हैं?**

उत्तर – साधु परमेष्ठी के समस्त प्रकार के चारित्र होते हैं।

प्र.94 – **वह कौन से परमेष्ठी हैं जिन्हें विक्रया ऋद्धि प्राप्त होती हैं।**

उत्तर – महान विशुद्ध परिणाम वाले साधु परमेष्ठी को ही यह ऋद्धि प्राप्त होती है।

प्र.95 – **तैजस ऋद्धि तथा आहारक ऋद्धि कौन से परमेष्ठी को होती हैं ?**

उत्तर – महान संयमी ऋद्धिधारी साधु परमेष्ठी को ही तैजस तथा आहारक ऋद्धि प्राप्त होती है।

प्र.96 – **उत्पाद, व्यय तथा ध्रौव्य सहित कितने परमेष्ठी होते हैं ?**

उत्तर – पांचों परमेष्ठी उत्पाद, व्यय तथा ध्रौव्य सहित होते हैं।

प्र.97 – **साधु परमेष्ठी कितने प्रकार के होते हैं ?**

उत्तर – साधु परमेष्ठी पाँच प्रकार के होते है – (1) पुलाक (2) वकुश (3) कुशील (4) निर्ग्रन्थ (5) स्नातक

प्र.98 – **सर्वावधि तथा परमावधि ज्ञान किनको होता हैं ?**

उत्तर – यह अवधि ज्ञान उन मुनिराजों को होता है जो उसी भव से मोक्ष को जाने वाले होवें।

प्र.99 – **सद्गुरु किसे कहते हैं ?**

उत्तर – आचार्य उपाध्याय या साधु परमेष्ठी ही सद्गुरु की संज्ञा को प्राप्त होते हैं।

प्र.100 – **मुनिराज नग्न भेष को धारण क्यों करते हैं ?**

उत्तर – जिसे कोई भी प्राप्त करना नहीं चाहता है, ऐसे भेष को ही दिगम्बर साधु धारण करते हैं तथा तत्काल उत्पन्न हुए बालक के समान निर्विकार होते हैं तथा उपद्रव रहित अवस्था को सहज रुप से धारण करते हैं।

प्र.101 – **वह कौन से मुनिराज थे जिन्हें एक बार में सुनते ही कण्ठस्थ हो जाता था ?**

उत्तर – मुनिश्री अकलंक देव को एक बार में सुनते ही कण्ठस्थ हो जाता था।

प्र.102 – विवाह के दूसरे ही दिन कौन से श्रावक ने मुनिव्रतों को धारण किया था ?

उत्तर – श्रावक जम्बू कुमार ने विवाह के दूसरे दिन ही दीक्षा ग्रहण कर ली थी।

प्र.103 – वह कौन से मुनिराज थे जिन्होंने कैलाश पर्वत को अंगूठे से दबाया था ?

उत्तर – बालि मुनिराज ने ऋद्धि के बल द्वारा अंगूठे से कैलाश पर्वत को दबाया जाता था।

प्र.104 – राम मुनिराज पर किसने उपसर्ग किया था ?

उत्तर – राम मुनिराज पर सीतेन्द्र ने उपसर्ग किया था।

प्र.105 – धर्म के लिए किस बालक ने अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया था ?

उत्तर – धर्म के लिये निकलंक ने अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया।

प्र.106 – वह कौन से अंतिम क्षत्रिय सम्राट थे जिन्होंने --मुनि ब्रतों को धारण कर दैगम्बरी दीक्षा धारण की थी ?

उत्तर – मौर्य सम्राट चंद्रगुप्त मुनि ने विशाखानंदी जी से दीक्षा ग्रहण की थी।

प्र.107 – परमेष्ठी पद के धारक जीवात्मा किस गति के होते हैं ?

उत्तर – इस पद के धारक मनुष्य गति के जीव ही होते हैं।

प्र.108 – परमेष्ठी पद के धारी स्वर्ग के देव हो सकते हैं क्या?

उत्तर – इस पद के धारक सभी कर्मभूमि के मनुष्य होते हैं देव लोक के जीव व्रत संयम को धारण नहीं कर सकते है। इसलिए वह परमेष्ठी पद के धारी नहीं होते हैं।

प्र.109 – मानव घर/गृहस्थी को संभालते हुए साधु परमेष्ठी नहीं हो सकते हैं क्या ?

उत्तर – जो मोह/ममत्व भाव एवं मूर्छा भाव को नहीं त्यागे वह परम--पद को कैसे धारण कर सकता है।

प्र.110 – णमोकार मंत्र को हम किस अनुपूर्वी क्रम से कह सकते हैं ?

उत्तर – यह मंत्रराज को हम यत्रतत्रानुपूर्वी में ही कह सकते हैं क्योंकियदि क्रमशः साधुजी,उपाध्याय जी,आचार्यजी, अरिहंतजी सिद्ध कहे होते तो पूर्वानुक्रम होता तथा इसे पश्चातानुपूर्वी भी नहीं कह सकते क्योंकि पदों को उल्टे क्रम से भी नहीं रखा गया है।

प्र.111 – णमोकार मंत्र के (प्रथम पदआदिक) समस्त पदों का चिंतवन करना कौन सा ध्यान हैं ?

उत्तर – समस्त पदों का ध्यान करना पदस्थ ध्यान कहलाता है।

प्र.112 – णमोकार मंत्र शब्द (वर्णों) की दृष्टि से किस प्रकार का होता है ?

उत्तर – यह मंत्र शाब्दिक दृष्टि से पुद्गल/अजीव है।

प्र.113 – यह णमोकार मंत्र अर्थ की दृष्टि से किस प्रकार का है ?

उत्तर – यह मंत्रराज अर्थ /भाव की दृष्टि से सचेतन /सजीव एवं अनंत गुणात्मक है।

प्र.114 – साधु परमेष्ठी के स्त्री बच्चे होते है ?

उत्तर – साधु परमेष्ठी के स्त्री बच्चे आदि नहीं होते है।

प्र.115 – स्कूल में स्थित गुरु,शिक्षक साधु है ?

उत्तर – नहीं वे तो लौकिक शिक्षा देने वाले होते हैं वे गुरु नहीं होते हैं वे तो मोही,रागी,द्वेषी होते है।

प्र.116 – **साधु परमेष्ठी की पहचान बताईये ?**

उत्तर – जो नग्न वेश को धारण करें तथा जिनके प ास जीव रक्षा का उपकरण पिच्छी तथा कमण्डल होता है।

प्र.117 – **साधु परमेष्ठी कैसे कहां पर रहते हैं ?**

उत्तर – साधु परमेष्ठी विषयों की आशाओं की जिन्हें इच्छा नहीं है तथा समता परिणाम वाले होते है वे ढाई द्वीप की कर्म भूमियों में पाये जाते हैं।

प्र.118 – **साधु परमेष्ठियों के तपोवन,मठ या आश्रम होते हैं ?**

उत्तर – नहीं,साधु जी के तपोवन आदि नहीं होते क्योंकि वह मूर्च्छा से रहित होते हैं किसी पर उनका स्वामित्व नहीं होता।

प्र.119 – **मुनिराज क्या कार्य करते हैं ?**

उत्तर – मुनिवर अपने परिणामों को संभालने को हमेशा ज्ञान,ध्यान तथा तप की साधना करते रहते हैं।

प्र.120 – **आचार्य उपाध्याय और साधु परमेष्ठी में बड़े कौन से परमेष्ठी होते हैं ?**

उत्तर – साधु तो सबसे मूल श्रोत हैं जो विशेष प्रतिभा संपन्न होते हैं। वे आचार्य एवं उपाध्याय होते हैं परन्तु आचार्य परमेष्ठी बड़े होते हैं।

प्र.121 – **मुनिराज किसको ज्ञेय बनाते हैं ?**

उत्तर – मुनिराज छः द्रव्यों को ज्ञेय बनाते हैं।

प्र.122 – **द्रव्य किसे कहते हैं ?**

उत्तर – गुणों के स मूह को तथा गुण और पर्यायवान् को द्रव्य कहते हैं

प्र.123 – **द्रव्य कितने और कौन–कौन से होते हैं ?**

उत्तर – द्रव्य छः होते है – जीव,पुद्‌गल,धम्र,अधर्म,आकाश व काल

प्र.124 – **मुनिवर कितने तत्वों को विशेष रुप से ज्ञेय बनाते हैं ?**

उत्तर – सात तत्वों को जीव,अजीव,आस्त्रव,बंध,संवर,निर्जरा,मोक्ष इनको विशेष रुप से ज्ञेय बनाते हैं।

प्र.125 – **तत्व किसे कहते हैं ?**

उत्तर – वस्तु के स्वरुप को तत्व कहते हैं।

प्र.126 – **मुनिराज आहार ग्रहण क्यों किस प्रकार से करते हैं ?**

उत्तर – शरीर की स्थिति बनाये रखने को,प्राणों को धारण करने को तथा ध्यान तप की साधना में लीन रहने को दिन में एक बार खड़े–खड़े आहार चर्या करते हैं।

प्र.127 – **मुनिराज खड़े होकर आहार चर्या क्यों करते हैं ?**

उत्तर – उत्तम आसन मिल गया तो संतोष /राग होगा और नहीं मिला तो असंतोष (द्वेष) होगा इसलिए राग तथा द्वेष की अवस्था छोड़ने को मुनिराज खड़े होकर आहार चर्या करते हैं

प्र.128 – **साधु परमेष्ठी खड़े होकर एक बार ही आहार क्यों करते हैं ?**

उत्तर – साधु परमेष्ठी के 28 मूल गुणों में से एक मूलगुण खड़े होकर आहार लेना व इंद्रिय विजय के लिए एक बार ही भोजन करते हैं।

प्र.129 – **मुनिराज स्नान क्यों नहीं करते हैं ?**

उत्तर – साधु परमेष्ठी व अन्य परमेष्ठी शरीर से मोह तथा ममत्व भाव घटाने के लिए तथा जलकायिक और त्रस जीवों की हिंसा से बचने के लिए स्नान नहीं करते हैं।

प्र.130 – **बैठकर कौन से परमेष्ठी आहार करते हैं ?**

उत्तर – बैठकर कोई भी परमेष्ठी आहार चर्या नहीं करते हैं।

प्र.131 – **मुनिराज कैश– लौंच क्यों करते हैं ?**

उत्तर – मुनिराज पराधीनता से बचने को अपने शारीरिक ममत्व को कम करने तथा बल के परीक्षण को केशलौं च करते हैं

प्र.132 – **मुनिराज दंत धावन क्यों नहीं करते हैं ?**

उत्तर – अहिंसा धर्म को पालन को तथा रागभाव को कम करने को मुनिराज आदि दंतधावन नहीं करते हैं।

प्र.133 – **कितने परमेष्ठी प्रतिक्रमण करते हैं ?**

उत्तर – आचार्य उपाध्याय व साधु परमेष्ठी प्रतिक्रमण करते हैं ।

प्र.134 – **प्रतिक्रमण किसे कहते हैं ?**

उत्तर – जो अंगीकार किये गये व्रतों को शुद्ध करता है वह प्रति क्रमण कहलाता है।

प्र.135 – **प्रतिक्रमण कितने प्रकार का होता हैं ?**

उत्तर – प्रतिक्रमण आठ प्रकार का होता है।
1. दैवसिक प्रतिक्रमण 2. रात्रिक प्रतिक्रमण 3. ईर्यापथ प्रतिक्रमण 4. पाक्षिक प्रतिक्रमण 5. चार्तुमासिक प्रतिक्रमण 6. वार्षिक प्रतिक्रमण 7. युग प्रतिक्रमण 8. औतमार्तिक प्रतिक्रमण

प्र.136 – **प्रतिक्रमण करने से. क्या लाभ हैं ?**

उत्तर – प्रतिक्रमण करने से जीव के परिणाम (भाव) की विशुद्धि होती है।

प्र.137 – **कितने परमेष्ठी प्रत्याख्यान करते हैं ?**

उत्तर – आचार्य उपाध्याय एवं साधु परमेष्ठी प्रत्याख्यान करते हैं।

प्र.138 – **प्रत्याख्यान किसे कहते हैं ?**

उत्तर – पापा भावों को आगामी काल में नहीं करुंगा इस प्रकार का संकल्प करना ही प्रत्याख्यान कहलाता है।

प्र.139 – **साधु परमेष्ठी को एक साथ कितने परिषह हो सकते हैं ?**

उत्तर – साधु परमेष्ठी को संभवत:19 परिषह एक साथ हो सकते है।

प्र.140 – **परिषह किसे कहते हैं उससे क्या लाभ हैं ?**

उत्तर – शारीरिक एवं मानसिक कष्टों को सहन करना ही परिषह हैं,मुमुक्षु जीव इन परिषहों को जीतकर कर्मों का क्षय करते हैं।

प्र.141 – **वर्तमान में व्यवहार रत्नत्रय के धारक कितने परमेष्ठी हो सकते हैं ?**

उत्तर – व्यवहार रत्नत्रय के धारी आचार्य उपाध्याय एवं साधु तीन परमेष्ठी हो सकते है।

प्र.142 – **कितने परमेष्ठी क्षयोपशम सम्यक्तव सहित हो सकते हैं ?**

उत्तर – आचार्य उपाध्याय एवं साधु तीनों परमेष्ठी क्षयोपशम सम्यक्तव के धारी हो सकते हैं ।

प्र.143 – **परिपूर्ण रत्नत्रय सहित कितने परमेष्ठी होते हैं ?**

उत्तर – अरिहंत एवं सिद्ध परमेष्ठी परिपूर्ण निश्चय रत्नत्रय वाले होते हैं।

प्र.144 – **किस कषाय के उ दय से जीव साधु–पद को धारण नहीं कर सकता ?**

उत्तर – प्रत्याख्यान कषाय के उ दय से जीव साधु परमेष्ठी नहीं बन सकता है।

प्र.145 – **कितने परमेष्ठी निकट भव्य होते हैं ?**

उत्तर – क्षायिक श्रद्धा सहित समस्त परमेष्ठी निकट भव्य होते हैं।

प्र.146 – **जीव को सच्चा धर्म क्यों नहीं अच्छा लगता है ?**

उत्तर – मिथ्यात्व मोहनीय कर्म के उदय से जीव को सच्चा धर्म भी अच्छा नहीं लगता है।

प्र.147 – **हिंसा पाप कितने प्रकार के होते हैं ?**

उत्तर – वह हिंसा चार प्रकार की होती है –

1. आरंभी हिंसा– जो घर गृहस्थ के भोजन बनाने,पानी भरने, मकान बनाने ,झाड़ू लगाने में जो हिंसा होती है वह आरंभी हिंसा है।
2. उद्योगी हिंसा – जो गृहस्थों के व्यवसाय उद्योग करने में तथा अजीविका चलाने में जो हिंसा होती है उसे उद्योगी हिंसा कहते हैं।
3. विरोधी हिंसा – जो गृहस्थों को अपने धन धर्म एवं कुटुम्बी जन की सुरक्षा में जो हिंसा होती है वह विरोधी हिंसा है।
4. संकल्पी हिंसा – जो हिंसा प्राणियों को संकल्प सहित कष्ट देने या प्राण हरण करने की भावना संकल्पी हिंसा कहलाती है।

प्र.148 – **कितने परमेष्ठी के आहार– विहारादिक कार्यों में विघ्न–बाधाऐं आ सकते हैं ?**

उत्तर – आचार्य उपाध्याय एवं साधु परमेष्ठी के शुभ–अनुष्ठानों में विघ्न (अन्तराय) आ सकते हैं।

प्र.149 – **कितने परमेष्ठी भव्य होते हैं ?**

उत्तर – सभी परमेष्ठी भव्य होते हैं।

प्र.150 – **भव्य किसे कहते हैं ?**

उत्तर – जो रत्नत्रय को धारण करके परमात्मा पद की सिद्धि करते हैं उन्हें भव्य कहते हैं।

प्र.151 – **वे साधु परमेष्ठी मूल गुणों की रक्षा के लिए क्या करते हैं ?**

उत्तर – वे साधु परमेष्ठी मूल गुणों की रक्षा के लिए परीषहों एवं तपों को धारण करते हैं।

प्र.152 – **मुनिराज के नित्य कितने आवश्यक होते हैं ?**

उत्तर – साधुओं के छह आवश्यक हमेशा रहते हैं।

प्र.153 – **वे छह आवश्यक कौन– कौन से होते हैं ?**

उत्तर – समताभाव (सामायिक) स्तुति,वंदना,प्रतिक्रमण,प्रत्याख्यान तथा शरीर से ममत्व–भाव त्याग (कायोत्सर्ग) ये छह आवश्यक होते हैं।

प्र.154 – **आवश्यक किसे कहते हैं ?**

उत्तर – जो आचार नित्य ही जरुरी होवें उन्हें आवश्यक कहते हैं।

प्र.155 – **वंदना तथा प्रस्तुति में क्या अंतर हैं ?**

उत्तर – चौबीसों तीर्थंकर की आराधना करने को वंदना कहते है तथा किसी एक तीर्थंकर की आराधना को स्तुति कहते हैं।

प्र.156 – **साधु परमेष्ठी वन्दना कितनी बार करते हैं ?**

उत्तर – साधु परमेष्ठी प्रतिदिन तीन बार वन्दना करते हैं। (सुबह,दोपहर,सायंकाल में)

प्र.157 – **कितने परमेष्ठी वन्दना/आराधना करते हैं ?**

उत्तर – अरिहंत तथा सिद्ध को छोड़कर तीन परमेष्ठी वंदना उपासना करते हैं।

प्र.158 – सामायिक किसे कहते हैं ?

उत्तर – समता भावों से युक्त आर्त्त–रौद्र भावों के त्याग को सामायिक कहते हैं।

प्र.159 – साधु परमेष्ठी आवश्यकों का पालन कब–कब करते हैं ?

उत्तर – साधु परमेष्ठी तीन संध्याकालों में आवश्यकों का पालन करते हैं तथा कुछ तो हमेशा ही आवश्यकों को साधते रहते हैं।

प्र.160 – पद्मरुचि सेठ ने बैल को महामंत्र सुनाया था परिणाम स्वरुप बैल का जीव मर कर कहां पर उत्पन्न हुआ था ?

उत्तर – णमोकार मंत्र को सुनने से बैल का जीव राम जी के भाई सुग्रीव हुआ था।

प्र.161 – वह कौन था जो णमोकार मंत्र के प्रभाव से आकाशगामी विद्या को प्राप्त कर मोक्ष गया था ?

उत्तर – णमोकार मंत्र के प्रभाव से अंजन चोर विद्या को प्राप्त कर मोक्ष को गया था।

प्र.162 – श्रीराम चंद्रजी ने कौन से पक्षी को मंत्र सुनाया था परिणाम स्वरुप पक्षी ने कहां जन्म लिया था ?

उत्तर – श्रीरामचंद्र जी ने जटायु पक्षी को मंत्र सुनाया था जिसके प्रभाव से वह छटे स्वर्ग में देव हुआ था।

प्र.163 – ग्वाले ने कौन से मंत्र के व्रत किये थे तथा उसके प्रभाव से वह क्या हुआ ?

उत्तर – णमोकार मंत्र के व्रत करने से चंपा नगरी में सेठ सुदर्शन हुआ।

प्र.164 – नाग नागिन को किसने मंत्र सुनाया उसके प्रभाव से क्या बने ?

उत्तर – पार्श्वकुमार ने नाग के जोड़े को मंत्र सुनाया था वे धरणेन्द्र पद्मावती बने।

प्र.165 – श्वान् को णमोकार मंत्र किसने सुनाया था वह कहां गया था?

उत्तर – जीवन्धर कुमार ने श्वान् को मंत्र सुनाया था वह यक्षेन्द्र स्वर्ग का देव हुआ।

प्र.166 – पंच परमेष्ठी का जाप (ध्यान) करने से किसको अग्नि का नीर हुआ था ?

उत्तर – सीता द्वारा पंच परमेष्ठी का जाप करने वा शील के प्रभाव से अग्नि का पानी हो गया।

प्र.167 – अनंगसरा ने किस मंत्र का जाप किया था उसके प्रभाव से क्या बनी ?

उत्तर – णमोकार मंत्र के जाप करने से अनंगसरा लक्ष्मण की पटरानी विशल्या बनी थी।

प्र.168 – समस्त मुनिराजों ,उपाध्यायों एवं आचार्यो के नाम के पहिले 108 क्यों लगाते हैं ?

उत्तर – मुनिराज आदि 108 प्रकार के गुणों से सहित होते हैं इसलिए नाम के आगे 108 लगाते हैं।

प्र.169 – वे उपरोक्त 108 गुण कौन–कौन से होते हैं ?

उत्तर – 28 मूलगुण,22 परिषह जय,13 चारित्र सहित, 12 तपों से युक्त, 12 भावनाओं से सहित, 10 धर्मधारक, 6 काय के

जीवों की रक्षा करना, 5 आचार से युक्त यह एक सौ आठ गुण होते हैं।

प्र.170 – **उत्तम श्रावक ऐलक जी तथा क्षुल्लक के नाम के पूर्व 105 किस कारण से लगाते हैं ?**

उत्तर – उत्तम श्रावक 105 गुणों से सहित होते है इसलिए नाम के पूर्व 105 लगाते हैं ।

प्र.171 – **उत्तम श्रावक के 105 गुण कौन से होते हैं ?**

उत्तर – 7 व्यसनों का त्याग , 22 अभक्ष्य का त्याग, 12 व्रतों का धारण, 12 तपों का एक देश धारण, 12 भावनाओं का मनन, 11 प्रतिमायें, 8 मूल गुण का पालन, 6 आवश्यक का पालन, 6 काय के जीवों की रक्षा, 5 समितियाँ एकदेश, 3 गुप्तियां, 1भुक्ति (आहारपान)

प्र.172 – **उत्तम श्रावक कौन सी आत्मा होते हैं ?**

उत्तर – यह उत्तम श्रावक मध्यम अन्तरात्मा है।

प्र.173 – **मुनिराज/साधु परमेष्ठियों के 28 मूल गुण कौन से होते हैं ?**

उत्तर – **पाँच महाव्रत :–**

अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह

पाँच समिति :–

ईर्या, भाषा, एषणा, आदान निक्षेपण,व्युत्सर्ग

पाँच इंद्रिय विजय :–

स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु, कर्ण

छह आवश्यक :–

समता, वंदना, स्वतवन, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान, कायोत्सर्ग

सात शेष गुण :–

1. अस्नान, 2. अदन्तधावन, 3. नग्नता, 4. भू–शयन, 5. एकभुक्ति भोजन, 6. खड़े होकर आहार, 7. केशलौंच करना।

प्र. – **मुनिराज व आचार्य परमेष्ठी की वंदना करते समय क्या बोलना चाहिये ?**

उत्तर – समस्त आचार्यों की वंदना करते समय सविनय पूर्वक तीन बार स्वामिन भो ! नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु बोलते हुए अर्ध्य समर्पित करना चाहिये।

उपाध्याय परमेष्ठी

प्रश्न 1 – 'णमो उवज्झायाणं का अर्थ क्या हैं ?

उत्तर – जगत के सभी उपाध्यायों को नमस्कार हो।

प्रश्न 2 – लोक (जगत) कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर – लोक (जगत) तीन प्रकार के होते हैं – (1) ऊर्ध्वलोक (2) मध्यलोक (3) अधोलोक (पाताल लोक)।

प्रश्न 3 – उपाध्याय परमेष्ठी कहां पाये जाते हैं ?

उत्तर – उपाध्याय परमेष्ठी मध्यलोक की कर्म भूमियों में पाये जाते हैं।

प्रश्न 4 – उपाध्याय परमेष्ठी किसे कहते हैं ?

उत्तर – जो मुनि संघ में पठन–पाठन कराते हैं ,जिन्हें आगम ग्रंथों का ज्ञान विशेष रुप से होता है,उन्हें उपाध्याय परमेष्ठी कहते हैं।

प्रश्न 5 – आगम किसे कहते हैं ?

उत्तर – निर्दोष पूर्वा पर विरोध रहित आप्त के वचनों को अथवा "आ" अर्थात् आप्त कथित "ग" अर्थात् गणधर रचित "म" याने मुनियों के द्वारा मनन की हुई वाणी को आगम कहते हैं।

प्रश्न 6 – श्रुत ज्ञान कितने प्रकार होते हैं ?

उत्तर – श्रुत ज्ञान के अनेक भेद प्रभेद कहे गये हैं चूंकि विषय भेद की अपेक्षा से वह चार अनुयोग रुप हैं।

प्रश्न 7 – (श्रुत ज्ञान के) चार अनुयोग कौन से हैं ?

उत्तर – (1) प्रथमानुयोग (2) करणानुयोग (3) चरणानुयोग (4) द्रव्यानुयोग

प्रश्न 8 – प्रथमानुयोग किसे कहते हैं ?

उत्तर – जो बोधि समाधि का निधान है तथा जिसमें (63) तिरेसठ शलाका पुरुषों के चरित्र का आख्यान किया जाता है उसे प्रथमानुयोग कहते हैं।

प्रश्न 9 – करणानुयोग किसे कहते हैं ?

उत्तर – जिसमें लोक व अलोक का विभाग युग परिवर्तन एवं चारों गति के जीवों का आख्यान किया जाता है उसे करणानुयोग कहते हैं।

प्रश्न 10 – चरणानुयोग किसे कहते हैं ?

उत्तर – चरण का अर्थ चरित्र है जिसमें गृहस्थों एवं साधुओं (मुनियों) के आचरणों की उत्पत्ति वृद्धि और उनकी सुरक्षा कैसी हो आदि का विवेचन हो उसे चरणानुयोग कहते हैं।

प्रश्न 11 – द्रव्यानुयोग किसे कहते हैं ?

उत्तर – द्रव्य के ब ताने वाले अनुयोगों को जिसमें प्रमाण ,नय, निक्षेप सहित छह द्रव्यों पाँच अस्तिकाय सात– तत्वों नौ–पदार्थों इनका आख्यान हो उसे द्रव्यानुयोग कहते हैं।

प्रश्न 12 – सम्यक श्रुतज्ञान के अनुयोगों में प्रथम किस अनुयोग का स्वाध्याय करना चाहिए ?

उत्तर – सर्वप्रथम प्रथमानुयोग का ही स्वाध्याय करना चाहिए , क्योंकि यह अनुयोग सबमें प्रधान हैं तथा कथात्मक होने से आबाल वृद्ध सभी को आसानी से समझ में आ जाता हैं।

प्रश्न 13 – ज्ञान किसे कहते हैं ?

उत्तर – सत्यार्थ का प्रकाश करने वाली शक्ति विशेष को ज्ञान कहते हैं।

प्रश्न 14 – **विशेष रुप से उपाध्याय परमेष्ठी किसे कहते हैं ?**

उत्तर – जो सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्र से सहित ज्ञान की विशेष साधना कर धर्मोपदेश में लीन रहते हैं जो मुनियों में प्रधान होते चतुर्विध संघ को पढ़ाते हैं। ग्यारह अङ्ग चौदह–पूर्व के ज्ञाता होते हैं उन्हें विशेष रुप से उपाध्याय परमेष्ठी कहते हैं।

प्रश्न 15 – **चतुर्विध संघ किसे कहते हैं ?**

उत्तर – मुनि, आर्यिका श्रावक श्राविकाओं के संघ को चतुर्विध संघ कहते हैं ।

प्रश्न 16 – **उपाध्याय परमेष्ठी में कितने मूल–गुण होते हैं ?**

उत्तर – उपाध्याय परमेष्ठी में पच्चीस मूलगुण होते हैं। वह ग्यारह अंग और चौदह पूर्व के भेद से 25 होते हैं।

प्रश्न 17 – **चतुर्विध संघ और भी अन्य प्रकार के होते हैं ?**

उत्तर – हाँ, ऋषि यति मुनि अनगारों के संघ को भी चतुर्विद संघ कहा है।

प्रश्न 18 – **ग्यारह अङ्ग कौन–कौन से हैं ?**

उत्तर – (1) आचाराङ्ग (2) सूत्रकृताङ्ग (3) स्थानाङ्ग
(4) समवायङ्ग (5) व्याख्याप्रज्ञप्त्ङ्ग
(6) ज्ञातृधर्मकथाङ्ग (7) उपासकाध्यानाङ्ग,
(8) अन्तकृद्धशाङ्ग (9) अनुत्तरोत्पादकदशाङ्ग,
(10) प्रश्नव्याकरणाङ्ग (11) विपाक सूत्राङ्ग।

प्रश्न 19 – **चौदह पूर्व कौन–कौन से हैं ?**

उत्तर – वह निम्नलिखित है :–
(1) उत्पादपूर्व (2) अग्रायणीपूर्व (3) वीर्यनुवादपूर्व
(4) अस्तिनास्ति–प्रवाद पूर्व (5) ज्ञानप्रवाद–पूर्व

(6) सत्यप्रवाद–पूर्व (7) आत्म प्रवाद–पूर्व
(8) कर्म प्रवाद–पूर्व (9) प्रत्याख्यान–पूर्व
(10) विद्यानुवाद–पूर्व (11) कल्याणुवाद–पूर्व
(12) प्राणानुवाद –पूर्व (13) क्रियाविशाल–पूर्व
(14) लोक बिन्दु –पूर्व

प्रश्न 20 – **चौदह पूर्वो के ज्ञाता कौन से परमेष्ठी होते हैं ?**

उत्तर – उपाध्यायजी गणधर–स्वामी साधु भी पूर्व के ज्ञाता होते हैं ।

प्रश्न 21 – **इस काल में किस ध्यान से जीव अज्ञान–अंधकार को दूरकर जल्द ही संसार सागर में तिरता हैं ?**

उत्तर – इस कलिकाल में रत्नत्रय सहित धर्मध्यान से विशुद्ध ज्ञानी जीव अज्ञान को नाश कर संसार सागर से पार होते हैं।

प्रश्न 22 – **कौन से स्वर्ग के देव पूर्णश्रुत अभ्यासी होते हैं ?**

उत्तर – संपूर्ण श्रुतज्ञान का अभ्यास करने वाले सौधर्म इन्द्र, पाँचवे ब्रह्म स्वर्ग के लौकान्तिक देव जो परम विशुद्ध भाव युक्त होते है।

प्रश्न 23 – **वह देव कितने भव के बाद मोक्ष जाते हैं ?**

उत्तर – वह इन्द्र तथा लौकान्तिक (ब्रह्मर्षि देव) एक ही भव के उपरान्त मुनि होकर संसार सागर से मुक्त होते हैं।

प्रश्न 24 – **श्रुत केवली को कौन सा ज्ञान होता हैं ?**

उत्तर – श्रुत केवली को परोक्ष ज्ञान होता है (इन्हें केवल ज्ञान के बिना प्रत्यक्ष ज्ञान होता है।)

प्रश्न 25 – **परोक्ष ज्ञान किसे कहते हैं ?**

उत्तर – जो ज्ञान इन्द्रिय तथा मन की सहायता से होता है उसे परोक्ष ज्ञान कहते हैं।

प्रश्न 26 – प्रत्यक्ष ज्ञान किसे कहते हैं तथा वह किसे होता है ?

उत्तर – जो ज्ञान इन्द्रिय तथा मन की सहायता के बिना साक्षात् आत्मा से यह अरिहंत एवं सिद्ध को ही होता है।

प्रश्न 27 – मंत्रराज के चतुर्थ पदधारी उपाध्याय जी किन्हें पढ़ाते हैं ?

उत्तर – उपाध्याय परेष्ठी के मु निसंघ में ही अध्ययन अध्यापन कराते हैं।

प्रश्न 28 – क्या सभी पढ़ाने वाले उपाध्याय होते हैं ?

उत्तर – नहीं , सभी पढ़ाने वाले उपाध्याय नहीं होते क्योंकि वह रत्नत्रय से रहित स्वार्थ से युक्त रागी–द्वेषी मोह मार्गी हैं।

प्रश्न 29 – महिलायें उपाध्याय परमेष्ठी हो सकती हैं ?

उत्तर – नहीं, इनमें कोई भी परमेष्ठी होने की योग्यता नहीं होती है।

प्रश्न 30 – वर्तमान में उनके परमेष्ठी बनने की योग्यता नहीं है तब उनकी मोक्षमार्ग की साधना निरर्थक है ?

उत्तर – महिलाओं की मोक्ष मार्ग की साधना व्यर्थ नहीं किन्तु वह इस साधना से स्त्रीलिङ्ग को नष्ट करके पुरुषत्व को प्राप्त होकर परम् पद प्राप्त करने का पुरुषार्थ कर संसार से भी मुक्त हो सकती है।

प्रश्न 31 – उपाध्याय परमेष्ठी किसका अध्ययन अध्यापन कराते हैं ?

उत्तर – यह पाठक जी जिनेन्द्र भगवान की वाणी जो गणधर स्वामी के माध्यम से प्राप्त होती है उसी का पठन पाठन कराते हैं।

प्रश्न 32 – क्या अरिहंत जैसे ही उपाध्याय जी की प्रतिमायें होती हैं ?

उत्तर – हाँ अरिहन्त जैसे ही उपाध्याय जी की प्रतिमायें होती हैं।

प्रश्न 33 – उपाध्याय परमेष्ठी की अलग से प्रतिमा कहां पर विराजमान है ?

उत्तर – उपाध्याय परमेष्ठी की प्रतिमा जी देवगढ़ अतिशय क्षेत्र पर विराजमान हैं।,

प्रश्न 34 – क्या साधु परमेष्ठी बने बिना उपाध्याय हो सकते हैं ?

उत्तर – साधु परमेष्ठी बने बिना उपाध्याय नहीं होते क्योंकि साधु परमेष्ठी मे प्रधान ही उपाध्याय परमेष्ठी होते हैं।

प्रश्न 35 – उपाध्याय के बिना आचार्य परमेष्ठी हो सकते हैं ?

उत्तर – हाँ, उपाध्याय बने बिना आचार्य परमेष्ठी भी होते हैं।

प्रश्न 36 – संपूर्ण सूत्र ग्रंथ को धारण करने वाले कौन होते हैं ?

उत्तर – संपूर्ण ग्रंथ के ज्ञ ाता श्रुत केवली होते हैं।

प्रश्न 37 – सूत्र ग्रंथ किसे कहते हैं ?

उत्तर – अंङ्ग ग्रंथों और पूर्व ग्रंथों को सूत्र ग्रंथ कहते हैं।

प्रश्न 38 – श्रुत केवली किसे कहते हैं वह कितने ज्ञान के धारी होते हैं ?

उत्तर – संपूर्ण द्वादश अंङ्ग के पाठी को श्रुतकेवली कहते हैं।
वह 1. मतिज्ञान 2.श्रुतज्ञान 3. अवधि ज्ञान
4. मन: पर्यय ज्ञान। इन चार ज्ञान के धारी होते हैं।

प्रश्न 39 अङ्ग तथा पूर्व के धारी कौनसे परमेष्ठी होते हैं ?

उत्तर – उपाध्याय परमेष्ठी ही सूत्रों के धारी होते हैं।

प्रश्न 40 – जम्बू स्वामी के निर्वाण के पश्चात् कितने श्रुत केवली हुए ?

उत्तर – जम्बू स्वामी के मोक्ष जाने के उपरांत विष्णुमुनि, नांदि मित्र, अपराजित, गोवर्धन तथा भद्रबाहु जी यह पांच साधु परमेष्ठी संपूर्ण श्रुत समूह के पारगामी हुए।

प्रश्न 41 – उपाध्याय जी के पर्यायवाची नाम कौन से हैं ?

उत्तर – उपाध्याय परमेष्ठी को पाठक साधु, उवज्झाय आदि भी कहते हैं।

प्रश्न 42 – उपाध्याय परमेष्ठी के न्यूनतम कितना चारित्र होता है ?

उत्तर – चतुर्थ परमेष्ठी के कम से कम अष्ठ प्रवचन मात्रिका प्रमाण चारित्र होता है।

प्रश्न 43 – उपाध्याय परमेष्ठी के सामान्य से कौन से ध्यान होते हैं ?

उत्तर – उपाध्याय जी के शुक्ल ध्यान,धर्म ध्यान सवं आर्त्तध्यान (रोद्र ध्यान के बिना) तीन ध्यान होते हैं ।

प्रश्न 44 – "स्वाध्याय परमं तप:" यह कितने परमेष्ठियों को होता है।

उत्तर – णमोकार मंत्र के तीनों साधक आचार्य,उपाध्याय एवं साधु) को विशेष रुप से होता है।

प्रश्न 45 – निरंतर धर्मोपदेशएवं शिक्षण प्रशिक्षण किसका कौन कराते हैं ?

उत्तर – हमेशा ज्ञान की आराधना करने वाले उपाध्याय परमेष्ठी होते हैं वह छहद्रव्य, पांच आस्तिकाय, सात तत्व, नव पदार्थ दस धर्म समस्त आगम ग्रंथों का जिसमें निज शुद्ध आत्म द्रव्य ही उपादेय हैं और सब हेय हैं, इसी का प्रशिक्षण कराते हैं।

प्रश्न 46– वर्तमान इस कलिकाल में उपाध्याय परमेष्ठी होते हैं ?

उत्तर – नहीं, इस काल में ग्यारह अङ्ग तथा चौदह पूर्वों के धारक ना होने के कारण सिद्धांत की उपेक्षा से उपाध्याय परमेष्ठी नहीं होते हैं।

प्रश्न 47– उपाध्याय परमेष्ठी वर्तमान काल में क्यों नहीं होते हैं ?

उत्तर – क्योंकि जो मूल (मुख्य) गुण हैं उनका सद्भाव नहीं होने से आज उपाध्याय नहीं होते हैं।

प्रश्न 48 – शास्त्र/ जिनवाणी माता कौन से परमेष्ठी होते हैं ?

उत्तर – आगम शास्त्र जी परमेष्ठी नहीं हैं परन्तु वह नव देवताओं में एक पूज्य देवता हैं।

प्रश्न 49 – कर्म चेतना से सहित कौन से परमेष्ठी होते हैं ?

उत्तर – कर्म चेतना से सहित अंत के तीन परमेष्ठी होते हैं। (आचार्य जी, उपाध्याय जी एवं साधु जी).

प्रश्न 50 – इस जगत में किसका जन्म सफल है?

उत्तर – जिस जीव ने मुक्ति श्री की सुखमयी माता स्वरुप (पाँच समितियाँ एवं तीन गुप्तियां) उत्तम बोधि को प्राप्त किया उन्हीं का जन्म सफलीभूत है।

प्रश्न – सर्वोत्कृष्ठ श्रावक क्षुल्लक जी एलकजी को वंदन अभिवादन करते समय क्या कहें।

उत्तर – सर्वोत्कृष्ट श्रावकों को अभिवादन करते समय भो ! स्वामिन् इच्छामि इच्छामि इच्छामि यह कहना चाहिये।

आचार्य परमेष्ठी

प्रश्न 1 – आचार्य परमेष्ठी कहाँ रहते हैं ?

उत्तर – आचार्य परमेष्ठी जी मुनि परिषद (संघ) के म ध्य में शोभित होते हैं या तीर्थों धर्म के आयतन में रहते हैं।

प्रश्न 2 – क्या आचार्य परीक्षा पास करके उपाधि मिलती है ?

उत्तर – नहीं वे कोई लौकिक परीक्षा नहीं देते परन्तु परमार्थ को प्राप्त कराने वाले हम सब के श्रे ष्ठ गुरु होते हैं ।

प्रश्न 3 – स्कूलों में पढ़ाने वाले प्राचार्य, साहित्याचार्य, गृहस्थाचार्य ये भी परमेष्ठी होते हैं क्या ?

उत्तर – नहीं ये तो कोई परमेष्ठी नहीं होते हैवं ये पदवियों और उपाधियों से सहित होते हैं।

प्रश्न 4 – आचार्यों की पहचान बताईये ?

उत्तर – आचार्य परमेष्ठी वही हैं जो मुनिसंघ का संचालन करके दीक्षा एवं दंड देते हैं तथा पांच सदाचारों से सबको चलाते हैं।

प्रश्न 5 – आचार्य परमेष्ठी व अरिहंत परमेष्ठी में कौन महान होते हैं ?

उत्तर – अरिहंत जी महान होते हैं परन्तु जब अरिहंत जी नहीं होते हैं तो इनकी ही प्रमुख भूमिका होती है।

प्रश्न 6 – आचार्य महान होते हैं कि साधु परमेष्ठी बड़े होते हैं ?

उत्तर – आचार्य महान होते हैं क्योंकि वे ही तो साधु परमेष्ठी को दीक्षा देते हैं तथा मार्गदृष्टा होते हैं ।

प्रश्न 7 – तपोधन आचार्य कौन होते हैं ?

उत्तर – श्रेष्ठ मुनिवर ही तो आचार्य परमेष्ठी होते हैं।

प्रश्न 8 – अरिहंत व आचार्य परमेष्ठी में क्या अंतर है स्पष्ट करो ?

उत्तर – 1. आचार्य परमेष्ठी संपूर्ण कर्मों से सहित तथा छद्मस्थ हैं जबकि अरिहन्त जी घातिया कर्मों से रहित तथा पूर्ण ज्ञानी होते हैं।

प्रश्न 9 – शिष्यों के अ नुग्रह करने में कुशल कौन परमेष्ठी होते हैं ?

उत्तर – शिष्यों के अनुग्रह/कृपा करने में कुशल तपोधन आचार्य परमेष्ठी ही होते हैं ।

प्रश्न 10 – वर्तमान काल के प्रमुख आचार्य कौन कौन से हुए हैं ?

उत्तर – परम् पूज्य गुरुवर 108 आचार्य प्रवर श्री सन्मार्ग दिवाकर संत शिरोमणि श्री विद्यासागर जी, परम् पूज्य 108 श्री परम पूज्य वर्धमान सागर जी, श्री धर्म सागर जी, चारित्र चक्रवर्ती परम् पूज्य आचार्य श्री शांति सागर जी।,

प्रश्न 11 – पूर्वाचार्य कौन कौन से हुये हैं ?

उत्तर – परम् पूज्य 108 आध्यात्म वेत्ता श्री कुंद कुन्दाचार्य जी, दार्शनिक आचार्य श्री समंतभद्र स्वामी जी, आचार्य श्री उमास्वामी जी, आचार्य श्री जिन सेनाचार्य जी, श्री पूज्य पाद आचार्य जी।

प्रश्न 12 – क्या तुम आचार्य बन सकते हो ?

उत्तर – हाँ, हम अवश्य आचार्य बन सकते हैं यदि हम उच्च आचार विचार से चलते हैं तथा देव की आज्ञा को मानते हैं तो दीक्षा उपरांत हम भी आचार्य बन सकते हैं।

प्रश्न 13 – **क्या विदेशों में आचार्य होते हैं ?**

उत्तर – 'नहीं' विदेशों में आचार विचार नहीं होने से आचार्य भी नहीं हैं।

प्रश्न 14 – **आचार्यों से क्या लाभ हैं ?**

उत्तर – आचार्यों से धर्म की परम्परा आगे बढ़ती है। जिन शासन की प्रभावना होती है और आचारों को मुख्य रुप से प्रचार प्रसार होता है।

प्रश्न 15 – **आचार्य परमेष्ठियो के सामान्य रुप कितनेपद होते हैं ?**

उत्तर – आचार्य परमेष्ठी जब आत्म की साधना में लीन रहते हैं तो मुनि /साधु भी हैं एवं जब अपने संघ में शिष्यों को अध्ययन,अध्यापन कराते हैं तो उपाध्याय भी होते हैं।

प्रश्न 16 – **आचार्य परमेष्ठियों के विशेष गुण क्या बताये हैं ?**

उत्तर – आचार्य जी के अ ष्ट प्रवचन मात्रिकायें भी मुख्य गुण बतलाये हैं।

प्रश्न 17 – **अष्ट प्रवचन मात्रिका किसे कहते हैं ?**

उत्तर – पाँच समिति एवं तीन गुप्तियों को अष्ट प्रवचन मात्रिका कहते. हैं।

प्रश्न 18 – **आचार्य परमेष्टि किसे कहते हैं ?**

उत्तर – जो मुनि साधु नायक हों तथा मुनियों को दीक्षा और दंड देते हैं वे आचार्य परमेष्ठी कहलाते हैं।

– जो स्वयं दर्शन ज्ञान चारित्र तप और वीर्य इन पांच आचारों का स्वयं आचरण करते हैं व दूसरे साधुओं से आचरण कराते हैं

– पृथ्वी के समान सहनशील हैं जिन्होंने समुद्र के स मान दोषों को दूर कर दिया ऐसे परमेष्ठी को श्री आचार्य कहते हैं।

प्रश्न 19 – **तृतीय परमेष्टि का आचार्य परमेष्टि नाम क्यों रखा गया है ?**

उत्तर – जो अपने शिष्यों को मुख्य रुप से आचार बताते/सिखाते हैं इसीलिये इन्हें आचार्य कहते हैं।

प्रश्न 20 – **पंचाचार कौन–कौन से होते हैं ?**

उत्तर – 1. ज्ञानाचार 2. दर्शनाचार 3. तपाचार 4. चारित्राचार 5. वीर्याचार। यह पांच आचार होते हैं।

प्रश्न 21 – **ज्ञानाचार किसे कहते हैं ?**

उत्तर – आचार्य (उपाध्याय की कृतज्ञ ता सहित यथा योग्य समय पर)पद व अर्थ की शुद्धि द्वारा जिनागम का अध्ययन करना ज्ञानाचार कहलाता है।

प्रश्न 22 – **दर्शनाचार किसे कहते हैं ?**

उत्तर – निर्मल रुचि सहित परम् श्रृद्धा जो आठों अंग सहित हो उसे दर्शनाचार कहते हैं।

प्रश्न 23 – **तपाचार किसे कहते हैं ?**

उत्तर – इच्छाओं को रोककर अभ्यंतर तथा बहिरंग तपों को धारण करना, तपाचार है।

प्रश्न 24 – **चरित्राचार किसे कहते हैं ?**

उत्तर – हिंसा आदि पापों से निवृत होकर 13 प्रकार का चारित्र योग सहित पालन करना चारित्राचार है।

प्रश्न 25 – **वीर्याचार किसे कहते हैं ?**

उत्तर – अपनी शक्ति न छिपाकर ऊपर कहे हुये आचारों को पालन करना हीं वीर्याचार है।

प्रश्न 26 – आचार्य परमेष्ठी के कितने मूल गुण होते हैं ?

उत्तर – आचार्य परमेष्ठी के 36 मूलगुण होते हैं।

प्रश्न 27 – आचार्य परमेष्ठी के 36 गुण कौन कौन से हैं ?

उत्तर – बारह तप, छह आवश्यक, पंच आचार, दश धर्म, एवं 3 गुप्ति ये 36 मूल गुण होते हैं।

प्रश्न 28 – वह कौनसे आचार्य थे जो विदेश क्षेत्र में तीर्थंकर के समवशरण में गये थे ?

उत्तर – श्री कुंद कुंद जी आचार्य परमेष्ठी थे जो विदेह क्षेत्र के समव शरण में गये थे।

प्रश्न 29 – मानतुंग महाराज और उमास्वामी कौन से परमेष्ठी थे ?

उत्तर – आचार्य परमेष्ठी ही थे।

प्रश्न 30 – आचार्य परमेष्ठी अधिक ज्ञानी होते हैं कि उपाध्याय परमेष्ठी ?

उत्तर – दोनों परमेष्ठियों का अपना अलग अलग कार्य क्षेत्र है फिर भी कह नहीं सकते हैं कि कौन अधिक ज्ञानी हैं क्योंकि उपाध्याय परमेष्ठी ही आचार्य होते हैं।

प्रश्न 31 – आचार्य परमेष्ठी आहार चर्या किस प्रकार से कितने बार करते हैं ?

उत्तर – आचार्य परमेष्ठी आहार चर्या को खड़े होकर के निर्दो ष भोजन पान एक ही बार करते हैं।

प्रश्न 32 – वह कौनसे परमेष्ठी हैं जो स्थिवर कल्पी होते हैं ?

उत्तर – जो मुनि संघ में रहकर दीक्षा शिक्षा तथा उपदेश देते हैं तथा मुनियों के मू लगुणों का पालन करते हैं वे आचार्य परमेष्ठी ही स्थिवर कल्पी होते हैं।

प्रश्न 33 – गणधर परमेष्ठी कौन से परमेष्ठी होते हैं ?

उत्तर – गणधर परमेष्ठी अर्थात 'गण' यानि संघ के 'धर' याने धारण करने वाले आचार्य परमेष्ठी ही होते हैं।

प्रश्न 34 – गणधर परमेष्ठी को कितने ज्ञान होते हैं ?

उत्तर – गणधर परमेष्ठी को मन: पर्यय ज्ञान तक चार ज्ञान तथा द्रव्य से पूर्ण श्रुत के धारी होते हैं।

प्रश्न 35 – गणधर किसे कहते हैं ?

उत्तर – तीर्थंकर के स मवशरण में यति आदिक बारह प्रकार के गणों को जो धारण करते हैं अथवा सर्वज्ञ के द्वारा कहे गये तत्वों को जो ग्रंथ के रु प में जो रचते हैं उन्हें गणधर कहते हैं।

प्रश्न 36 – कितने परमेष्ठी बोधित बुद्ध होते हैं ?

उत्तर – साधु, उपाध्याय तथा आचार्य परमेष्ठी बोधित बुद्ध होते हैं।

प्रश्न 37 – पांच प्रकार के सदाचारों में लीन विशेष रुप से होते हैं ?

उत्तर – आचार्य परमेष्ठी पांच सदाचारों में लीन विशेष रुप से होते हैं।

प्रश्न 38 – जो संसार में भटके अटकों को धर्म से जोड़ते हैं वे कौनसे परमेष्ठी होते हैं ?

उत्तर – वे आचार्य परमेष्ठी ही हैं जो विधर्मी को भी धर्म से जोड़ते हैं।

प्रश्न 39 – चार प्रकार के उपसर्गों को सहन करने वाले कितने परमेष्ठी होते हैं ?

उत्तर – श्री आचार्य जी, श्री उपाध्याय जी तथा साधु जी तीन परमेष्ठी ही चारों प्रकार के उपसर्गों को सहने वाले होते हैं।

प्रश्न 40 — उपसर्ग कितने होते हैं ?

उत्तर — देवकृत,म नुष्यकृत, तिर्यं चकृत तथा प्रकृतिकृत ये चार उपसर्ग होते हैं ।

प्रश्न 41 — आचार्य परमेष्ठी के पर्यायवाची नाम कौनसे हैं ?

उत्तर — सूरि,आचारज गणी,आइरिय आदि आचार्य परमेष्ठी के पर्यायवाची नाम हैं।

प्रश्न 42 — वर्तमान काल में "मूलसंघ" की आम्नाय किस आचार्य श्री के नाम से चल रही है ?

उत्तर — वर्तमान काल में मूलसंघ की आम्नाय में आचार्य श्री कुन्द कुन्द स्वामी जी की परम्परा चल रही है।

प्रश्न 43 — श्रुत भंडार को अपने "चौरासी–पाहुड़" से भरने वाले कौन से आचार्य थे ?

उत्तर — श्रुत भडार को भरने वाले (एवं श्रवण परंपरा को प्राण फूंकने वाले) श्री कुन्द कुन्द आचार्य देव ही थे।

प्रश्न 44 — कुन्दकुन्दाचार्य महाराज के पर्यायवाची नाम बतलाओ?

उत्तर — कुन्दकुन्द स्वामी जी को बक्रग्रीव, गृद्धपिच्छ, आचार्य, एलाचार्य एवं पद्मनन्दि नामों से जानते हैं।

प्रश्न 45 — वर्तमान समय में ऐसे कौन से गुरु हैं जो अपने गुरु महाराज के भी गुरु बने ?

उत्तर — वर्तमान समय में परम् पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी गुरुवर हैं जो अपने गुरु के भी गुरु बने।

प्रश्न 46 — वर्तमान समय में ऐसे कौनसे (मुनिराज)आचार्य परमेष्ठी हैं जिन्होंने अपने गुरुवर की स्वयं सल्लेखना

(समाधि) कराई थी।

उत्तर — ऐसे गुरुवर श्री परम् पूज्य विद्यासागर जी हैं जिन्होंने अपने गुरुवर (ज्ञानसागर आचार्य) की स्वयं ही सल्लेखना (समाधि) कराई थी।

प्रश्न 47 — समाधि कराने वाले जो अनुभवी होते हैं उनको जैन दर्शन में कौनसी संज्ञा दी जाती है ?

उत्तर — समाधि कराने वाले साधक को जैन दर्शन में निर्यापकाचार्य कहते हैं।

प्रश्न 48 — वर्तमान समय में समाधि–सम्राट कौन से (महाराज) आचार्य हैं ?

उत्तर — वर्तमान समय में आचार्य प्रवर श्री 108 विद्यासागर महाराज ही समाधि सम्राट हैं क्योंकि उन्होंने अनेकों साधकों को समाधि /सल्लेखना द्वारा धर्म–ध्यान की साधना से सुमरण कराया है।

प्रश्न 49 — आचार्य परमेष्ठी सहित चतुर्विध संघ का परोक्ष में स्मरण करना कौनसा ध्यान है ?

उत्तर — आचार्य भक्ति में विराजित चतुर्विध संघ का ध्यान रुपस्थ–ध्यान कहलाता है।

प्रश्न 50 — परम पद के धारक साधुओं को विशेष रुप से कौन संस्कार देते हैं ?

उत्तर — परम पद के धारक मुनिवरों को इस काल में आचार्य परमेष्ठी ही दीक्षा–शिक्षा/दण्ड से संस्कारित करते हैं।

प्रश्न 51 — अप्रहृत संयम नामक सराग चारित्र के धारक कितने परमेष्ठी होते हैं ?

उत्तर — जो तेरह प्रकार के चारित्र को धारण करते हैं वह श्री आचार्य

जी उपाध्याय एवं साधु परमेष्ठी ही अप्रहत नामक सराग चारित्र के धारी होते हैं।

प्रश्न 52 – स्वयं के दोषों को शांत करने वाले आज कितने परमेष्ठी होते हैं ?

उत्तर – वर्तमान समय में स्वयं के दोषों को शांत करने का पुरुषार्थ करने वाले (आचार्य जी, उपाध्याय जी एवं साधु जी) यह तीन परमेष्ठी होते हैं।

अरिहंत परमेष्ठी

प्रश्न 1 – णमोकार मंत्र का प्रथम पद कौन सा है उसका अर्थ क्या है ?

उत्तर – णमो "अरिहंताण" है जिसका अर्थ है लोक के सभी अरहन्तों को नमस्कार हो।

प्रश्न 2 – इस पद में कितने अक्षर होते है ?

उत्तर – इस प्रथम पद में सात अक्षर होते हैं।

प्रश्न 3 – परम आप्त/शास्ता कौन होते हैं ?

उत्तर – परम आप्त अरिहंत परमेष्ठी ही होते हैं।

प्रश्न 4 – अरिहंत परमेष्ठी का विशेष अर्थ कौन सा हैं ?

उत्तर – जिन्होंने घातिया कर्मों को नष्ट कर अनंत चतुष्टय को प्राप्त कर लिया है तथा जो वीतरागी सर्वज्ञ हितोपदेशी हो उन्हें अरिहंत कहते हैं।

प्रश्न 5 – अरिहंत परमेष्ठी का विशेष अर्थ कौन सा हैं ?

उत्तर – (क) "अरि अर्थात् शत्रु, (मोहनीय) "रज" अर्थात् धूल (ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी) रहस्य /गुप्त (अन्तराय) ये घातिया कर्मों से रहित होते हैं।

(ख) जो सभी प्रकार के दोषों से रहित हैं जिन्होंने अपनी इन्द्रियों को जीत लिया है।

प्रश्न 6 – महामंत्र में प्रथम परमेष्ठी कौन से हैं ?

उत्तर – णमोकार मंत्र में प्रथम परमेष्ठी अरिहंत हैं।

प्रश्न 7 – णमोकार मंत्र के द्वितीय पद में सिद्धों को क्यों स्थान दिया गया हैं ?

उत्तर – अरिहंत जी ने संसारी जीवों को धर्मोपदेश द्वारा उपकार

किया एवं तत्वों को बताया इसलिए अरिहंतों के उपरांत सिद्धों को स्थान दिया गया चूंकि वे बोलते नहीं है, इमें कुछ भी देते नहीं /उपकारी नहीं हैं।

प्रश्न 8 – अरिहंत कैसे होते हैं ?

उत्तर – अरिहंत परमेष्ठी शरीर सहित होते हैं।

प्रश्न 9 – अरिहंतों की मुद्रा कैसी होती हैं ?

उत्तर – अरिहंत की मुद्रा नग्न होती है तथा जो विकारों से रहित होते हैं।

प्रश्न 10 – वे कौन से परमेष्ठी जिनके आगे –आगे धर्म चक्र चलता रहता हैं ?

उत्तर – अरिहंत परमेष्ठी (तीर्थंकर) के आगे धर्म चक्र चलता है।

प्रश्न 11 – अरिहंत परमेष्ठी के आगे–आगे धर्मचक्र कब चलता हैं ?

उत्तर – केवलज्ञान होने के पश्चात् अरिहंत परमेष्ठी के धर्मचक्र चलता है।

प्रश्न 12 – धर्मचक्र को चलाने वाले कौन होते हैं तथा वह कितना बड़ा होता हैं ?

उत्तर – धर्मचक्र को देव चलाते हैं जिसमें एक हजार आरे होते हैं जो सूर्य के समान तेजस्वी होता है।

प्रश्न 13 – धर्मतीर्थ के प्रवर्तक कौन से परमेष्ठी होते हैं ?

उत्तर – धर्मतीर्थ के प्रवर्तक तीर्थकर (अरिहंत) होते हैं ।

प्रश्न 14 – तीर्थकर किन्हें कहते हैं ?

उत्तर – (क) जो धर्म तीर्थ को चलाते हैं उन्हें तीर्थंकर कहते हैं जो संसार रुपी समुद्र को स्वयं पार करते हैं तथा अनेक भव्य

जीवों को पार कराते हैं जो तीनों लोकों में पूज्य होते हैं।

(ख) जिनके दो,तीन अथवा पांच कल्याणक होते हैं। जिनका नियम से समवसरण होता है, जिनका महान् पुण्य होता है जो आठ प्रातिहार्य से सहित होते हैं।

प्रश्न 15 – तीर्थंकरों का जन्म कहां होता हैं ?

उत्तर – तीर्थकरों का जन्म 15 कर्मभूमियों में होता है।

प्रश्न 16 – तीर्थंकर किन द्वीपों में होते हैं।

उत्तर – तीर्थंकर जम्बूद्वीप,धातकीखण्ड द्वीप,अर्द्धपुष्करवर इन अढ़ाई द्वीप में होते है।

प्रश्न 17 – तीर्थंकर किन क्षेत्रों में होते हैं ?

उत्तर – भरत,ऐरावत क्षेत्र एवं विदेह क्षेत्र में तीर्थंकर होते हैं।

प्रश्न 18 – जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में तीर्थंकर कब होते हैं ?

उत्तर – जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में "दुखमा–सुखमा" नामक चतुर्थ काल में होते हैं। (जब दुख अधिक सुख कम होता है)

प्रश्न 19 – भरत क्षेत्र के किस खण्ड में तीर्थंकर होते हैं ?

उत्तर – भरत क्षेत्र के आर्यखण्ड में ही तीर्थंकर होते हैं।

प्रश्न 20 – तीर्थंकर एक साथ में अधिक से अधिक कितने हो सकते हैं ?

उत्तर – एक समय में एक साथ 170 तीर्थंकर हो सकते है।

प्रश्न 21 – विदेह क्षेत्र में एक समय में अधिक से अधिक कितने तीर्थंकर हो सकते हैं ?

उत्तर – पाँच महाविदेहों की प्रत्येक विदेहों की बत्तीस महानगरियों के हिसाब से (32×5) =160 (एक सौ साठ) तीर्थंकर एक समय में हो सकते हैं।

प्रश्न 22 – विदेह क्षेत्र में कम से कम कितने तीर्थंकर होते हैं ?

उत्तर – विदेह क्षेत्र में पाँचों विदेहों में कम से कम (5× 4)=20 (बीस) तीर्थंकर होते है।

प्रश्न 23 – वह कौन सा क्षेत्र हैं जहां पर हमेशा तीर्थंकर विद्यमान रहते हैं ?

उत्तर – विदेह क्षेत्र में हमेशा तीर्थंकर विद्यमान रहतते हैं।

प्रश्न 24 – विदेह क्षेत्र में हमेशा तीर्थंकर क्यों विद्यमान रहते हैं ?

उत्तर – क्योंकि वहां पर हमेशा कर्मों को नष्ट करने वाला "सुखमा–दुखमा" नामक चतुर्थ काल रहता है।

प्रश्न 25 – विदेह क्षेत्र में मनुष्यों के शरीर की ऊँचाई कितनी होती हैं ?

उत्तर – विदेह क्षेत्र में मनुष्यों की ऊँचाई 500 धनुष की होती हैं।

प्रश्न 26 – वर्तमान काल में जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में तीर्थंकर होते हैं ?

उत्तर – जम्बूद्वीप में वर्तमान काल में कोई तीर्थंकर नहीं होते।

प्रश्न 27 – अमेरिका आदि विदेशों में क्या तीर्थंकर (अरिहंत) होते हैं ?

उत्तर – नहीं वहां पर तीर्थंकर नहीं होते क्योंकि वह भी भरत क्षेत्र में ही आता है।

प्रश्न 28 – इस जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र के चतुर्थकाल में कितने तीर्थंकर हुये थे?

उत्तर – भरत क्षेत्र के चतुर्थकाल में 23 तीर्थंकर हुये तथा प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ तीसरे काल में हुए और मोक्ष भी तीसरे काल में ही गये थे।

प्रश्न 29 – संपूर्ण ढाई द्वीप में कितनी त्रिकालवर्ती चौबीसी पाई जाती हैं ?

उत्तर – पूर्ण ढाई द्वीप में तीनों काल संबंधी 720 तीर्थंकर (अरहंत) होते हैं।

प्रश्न 30 – अरिहंतों की पहचान क्या है ?

उत्तर – जो समस्त अठारह दोषों से रहित हैं, जिन्हें भूख, प्यास, मरण आदि नहीं होते एवं वीतरागी होते हैं वे अरिहंत हैं।

प्रश्न 31 – कृत्रि म जिनालयों में विराजमान प्रतिमायें किनकी हैं ?

उत्तर – कृत्रि म मंदिर जी में विराजमान प्रतिमायें तीर्थंकर (अरिहंतों) की हैं।

प्रश्न 32 – अरिहंत की प्रतिमायें कैसी होती हैं ?

उत्तर – अरिहंत की प्रतिमायें वीतरागी, प्रशांत मुद्रा नाशाग्र दृष्टि सहित दिगम्बर होती हैं।

प्रश्न 33 – दिगम्बर किसे कहते हैं ?

उत्तर – दिशायें ही जिसके अ म्बर (वस्त्र) हैं उन्हें दिगम्बर कहते हैं।

प्रश्न 34 – क्या महिलायें अरिहंत हो सकती हैं ?

उत्तर – नहीं, क्योंकि स्त्री पर्याय से अरिहंत नहीं हो सकती है।

प्रश्न 35 – तीर्थंकर की प्रतिमा को हम कैसे पहचानेंगे ?

उत्तर – जिनके अ ाठ प्रातिहार्य हों, जिनके चिन्ह (पहचान) अंकित हो वे प्रतिमायें तीर्थंकरों की होती हैं।

प्रश्न 36 – बिना तीर्थंकर बने अरिहंत होते हैं क्या ?

उत्तर – हां, बिना तीर्थंकर प्रकृति भी सामान्य केवली भगवान अरिहंत होते हैं।

प्रश्न 37 — भूतकाल में कितने तीर्थंकर इस क्षेत्र में हुये थे ?

उत्तर — भूतकाल में अनंत तीर्थंकर इस क्षेत्र में हुये ।

प्रश्न 38 — भविष्य काल में कितने तीर्थंकर होंगे । ?

उत्तर — भविष्यकाल में भी अनंत तीर्थकर होंगे।

प्रश्न 39 — भविष्य काल में इस क्षेत्र में कितने तीर्थंकर होंगे ?

उत्तर — भविष्य काल में इस क्षेत्र में क्रमशः 24 तीर्थंकर होंगे।

प्रश्न 40 — क्या भरत क्षेत्र 24 तीर्थंकर एक साथ होते हैं ?

उत्तर — नहीं, भरत क्षेत्र में क्रमशः 24 तीर्थंकर होते हैं।

प्रश्न 41 — अरिहंत परमेष्ठी को कितने नामों से जानते हैं ?

उत्तर — अरिहंत परमेष्ठी को अरुहंत. अर्हंत, जितेन्द्रदेव, सर्वज्ञ जिनदेव, केवली, देवाधिदेव, आप्त इत्यादि नामों से जानते हैं।

प्रश्न 42 — अरिहंत परमेष्ठी के कितने मूल गुण होते हैं ?

उत्तर — अरिहंत परमेष्ठी 46 मूल गुण होते हैं।

प्रश्न 43 — अकृत्रिम जिनालयों में किसकी मूर्तियां होती हैं ?

उत्तर — अकृत्रि म जिनालयों में अरिहंत (तीर्थंकरों) की रत्नमयी प्रतिमायें होती हैं।

प्रश्न 44 — अकृत्रि म जिनालयों में किस प्रकार से अरिहंत की प्रतिमायें होती हैं ?

उत्तर — अष्ट प्रातिहार्य से सहित प्रतिमायें रहती हैं।

प्रश्न 45 — प्रातिहार्य किसे कहते हैं ?

उत्तर — विशेष महिमा बोधक चिन्ह हो प्रातिहार्य कहते हैं।

प्रश्न 46 — अष्ट प्रातिहार्य कौन–कौन से हैं ?

उत्तर — (1) अशोक वृक्ष (2) सिंहासन (3) श्वेत छत्रत्रय (4) चंवर (5) भामण्डल (6) पुष्पवृष्टि

(7) दुदंभिनिनाद (8) मनोहर दिव्यध्वनि खिरना

प्रश्न — अरिहंत परमेष्ठी के 46 मूल गुण कौन से कितने होते हैं ?

उत्तर — अरिहंत परमेष्ठी के 10 जन्म के अतिशय, 10 केवलज्ञान के 14 देवकृत अतिशय, 4 अनन्त चतुष्टय (10 +10+14+8 +4=46) ये छयालीस मूलगुण होते हैं ।

प्रश्न 47 — अरिहंत परमेष्ठी को किस प्रकार का सुख होता हैं ?

उत्तर — अरिहंत परमेष्ठी के स्वाभाविक इन्द्रियातीत आकुलता रहित सुख होता है।

प्रश्न 48 — अरिहंत भगवान का शरीर कैसा होता हैं ?

उत्तर — अरिहंत परमेष्ठी का शरीर परमौदारिक बादर निगोदिया जीवों से रहित होता है।

प्रश्न 49 — अरिहंत परमेष्ठी का शरीर परम क्यों कहा हैं ?

उत्तर — क्योंकि वह सामान्य मनुष्य की तरह अपने शरीर को अंलकृत व पुष्ट करने के लिए संस्कारित नहीं करते तथा आयु कर्म के होने तक उनका शरीर सर्वश्रेष्ठ बना रहता है।

प्रश्न 50 — मनुष्य का शरीर औदारिक क्यों कहलाता हैं ?

उत्तर — मनुष्य यदि शरीर से धर्म पुरुषार्थ करे तो मोक्ष के द्वार को भी खोल सकता है इस प्रकार के महान उदार होने से इस शरीर को औदारिक शरीर कहते हैं ।

प्रश्न 51 — अरिहंत (तीर्थंकर) के शरीर का रक्त कैसा होता हैं ?

उत्तर — अरिहंत परमेष्ठी के सातिशय शरीर का रक्त श्वेत वर्ण का होता है जिनका वैज्ञानिक कारण है उनके हृदय में प्रत्येक जीवों के प्रति करुणा भाव होता है जिससे उनके रक्त की लालिमा नष्ट हो जाती है।

प्रश्न 52 – तीर्थंकर नामकर्म प्रकृति का आस्रव किनके सानिध्य में होता हैं ?

उत्तर – तीर्थंकर नाम–कर्म का आस्रव केवली तथा श्रुत केवली के पाद मूल में गृहस्थ और संयमी अवस्था में सम्यग्दर्शन के साथ होता है।

प्रश्न 53 – तीर्थंकर प्रकृति का बंध कैसी भावना भाने से होता हैं?

उत्तर – तीर्थंकर प्रकृति का बंध सोलह ग्रहण कारण भावना भाने से होता है।

प्रश्न 54 – अरिहन्त परमेष्ठी को विदेह क्यों कहते हैं?

उत्तर – क्योंकि यह विशेष रुप से देह को छोड़ कर के पु न: जन्म नहीं लेते इसलिए अरिहन्त परमेष्ठी को विदेह कहते हैं।

प्रश्न 55 – कितने परमेष्ठी निराहारी होते हैं ?

उत्तर – अरिहंत तथा सिद्ध परमेष्ठी निराहारी होते हैं।

प्रश्न 56 – कर्म सहित अरिहन्त परमेष्ठी को मुक्त क्यों कहते हैं?

उत्तर – जीवन मरण के बन्धनों से मुक्त होने के कारण अरिहन्त परमेष्ठी का पुर्न जन्म नहीं होता इसलिए जीवन मुक्त कहते हैं।

प्रश्न 57 – अरिहंत परमेष्ठी कितने गुणों से सहित होते हैं ?

उत्तर – अरिहंत परमेष्ठी अनन्त गुणों से सहित होते हैं।

प्रश्न 58 – क्या अरिहन्त परमेष्ठी आहार करते हैं ?

उत्तर – नहीं,अरिहन्त परमेष्ठी आहार नहीं करते।

प्रश्न 59 – अरिहन्त परमेष्ठी आहार नहीं करते फिर ! उनका शरीर हजारों वर्षों तक कैसे बना रहता है ?

उत्तर – अरिहंत परमेष्ठी के साता वेदनीय के रहने से विशुद्ध विशुद्धतम परमाणुओं से तथा नो कर्म आहार से उनका शरीर असंख्यात

वर्ष तक बना रहता है।

प्रश्न 60 – अरिहंत भगवान की वाणी से किस प्रकार का धर्मामृत मिलता है ?

उत्तर – अरिहंत भगवान की वाणी से चार पुरुषार्थ एवं सात तत्वों का विवेचन मिलता है।

प्रश्न 61 – चार पुरुषार्थ एवं सात तत्व कौन से हैं ?

उत्तर – (1) धर्म पुरुषार्थ (2) अर्थ पुरुषार्थ (3) काम पुरुषार्थ (4) मोक्ष पुरुषार्थ सात तत्व (1) जीव (2) अजीव (3) आस्रव (4) बन्ध (5) संवर (6) निर्जरा एवं (7) मोक्ष।

प्रश्न 62 – जीव को मोक्ष की प्राप्ति किस पुरुषार्थ एवं तत्वों से होती हैं ?

उत्तर – जीव को धर्म पुरुषार्थ द्वारा एवं संवर निर्जरा तत्वों से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

प्रश्न 63 – धर्म पुरुषार्थ किसे कहते हैं ?

उत्तर – आर्त रौद्र परिणामों से बचने के प्रयास को धर्म पुरुषार्थ कहते हैं।

प्रश्न 64 – तत्व किस कहते हैं ?

उत्तर – वस्तु के भाव को तत्व कहते हैं।

प्रश्न 65 – संवर तत्व किसे कहते हैं ?

उत्तर – कर्मों के आगमन को रोक देना संवर तत्व है।

प्रश्न 66 – निर्जरा तत्व किसे कहते हैं ?

उत्तर – जो कर्म पूर्व में आत्मा से मिल गये थे उनको व्रत जब द्वारा ध्यान रुपी अग्नि से जला देना ही निर्जरा हैं।

प्रश्न 67 – निर्जरा कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर – निर्जरा तत्व दो प्रकार के होते हैं –

1. सविपाक निर्जरा 2. अविपाक निर्जरा

प्रश्न 68 – **सविपाक निर्जरा किसे कहते हैं ?**

उत्तर – फल देकर कर्मों का एकदेश झड़ जाने को सविपाक निर्जरा कहते हैं।

प्रश्न 69 – **अविपाक निर्जरा किसे कहते हैं ?**

उत्तर – व्रतों तथा तपों के माध्यम से बंधे हुये कर्मों का अवधि सीमा के पहले एकदेश आत्मप्रदेशों से अलग होने को अविपाक निर्जरा किसे कहते हैं ?

प्रश्न 70 – **किन परमेष्ठी के च लते समय देवगण स्वर्ण कमलों की रचना करते हैं।**

उत्तर – तीर्थंकर (अरिहंत जी)परमेष्ठि के च लते समय देवतागण स्वर्ग युक्त कमलों की रचना करते जाते हैं।

प्रश्न 71 – **अरिहंत सिद्ध तो भगवान हैं परंतु अन्य परमेष्ठि भगवान नहीं हैं फिर उन्हें नमन क्यों करते हैं ?**

उत्तर – कारण में कार्य का उपचार करके स ाधु परमेष्ठी ही तो भगवान होते हैं इसलिये अन्य परमेष्ठी को भी नमन/वंद –नादिक करते हैं।

प्रश्न 72 – **अरिहंत जी को किस कर्म के क्षय होने पर (केवलज्ञान) क्षायिक ज्ञान की उपलब्धि होती है ?**

उत्तर – अरिहंत (तीर्थं कर) को ज्ञानवरणी कर्म के क्षय से क्षायिक ज्ञान प्राप्त होता है।

प्रश्न 73 – **अरिहंत जी को क्षायिक दर्शन किस कर्म के क्षय से प्राप्त होता हैं ?**

उत्तर – अरिहंत जी को दर्शनावरणी कर्म के क्षय से क्षायिक दर्शन की प्राप्ति होती है।

प्रश्न 74 – **अरिहंत जी को क्षायिक सम्यक्त्व किस कर्म के क्षय से प्राप्त होता है ?**

उत्तर – अरिहंत जी को अनन्तानुबंधी क्रोध,माया, लोभ तथा मिथ्यात्व सम्यग्मिथ्यात्व और सम्यक्त्व प्रकृति इन सात प्रकृति के नाश होने से क्षायिक सम्यक्त्व की प्राप्ति होती है।

प्रश्न 75 – **अरिहंत जी के किस कर्म के क्षय से क्षायिक चारित्र की प्राप्ति होती है ?**

उत्तर – चारित्र मोहनीय कर्म के क्षय से क्षायिक चरित्र की प्राप्ति होती है

प्रश्न 76 – **अरिहंत जी को क्षायिक बल की प्राप्ति किस कर्म के नाश होने से होती है ?**

उत्तर – अरिहंत जी को वीर्यान्तिराय कर्म के नाश होने से अनंतवीर्य की प्राप्ति होती है।

प्रश्न 77 – **अरिहंत जी को अनंत जीवों का उपकार करने वाले क्षायिक दान की शक्ति किस माध्यम से मिलतीहै ?**

उत्तर – अरिहंत भगवान को दानात्तराय कर्म का नाश होने से अनंत दान की प्राप्ति होती है।

प्रश्न 78 – **अरिहंत जी को किसके क्षय होने से अनंत लाभ की प्राप्ति होती है ?**

उत्तर – अरिहंत जी को लाभान्तराय कर्म के क्षय से अनंत लाभ की प्राप्ति होती है।

प्रश्न 79 – अर्हन्त भगवान को क्षायिक भोग की प्राप्ति किस कर्म के क्षय से प्राप्त होती है।

उत्तर – अर्हन्त भगवान को भोगान्तराय कर्म के क्षय से क्षायिक भोग की प्राप्ति होती है।

प्रश्न 80 – अर्हन्त भगवान को क्षायिक उपभोग लब्धि किस कर्म के क्षय से प्राप्त होती है ?

उत्तर – समवशरण में विराजमान अर्हंत जी को क्षायिक उपभोग की प्राप्ति उपभोगान्तराय कर्म के क्षय से प्राप्त होती है ?

प्रश्न 81 – क्षायिक उपभोग के माध्यम से समवशरण में स्थित भगवान किस पुण्य का उपभोग करते हैं ?

उत्तर – समवशरण में विराजमान तीर्थंकर अष्ट प्रातिहार्य रुप सातिशय पुण्य का उपभोग करते हैं।

प्रश्न 82 – वीतरागी किसे कहते हैं ?

उत्तर – वीत गया है राग (मोह) अर्थात् अनुराग भाव नष्ट हो गया है उन्हें वीतरागी कहते हैं।

प्रश्न 83 – सर्वज्ञ किसे कहते हैं ?

उत्तर – जो सर्व के ज्ञाता (त्रिकालदर्शी) होवे ऐसे तीन लोक के ज्ञाता को सर्वज्ञ कहते हैं।

प्रश्न 84 – हितोपदेश किसे कहते हैं ?

उत्तर – जो संसार के प्राणियों को नि:स्वार्थ भाव से उनके हित (कल्याण)का उपदेश देते हैं, उन्हें हितोपदेशी कहते हैं।

प्रश्न 85 – अरिहंत परमेष्ठी को धातीया कर्मों का नाश करने से कौनसे गुणों की प्राप्ति होती है?

उत्तर – अरिहंत परमेष्ठी को धातिया कर्मों का नाश करने से अनंत

चतुष्टय की प्राप्ति होती है।

1.ज्ञानावर्णी के न ाश से – अनंत ज्ञान।

2.दर्शनावर्णी कर्म के अभाव से – अनंत ज्ञान।

3.मोहनीय कर्म के अभाव से–अनंत सुख।

(सम्यम्त्व)

4.अंतराय कर्म के अभाव से –अनंत वीर्य गुण प्रगट होता है।

प्रश्न 86 – कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर – क. जो आत्मा के सही स्वभाव को प्रगट नहीं होने देता,उसे कर्म कहते हैं।

ख. जीवों के प रिणामों द्वारा जो कार्य किया जाये एवं जो आत्मा को पराधीन करे उसे कर्म कहते हैं।

प्रश्न 87 – कर्म के कितने भेद हैं ?

उत्तर – कर्म के मुख्यत: दो भेद हैं –1. घातिया कर्म 2.अघातिया कर्म (वैसे कर्म के अनेक भेद हैं)

प्रश्न 88 – घातिया कर्म किसे कहते हैं व कितने प्रकार के होते हैं

उत्तर – जो जीव के अ नुजीवी (जीव के आश्रित)गुणों का घात करें उन्हें घातिया कर्म कहते हैं। उसके च ार भेद होते हैं –

1. ज्ञानावर्णी 2. दर्शनावर्णी 3. मोहनीय 4. अन्तराय.

प्रश्न 89 – अघातिया कर्म किसे कहते हैं व कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर – जो जीव के प्रतिजीवी गुणों का घात करते हैं उन्हें अघातिया कर्म कहते हैं। अघातिया कर्म 4 प्रकार के होते हैं –आयु कर्म,गोत्र कर्म,नाम कर्म एवं वेदनीय कर्म।

प्रश्न 90 – ज्ञानावरर्णी कर्म किसे कहते हैं,उसका फल क्या होता है?

उत्तर – जो आत्मा के गुणों को दबाकर रखे उसे ज्ञानावर्णी कर्म कहते हैं जिसके उ दय से जीव को ज्ञान नहीं हो पाता है।

प्रश्न 91 – दर्शनावरणी कर्म किसे कहते हैं?एवं इसका परिणाम क्या है ?

उत्तर – जो आत्मा के दर्शनगुण को दबाकर रखे उसे दर्शनावरणी कर्म कहते हैं जिसके उ दय से वस्तुस्थिति का दर्शन नहीं हो पाता है

प्रश्न 92 – मोहनीय कर्म किसे कहते हैं एवं इसका परिणाम क्या है ?

उत्तर – जो आत्मा की सच्ची श्रृद्धा एवं आचरण को दबाकर रखे उसे मोहनीय कर्म कहते हैं।इसके उ दय से जीव को सम्यक्तव एवं, चरित्र नहीं हो पाता।

प्रश्न 93 – अन्तराय कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर – जो कर्म,दान,लाभ,भोग,उपभोग तथा शक्ति के साधनों में विघ्न डालता है उसे अंतराय कर्म कहते हैं इसके उ दय से जीव दान आदिक नहीं कर पाता है।

प्रश्न 94 – नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर – इसके उ दय से जीव के शरीर के अंग,उपांग की रचना होती है उसे नाम कर्म कहते हैं ।

प्रश्न 95 – गोत्र कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर – जिस कर्म के उदय से जीव उच्च,नीच कुल में जन्म लेता है उसे गोत्र कर्म कहते हैं।

प्रश्न 96– वेदनीय कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर – जिस कर्म के उदय से आत्मा को सुख–दुख होते हैं उसे वेदनीय कर्म कहते हैं।

प्रश्न 97 – आयु कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर – जो जीव को चारों गतियों में से किसी एक शरीर में निश्चित समय तक रोके रखता है उसे आयु कर्म कहते हैं।

प्रश्न 98– ऊपर लिखे आठों कर्मों के कितने उपभेद होते हैं ?

उत्तर – ज्ञानावरणी के पांच,दर्शनावरणी के नौ,मोहनीय के अठाईस, अंतराय के पांच,वेदनीय के दो,नाम–कर्म तेरानवे,गोत्र कर्म के दो, आयु के चार, इस प्रकार कर्मों के 148 उत्तर भेद होते हैं।

प्रश्न 99– अभी तक कितने तीर्थंकर इस पृथ्वी पर हो गये हैं ?

उत्तर – इस भू लोक में अनंत तीर्थंकर हो गये हैं।

प्रश्न 100– वह कितने परमेष्ठी हैं जो अनियत आहार तथा विहार करते हैं ?

उत्तर – सिद्ध परमात्मा को छोड़कर समस्त परमेष्ठियों का अनियत विहार होता हे इसलिए उन्हें अतिथि कहते हैं।

प्रश्न 101– काल कितने होते हैं ?

उत्तर – इस क्षेत्र में मुख्यत: दो काल होते हैं – 1.उत्सर्पिणी 2.अवसर्पिणी और प्रत्येक के 6 –6 भाग होते हैं।

प्रश्न 102– उत्सर्पिणी काल किसे कहते हैं ?

उत्तर – जिस काल में बल आयु ऊँचाई सुख(अनुभव) आदि की वृद्धि होती है उसे उत्सर्पिणी काल कहते हैं।

प्रश्न 103– अवसर्पिणी काल किसे कहते हैं?

उत्तर – जिस काल में शरीर की आयु,बल,ऊँचाई,धर्म आदिक हीन दशा को प्राप्त होते हैं उसे अवसर्पिणी काल कहते हैं।

प्रश्न 104– इसके अतिरिक्त और कौनसा काल होता है ?

उत्तर – इसके अतिरिक्त हुण्डावसर्पिणी काल होता है।

प्रश्न 105– वर्तमान में इस क्षेत्र में कौनसा काल चल रहा है ?

उत्तर – इस जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में वर्तमान में हुण्डावसर्पिणी काल चल रहा है।

प्रश्न 106– हुण्डावसर्पिणी काल किसे कहते हैं तथा वह कब आता है ?

उत्तर – असंख्यात उत्सर्पिणी तथा अवसर्पिणी काल व्यतीत होने पर, यह काल आता है जिसमें अनेक अनहोनी घटनाएं घटती रहती हैं।

प्रश्न 107– हुण्डावसर्पिणी काल की क्या विशेषताएं हैं ?

उत्तर – हुण्डावसर्पिणी काल में अनेक अनहोनी घटनाएं घटती रहती हैं जैसे –

1. तृतीय काल में प्रथम तीर्थंकर का जन्म होना तथा उसी से मुक्त भी होना।
2. तीर्थंकर के कन्या का जन्म होना।
3. तीर्थंकर को लंबे काल तक मुनि–दशा में आहार नहीं मिलना।
4. तीर्थंकर द्वारा की गई वर्ण व्यवस्था में सुधार होना।
5. कुछ तीर्थंकरों का भिन्न भिन्न स्थानों से जन्म होना व मोक्ष होना।
6. चक्रवर्ती की कामदेव से हार होना।
7. समवशरण में विराजमान तीर्थंकर की दिव्य ध्वनि लंबे समय तक न खिरना।
8. शलाका पुरुषों की संख्या में कमी आना।
9. प्रथम चक्रवर्ती का अपने वंश के भाई तद्भव मोक्षगामी जीव पर चक्र का प्रहार करना।
10. कुछ तीर्थंकरों पर मुनि अवस्था में उपसर्ग होना।
11. तृतीय काल में भोग भूमि होते हुए कल्पवृक्षों का लोप होना।
12. महापुरुष बलभद्र रामचंद्र जी को पत्नि की दीक्षा के बाद वैराग्य होना।
13. चतुर्थ काल में 23 ही तीर्थंकरों का होना।
14. कुछ तीर्थंकरों का बाल वैरागी (ब्रह्मचारी) होना।
15. पंचम काल में भी मोक्ष हो जाना।

प्रश्न 108– तीर्थंकर किनके पुत्र होते हैं ?

उत्तर – तीर्थंकर महान कुल के राजा के इकलौते पुत्र होते हैं।,

प्रश्न 109– तीर्थंकर माता का दूध पीते हैं ?

उत्तर – तीर्थंकर माता का दूध नहीं पीते हैं।,

प्रश्न 110– तीर्थंकर क्या आहार लेते हैं ?

उत्तर – तीर्थंकर बाल्यकाल में आहार लेते हैं तथा उनके आहार और वस्त्र स्वर्ग से इंद्र लाते हैं।

प्रश्न 111– तीर्थंकरों का बालपने से कैसा आचरण होता है ?

उत्तर – तीर्थंकर बचपन से देश संयमी की तरह आचरण होता है।

प्रश्न 112– तीर्थंकर की काया कैसी होती है ?

उत्तर –
1. तीर्थंकर वज्रवृषभनाराच संहनन के धारी होते हैं।
2. तीर्थंकर के शरीर से उत्तम सुगंधि उठती है।
3. तीर्थंकर के शरीर में अनंत बल होता है।
4. तीर्थंकर की काया पसीना,मलमूल व निहार नहीं होता है।
5. तीर्थंकरों के नख केश नहीं बढ़ते।
6. तीर्थंकरों की दाड़ी मूछ नहीं होती।

प्रश्न 113 – तीर्थंकरों के गुरु कौन होते हैं ?

उत्तर – तीर्थंकरों के को ई भी गुरु नहीं होते हैं वे जन्म से ही तीन ज्ञान के धारी होते हैं (मति,श्रुत,अवधि) एवं स्वयं ही अपने गुरु होते हैं।

प्रश्न 114 – तीर्थंकर देश संयमी कब होते हैं ?

उत्तर – तीर्थंकर 8 वर्ष की आयु के उ परांत देशसंयमी हो जाते हैं.।

प्रश्न 115 – भव रुपी आताप की वेदना नष्ट करने वाले कौन हैं ?

उत्तर – भवसागर की वेदना को नष्ट करने वाले तीर्थंकर ही(अरिहंत) थे।

प्रश्न 116 – दीक्षा के उपरांत तीर्थंकरों को प्रथम आहारदान का क्या महत्व है ?

उत्तर – प्रथम आहार दान कराने वाले जीव नियम से मोक्षगामी होता है।

प्रश्न 117 – केवल ज्ञान होने के बाद तीर्थंकरों की वाणी कितने समय तक खिरती है ?

उत्तर – तीर्थकरों की वाणी चार कालों में छह छह घड़ी (2घंटे 24 मिनिट) तक खिरती है।

प्रश्न 118 – तीर्थंकर की वाणी की क्या विशेषता है ?

उत्तर – तीर्थंकरों की वाणी असंख्य जन्मों के पापों को धोने वाली होती है।

प्रश्न 119 – तीर्थंकरों की वाणी कहां तक सुनाई देती है ?

उत्तर – तीर्थंकरों की वाणी मागध देव विक्रिया से योजनों तक फलाते हैं अत: योजनों तक सुनाई देती है।

प्रश्न 120 – तीर्थंकर की दिव्य ध्वनि (वाणी) की भाषा कौनसी होती है ?

उत्तर – तीर्थंकर की वाणी ओंकारमय निरक्षरी होती है जो सभी जीव अपनी अपनी भाषा में समझ जाते हैं (मानव,पशु,पक्षी,देवता)

प्रश्न 121 – क्या तीर्थंकरों की वाणी बहरे व्यक्ति भी सुन सकते हैं?

उत्तर – हां सुन सकते हैं (उनके कानों में भी सुनने की क्षमता आ जाती है।)

प्रश्न 122 – केवल ज्ञान के पश्चात् तीर्थंकरों पर उपसर्ग होते हैं ?

उत्तर – नहीं, उपसर्ग केवल ज्ञान के पूर्व होते हैं बाद में नहीं होते हैं।

प्रश्न 123 – समवशरण में तीर्थंकरों के सिंहासन की स्थिति किस तरह होती है?

उत्तर – समवशरण में तीर्थंकर का सिंहासन जमीन से पांच हजार धनुष ऊपर ऊँचा (अंतरिक्ष) में रहता है।

प्रश्न 124 – तीर्थंकर के विहार के समय कौन–कौन से आश्चर्य होते हैं ?

उत्तर –
1. जंगल के समस्त प्रकार के छह ऋतुओं के पत्र,फूल फलों में स्वयं वृद्धि होती है (केवल ज्ञान के पश्चात् होते हैं)
2. तीर्थंकर केवल ज्ञान के पश्चात् आकाश में विहार करते हैं तीर्थंकर का विहार भक्तजनों के निमित्त से होता है।
3. तीर्थंकरों के माहात्मय से तिर्यंच /पशु जन्म जाति का बैर छोड़कर शांतिपूर्वक धर्मलाभ करते हैं जैसे सर्प और नेवला शेर हिरण एक साथ रहते हैं।

प्रश्न 125 – तीर्थंकरों की दीक्षा के पश्चात् कौनसा ज्ञान प्राप्त होता है ?

उत्तर – तीर्थंकरों की दीक्षा के पश्चात् मन: पर्यय ज्ञान की उपलब्धि हो जाती है।

प्रश्न 126 – तीर्थंकर मौन कब तक रहते हैं ?

उत्तर – तीर्थंकर दीक्षा के उपरांत केवल ज्ञान प्राप्त करने तक मौन ही रहते हैं ।

प्रश्न 127 – वह कौनसा स्थान था जहां पर अंतिम तीर्थंकर ने अर्थ श्रुत का प्ररुपण किया था ?

उत्तर – वह पुण्य भूमि राजगृह में विपुलाचल पर्वत थी जहां पर भव्य जीवों के निमित्त अर्थ का निरुपण किया था।

प्रश्न 128 – अरहन्त परमेष्ठी के कौन सा चारित्र होता है ?

उत्तर – सर्वप्रथम परमेष्ठी के पाँ चवा यथाख्यात चारित्र होता है।

प्रश्न 129 – वर्तमान काल में धर्मतीर्थ की उत्पत्ति कब हुई थी ?

उत्तर – जब चतुर्थ काल में 34 वर्ष (श्रावण माह की प्रतिपदा) रह गये थे तब धर्मतीर्थ का प्रादुर्भाव हुआ था।

प्रश्न 130 – संसारी प्राणीयों की कितनी गतियां होती हैं ?

उत्तर – संसारी प्राणियों की चारों गतियां होती हैं।

प्रश्न 131 – वह कौनसे परमेष्ठी हैं जो त्रिकाल को युगपत (एकसाथ) जानते हैं ?

उत्तर – त्रिकालवर्ती पदार्थों को एक साथ जानने वाले अरिहंत जी एवं श्री सिद्ध परमात्मा ही होते हैं।

प्रश्न 132 – वह कौनसे परमेष्ठी हैं जो सांसारिक बाधाओं से रहित हैं ?

उत्तर – अरिहंत परमेष्ठी सांसारिक बाधाओं से रहित हैं चूंकि उनके सातावेदनीय का सद्भाव रहता है।

प्रश्न 133 – कितने परमेष्ठियों को नियम से क्षायिक सम्यकत्व होता है ?

उत्तर – अरिहंत तथा सिद्ध परमेष्ठियों को नियम से क्षायिक सम्यकत्व होता है।

प्रश्न 134 – शुभ तथा अशुभ भावों से रहित कितने परमेष्ठी होते हैं ?

उत्तर – अरिहंत तथा सिद्ध परमेष्ठी दोनों भावों से रहित होते हैं।

प्रश्न 135 रत्नत्रय के फल से परिपूर्ण कौनसे परमेष्ठी होते हैं ?

उत्तर – अरिहंत जी तथा सिद्ध जी रत्नत्रय के फल से परिपूर्ण होते हैं

प्रश्न 136 – घातिया कर्म के नष्ट होते ही कौनसे गुणों की प्राप्ति होती है ।

उत्तर – घातिया कर्म के नष्ट होते ही अनंत चतुष्टय की प्राप्ति होती है ?

प्रश्न 137 – अरिहंतों का परम् औदारिक शरीर कब होताहै ?

उत्तर – अरिहंत परमेष्ठी का परम् औदारिक शरीर केवल ज्ञान के पश्चात् होता है।

प्रश्न 138 – अरिहंत के केवलज्ञान कल्याणक महोत्सव को सर्व प्रथम कौन मनाता है ।

उत्तर – अरिहंत भगवान के केवल ज्ञान कल्याणक को सर्वप्रथम सौधर्म स्वर्ग का इन्द्र चारों प्रकार के देवों के साथ आकर मनाते हैं ।

प्रश्न 139 – वे कौनसे परमेष्ठी हैं जो स्नातक होते हैं ?

उत्तर – वह अरिहंत परमेष्ठी ही स्नातक होते हैं।

प्रश्न 140 – वे कौनसे परमेष्ठी हैं जिनके समवशरण में 12 सभायें

होती हैं ?

उत्तर – वह अरिहन्त जी (तीर्थंकर)ही होते हैं जिनकी धर्मसभा में 12 सभाएं होती हैं।

प्रश्न 141 – वे कौनसे परमेष्ठी हैं जो जिनकल्पी होते हैं ?

उत्तर – जो हमेशा आत्म चिंन्त में जी रहे तथा अकेले रहते हैं ऐसे परमात्मा को जिनकल्पी कहते हैं।

प्रश्न 142 – तीर्थंकर किसकी साक्षी में दीक्षा को अंगीकार करते हैं ?

उत्तर – तीर्थंकर वैसे तो किसी के प ास दीक्षा नहीं लेते किन्तु वे सिद्ध परमेष्ठी को साक्षी बनाकर दीक्षा अंगीकार करते हैं।

प्रश्न 143 – तीर्थंकर सर्वप्रथम कितने बार में केशों का लोंच करते हैं ?

उत्तर – तीर्थंकर जो सर्वप्रथम दीक्षा को अंगीकार करते हैं तो पंच मुष्ठि में वे अपने केश लोंच करते हैं।

प्रश्न 144 – केवल ज्ञान अरिहंत जी को किस माध्यम से प्राप्त होता है?

उत्तर – यह ज्ञान आत्मा के विशुद्ध परिणाम सहित शुक्ल ध्यान से होता है।

प्रश्न 145 – किस ध्यान से केवल ज्ञान की उत्पत्ति होती है ?

उत्तर – एकत्व वितर्क अवीचार नामक द्वितीय शुक्ल ध्यान से केवल ज्ञान की उत्पत्ति होती है।

प्रश्न 146 – ध्यान तप किसे कहते हैं ?

उत्तर – किसी एक आलम्बन पर मन को केन्द्रित करना ध्यान (अशुभ विकल्पों से चित्त को हटाकर शुभ में केन्द्रित करना ही ध्यान तप है।)

प्रश्न 147 – शुक्ल ध्यान किसे कहते हैं ?

उत्तर – जो अपने शुद्ध आत्मा में विकल्प रहित लीन होने रुप ध्यान है (मन की अत्यंत निर्मलता होने पर जो एकाग्रता होती है) उसे शुक्ल ध्यान कहते हैं।

प्रश्न 148 – अरहन्त भगवान का ध्यान करने पर कितने प्रकार से धर्म ध्यान होता है ?

उत्तर – अरहन्त भगवान का ध्यान करने पर पदस्थ,पिंडस्थ,रुपस्थ, यह तीन रुप से तथा अन्य भी धर्म ध्यान के भेद कहे हैं।

प्रश्न 149 – बारह सभा से सहित समवशरण में विराजित अरिहंत जी का ध्यान कौनसा ध्यान है ?

उत्तर – समवशरण में विराजित अरिहंत भगवान का ध्यान करना रुपस्थ नाम के धर्म ध्यान के अन्तर्गत आता है।

प्रश्न 150 – रुपस्थ ध्यान कितने प्रकार का होता है ?

उत्तर – यह दो प्रकार का होता है – 1. स्वगत रुपस्थ 2.परगत रुपस्थ

प्रश्न 151– स्वगत रुपस्थ ध्यान किसे कहते हैं ?

उत्तर – निज आत्म का ध्यान करना स्वगत रुपस्थ ध्यान है।

प्रश्न 152 – परगत रुपस्थ ध्यान किसे कहते हैं ?

उत्तर – अरहन्त भगवान का ध्यान करना परगत–रुपस्थ ध्यान कहलाता है।

प्रश्न 153 – नियम से मन:पर्यय ज्ञान के धारी कौन से परमेष्ठी होते हैं ?

उत्तर – तीर्थंकर (अरिहंत) जी दीक्षा तप को ग्रहण करते हैं नियम से मन:पर्यय ज्ञान के धारी होते हैं।

प्रश्न 154 – मोक्ष का मार्ग किस क्षेत्र में हमेशा चलता रहता है ?

उत्तर – मोक्ष का मार्ग हमेशा आर्य खण्ड में ही चलता है।

प्रश्न 155 – आर्य खण्ड किसे कहते हैं ?

उत्तर – जिस क्षेत्र में सदाचार से युक्त गुणों का सम्मान दिया जाता है उसे आर्यखण्ड कहते हैं।

प्रश्न 156 आर्य खण्ड में किस तरह की प्रवृति वाले जीव रहते हैं ?

उत्तर – आर्यखण्ड में असि मषि कृषि वाणिज्य,शिल्प कला से सहित चारों पुरुषार्थों को संपादित करने वाले गुणों को ग्रहण करने वाले जीव पाये जाते हैं।

प्रश्न 157 – आर्य मनुष्य कितने प्रकार के होते हैं हैं ?

उत्तर – आर्य मनुष्य दो प्रकार के होते हैं –

1. ऋद्धि प्राप्त आर्य 2. ऋद्धि रहित आर्य

प्रश्न 158– ऋद्धि रहित आर्य कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर – 1. क्षेत्र आर्य 2. जाति आर्य 3. कर्म आर्य 4. चारित्र आर्य 5. दर्शन आर्य

प्रश्न 159 – इस जम्बूदीप में कितने आर्यखण्ड हैं ?

उत्तर – इस जम्बू द्वीप में चौंतीस आर्य खंड हैं (32 विदेह+और दो भरत और ऐरावत में)

प्रश्न 160 – जम्बू द्वीप का आकार किस तरह का है ?

उत्तर – जम्बूद्वीप थाली के आकार का गोल है।

प्रश्न 161 – जम्बू द्वीप में एक समय में अधिक से अधिक कितने तीर्थंकर हो सकते हैं ?

उत्तर – जम्बूद्वीप में एक समय में अधिक से अधिक चौंतीस तीर्थंकर हो सकते हैं। (32 विदेह+और दो भरत और ऐरावत में)

प्रश्न 162 – जम्बू द्वीप में एक समय में कम से कम कितने तीर्थंकर होते हैं ?

उत्तर – जम्बूद्वीप में कम से कम चार तीर्थंकर होते हैं।

प्रश्न 163 – भाव से मोक्ष जाने वाले कितने परमेष्ठी होते हैं ?

उत्तर – भाव से मोक्ष को प्राप्त करने वाले तो अरिहंत जी ही होते हैं।

प्रश्न 164– वे कौनसे परमेष्ठी हैं जिनका शरीर प्रतिमाओं के समान तो है परंतु उनके शरीर की छाया नहीं पड़ती है ?

उत्तर – अरिहंत(तीर्थंकर)जी हैं जिनके शरीर की छाया नहीं पड़ती है।

प्रश्न 165 – वे कौनसे परमेष्ठी है जिनके सर्वाधिक अतिशय आश्चर्य होते हैं।

उत्तर – अरिहंतों में (तीर्थंकर) ही है जिनके 42 अतिशय विशेष होते हैं तथा जन्म के पूर्व में ही रत्नों की वर्षा होने लगती है।

प्रश्न 166 – वे कौनसे परमेष्ठी है जो निर्विकल्प /स्वभाव से ही अपनी क्रियायें करते हैं ?

उत्तर – अरिहंत परमेष्ठी जो निर्विकल्प /स्वभाव से ही अपनी समस्त क्रियायें करते हैं।

प्रश्न 167 – वे कौनसे परमेष्ठी है जो सौ इंद्रों से पूजित होते हैं?

उत्तर – तीनों लोक में 40 भवनवासी देवों,से 32 व्यन्तर देवों से,24 कल्पवासी से, 2 ज्योतिष देवों से इस प्रकार शत् इंद्रों से अरिहंत परमेष्ठी पूज्यनीय होते हैं।

प्रश्न 168 – तीर्थंकर कौन से परमेष्ठी है ?

उत्तर – तीर्थंकर अरिहंत परमेष्ठी हैं।

प्रश्न 169 – यह लोक कितने प्रमाण सहित हैं ?

उत्तर – तीन सौ तैतालीस राजू घनाकार हैं तथा चौदह राजू ऊँचाई सहित हैं।

प्रश्न 170 – मध्य लोक कहां पर है ?

उत्तर – मध्य लोक इस ही पृथ्वी पर है जिसमें असंख्यात् द्वीप तथा असंख्यात समुद्र हैं।

प्रश्न 171 – इन द्वीपों तथा समुद्रों में कौन रहते हैं ?

उत्तर – इन द्वीपों समुद्रों में मनुष्य गति के तिर्यंच गति के जीव पाये जाते हैं तथा इसी लोक में भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिष्क देव भी रहते हैं।

प्रश्न 172 – इन द्वीपों में कौनसे परमेष्ठी पाये जाते हैं?

उत्तर – अरिहंत जी आचार्य जी, उपाध्याय जी तथा साधु जी चार परमेष्ठी पाये जाते हैं।

प्रश्न 173 – अधोलोक कहां पर है तथा उसमें कौनसे जीव पाये जाते हैं?

उत्तर – सुमेरु पर्वत की जड़ के नीचे के भाग से अधोलोक प्रारंभ होता है जहां पर नारकीय जीव सात भूमियों में रहते हैं।

प्रश्न 174 – इन सात पृथ्वियों में कितने बिल हैं तथा उनमें कौन जन्म लेते हैं ?

उत्तर – उन सात पृथ्वियों के 84 लाख नरक बिल हैं जिनमें पाप करने वाले जीव जन्म लेते हैं।

प्रश्न 175 – इन पृथ्वियों में कौनसे परमेष्ठी रहते हैं?

उत्तर – इन नरकों में कोई परमेष्ठी नहीं रहते हैं।

प्रश्न 176– पापों का करना अच्छा है कि बुरा है ?

उत्तर – पापों का करना सबसे बुरा है क्योंकि उसके द्वारा जीव नरक में जाते हैं।

प्रश्न 177 – पापों को छोड़ने से क्या होता है।

उत्तर – पापों को छोड़ने से जीव कर्मों से रहित हो शुद्ध होता है तथा दुर्गतियों से बचता है।

प्रश्न 178 – ऊर्ध्व लोक कहां पर स्थित है ?

उत्तर – सुमेरु पर्वत के अग्र भाग से ऊर्ध्व लोक प्रारंभ होता है।

प्रश्न 179 – यह जो ऊपर सूर्य, चंद्रमा, आकाश दिखता है वह क्या ऊर्ध्व लोक है ?

उत्तर – नहीं, यह ऊपर दिखता जरुर है परंतु इसके बहुत ही आगे 900 योजन के आगे से ऊर्ध्व लोक प्रारंभ होता है।

प्रश्न 180– ऊर्ध्वलोक में कौनसे परमेष्ठी पाये जाते हैं ?

उत्तर – ऊर्ध्व लोक के अंत में सिद्ध परमेष्ठी पाये जाते हैं।

प्रश्न 181– अधोलोक का आकार कैसा है ?

उत्तर – अधोलोक वेत्रासन के समान हे जो नीचे से चौड़ा है ऊपर की ओर सकरा होता है। (स्टूल के समान है)

प्रश्न 182– मध्य लोक का आकार किस प्रकार का है ?

उत्तर – मध्य लोक झल्लरी के समान सब ओर फैला हुआ है।

प्रश्न 183– ऊर्ध्व लोक का आकार किस प्रकार का है ?

उत्तर – ऊर्ध्व लोक मृदंग (ढोलक) के समान बीच में चौड़ा दोनों तरफ सकरा होता है।

प्रश्न 184– वे कौनसे परमेष्ठी हैं जो भूख प्यास, जन्म मरण से रहित होते हैं।

उत्तर – अरिहंत और सिद्ध भगवान जी भूख प्यास आदि से रहित होते है जिन्हें केवली भी कहते हैं।

प्रश्न 185– क्या बिना तीर्थंकर बने अरिहंत होते हैं।

उत्तर – हां अवश्य ही बिना तीर्थंकर प्रकृति का बंध किये भी अरिहंत

प्रश्न 186— केवली कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर — अनेक प्रकार के होते हैं —

1. तीर्थंकर केवली 2. सामान्य केवली
3. समुद्घात केवली 4. उपसर्ग केवली
5. मूक केवली 6. अन्तकृत केवली
7.अनुबंध केवली

प्रश्न 187— अरिहंत जी (तीर्थंकर)कौनसे गुण स्थानवर्ती होते हैं ?

उत्तर — अरिहंत जी संयोग केवली (तेरहवें) और आयोग केवली (चौदहवें)गुणस्थानवर्ती होते हें।

प्रश्न 188— तीर्थंकर परम् पद के धारी कब होते हैं ?

उत्तर — तीर्थंकर जब संयम रत्नत्रय को धारण करते हैं तभी वह शुक्ल ध्यान के ब ल से परम पद के धारी होते हैं ।

प्रश्न 189— तुमने तीर्थंकर को देखा है ?

उत्तर — नहीं,हमने तो साक्षात् तो तीर्थंकर को नहीं देखा परंतु उनके प्रतिबिम्ब के रुप में उनकी प्रतिछाया को मूर्तियों में अवश्य देखा है तथा यह सब जिनागम से उनके स्वरुप को जाना है।

प्रश्न 190— भव प्रत्यय अवधिज्ञान किस परमेष्ठी को होता है ?

उत्तर — तीर्थंकरों को भव प्रत्यय अवधिज्ञान जन्म से ही होता है।

प्रश्न 191— केवली समुद्घात कौनसे परमेष्ठी को होता है ?

उत्तर — केवली समुद्घात अरिहंत परमेष्ठी को होता है।

प्रश्न 192— तीर्थंकरों को दीक्षा तप ग्रहण करते समय कौन उन्हें बोध देते हैं ।

उत्तर — तीर्थंकरों को कोई भी बोध नहीं देते हैं वह स्वयं बुद्ध तथा प्रत्येक बुद्ध होते हैं।

प्रश्न 193— अरिहंत परमेष्ठी ने श्रावकों के कितने मूल गुण बताये हैं ।

उत्तर — अरिहंत परमेष्ठी ने श्रावक के अ ष्टमूल गुण बताये हैं पंच उद म्बर फलों (बड़,पीपल,पाकर,ऊम्बर,कठूमर)मद्य ,मधु, मांस का त्याग ही अष्टमूल गुण हैं।

प्रश्न 194— अरिहंत परमेष्ठी की मुखमुद्रा शांत क्यों है ।

उत्तर — परम वीतरागी एवं समस्त दोषों से रहित होने सेक मुख मुद्रा परम शांत होती है।

प्रश्न 195— क्या अरिहंत परमेष्ठी आहार करते हैं ।

उत्तर — नहीं, अरिहंत परमेष्ठी को भूख प्यास आदि नहीं होती है वह अठारह दोषों से रहित हैं।

प्रश्न 196— केवली भगवान (अरिहंत)के कितने प्राण होते हैं ?

उत्तर — केवली के चार प्राण होते हैं आयु,श्वासोच्छ्वास वचनबल तथा कायबल।

प्रश्न 197— भावश्रुत के धारण करने वाले कौन से परमेष्ठी होते हैं ?

उत्तर — भाव श्रुत के धारी केवली (अरिहंत)होते हैं ।

प्रश्न 198— निश्चय चरित्र के धारी कितने परमेष्ठी हो सकते हैं ?

उत्तर — साधुजी, उपाध्याय जी,आचार्य जी,तथा अरिहंत सिद्ध परमात्मा जी निश्चय चरित्र के धारी (समस्त परमेष्ठी)होते हैं

प्रश्न 199— परम निश्चय चरित्र के धारी कितने परमेष्ठी हैं ?

उत्तर — वर्तमान काल में कोई भी परमेष्ठी निश्चय चरित्र के धारी नहीं हैं (मनोविकल्प को रोकना ही निश्चय है)

प्रश्न 200 —णमोकार मंत्र में कितने परमेष्ठी निराहारी होते हैं ?

उत्तर – णमोकार मंत्र में अरिहंत तथा सिद्ध परमेष्ठी निराहारी होते हैं।

प्रश्न 201– वर्तमान काल में, भरत तथा ऐरावत क्षेत्र में तीर्थंकर क्यों नहीं होते हैं ?

उत्तर – हां उन क्षेत्रों में तीर्थंकर स्वभाव से नहीं होते हैं। क्योंकि महा पुण्य प्रकृति को धारण करने वाले जीवों के द्रव्य क्षेत्र तथा भावों का अभाव पाया जाता है।

प्रश्न 202– इस क्षेत्र में भूतकाल में कितने तीर्थंकर हुये तथा भविष्य काल में कितने तीर्थंकर होंगे ?

उत्तर – भूतकाल में 24 ही तीर्थंकर हुये थे तथा आगे भी 24 ही होंगे

प्रश्न 203 – अरिहंत परमेष्ठी (तीर्थंकर)के कितने गुण शरीर के आश्रित होते हैं ?

उत्तर – अरिहंत परमेष्ठी के जन्मकृत दस अतिशय शरीर के आश्रित होते हैं।

प्रश्न 204 अरिहंत जी के कितने गुण पुण्य के आश्रित होते हैं

उत्तर – तीर्थकरों के केवल ज्ञान के दस अतिशय पुण्याश्रित होते हैं

प्रश्न 205 अरिहंतों के देवरचित कितने अतिशय होते हैं ?

उत्तर – अरिहंत जी के देव रचित चौदह अतिशय होते हैं।

प्रश्न 206– अतिशय किसे कहते हैं ?

उत्तर – सर्वसाधारण प्राणियों में न पाई जाने वाली आश्चर्यकारी घटनाओं को अतिशय कहते हैं।

प्रश्न 207– वह कौनसे परमेष्ठी हैं जिन्हें परमभट्टारक के भी नाम से आचार्यों ने संबोधन किया है ?

उत्तर – अरिहंत परमेष्ठी को परमभट्टारक भी कहते हैं जो वीतरागी सर्वज्ञ एवं हितोपदेशी होते हैं।

प्रश्न 208– अरिहंत परमेष्ठी प्रशात वीतरागी मुद्रा के धारी क्यों कहे हैं ?

उत्तर – अरिहंत परमेष्ठी इसलिए शांत मुद्रा के कहे गये हैं चूंकि क्षुधा, तृषा, भय, राग, द्वेष, मोह, चिन्ता, बुढ़ापा, रोग, मरण, जन्म, पसीना, खेद, रति, आश्चर्य, निद्रा, शोक मद इन 18 दोषों से रहित होते हैं।

प्रश्न 209– तीर्थंकर कब परमेष्ठी होते हैं ?

उत्तर – तीर्थंकर साधु परमेष्ठी होने के बाद ही अर्हंत परमेष्ठी होते हैं।

प्रश्न 210– क्या जीव अरिहन्त बने बिना मुनिराज जी सिद्ध पद को धारण कर सकते हैं ?

उत्तर – अर्हंत पद को धारण किये बिना कोई भी जीव सिद्ध परमेष्ठी नहीं बन सकता है।

सिद्ध परमेष्ठी

प्रश्न 1 –णमोकार मंत्र का दूसरा पद कौनसा है ?

उत्तर –मंत्रराज का दूसरा पद णमो सिद्धाणं है।

प्रश्न 2 – ''णमो सिद्धाण'' द्वितीय पद का क्या अर्थ है ?

उत्तर –जगत के सभी सिद्धों को नमस्कार हो।

प्रश्न 3 –सिद्ध परमेष्ठी किसे कहते हैं ?

उत्तर –जिन्होंने परम शुद्ध रत्नत्रय की साधना से संपूर्ण आठों कर्मों को नष्ट कर दिया है उन्हें सिद्ध परमेष्ठी कहते हैं।

– द्रव्य क्षेत्रकालएवं भय एवं भाव इन पांच प्रकार के सं सार से जो मुक्त होते हैं उन्हें सिद्ध परमेष्ठी कहते हैं।

–जिन्होंने द्रव्य कर्म, भाव कर्म,नो कर्म से रहित अवस्था को प्राप्त किया है उन्हें सिद्ध परमेष्ठी कहते हैं।

प्रश्न 4 –सिद्ध परमेष्ठी कौनसे जीव हैं ?

उत्तर –सिद्ध परमेष्ठी मुक्त जीव होते हैं।

प्रश्न 5 –सिद्ध परमेष्ठी कैसे होते हैं ?

उत्तर –सिद्ध परमेष्ठी अशरीरी तथा समस्त कर्मों से रहित होते हैं।

प्रश्न 6 –सिद्ध परमेष्ठी के कितने मूलगुण होते हैं ?

उत्तर –सिद्ध परमेष्ठी के अ ाठ मूलगुण होते हैं –

1. समकित 2. दर्शन 3.ज्ञान 4. अगुरुलघु
5.अवगाहन 6.सूक्ष्म 7.वीर्य 8.निरावाघ

प्रश्न 7 –सिद्ध परमेष्ठी कहां रहते हैं ?

उत्तर –सिद्ध परमेष्ड़ी उर्ध्व लोक के अग्रभाग में रहते हैं।

प्रश्न 8 –द्रव्य कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर –ज्ञानावरणादि पौद्गलिक कर्मों को ही द्रव्य कर्म कहते हैं।

प्रश्न 9 – भाव कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर – राग–द्वेष क्रोधादि चैतन्य भावों के विकार को भावकर्म कहते हैं।

प्रश्न 10 – सिद्ध परमेष्ठी क्या संसार में लौटकर आते हैं ?

उत्तर – सिद्ध परमेष्ठी संसार में लौटकर नहीं आते क्योंकि वे कर्मों के भार से मुक्त रहते हैं।

प्रश्न 11 – नो कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर – औदारिक वैक्रियक अ ाहार इन तीन शरीर को नोकर्म कहते हैं।

प्रश्न 12 – सिद्ध परमेष्ठी के कौन सा गुण स्थान होता है ?

उत्तर – सिद्ध परमेष्ठी गुण स्थानों से रहित होते हैं।

प्रश्न 13 – सिद्ध परमेष्ठी भव्य या अभव्य ?

उत्तर – सिद्ध परमेष्ठी दोनों न होकर मुक्त जीव होते हैं।

प्रश्न 14 – सिद्ध परमेष्ठी संज्ञी होते हैं या असंज्ञी ?

उत्तर – सिद्ध परमेष्ठी न संज्ञी न असंज्ञी हैं परंतु वह शुद्ध जीव हाते हैं।

प्रश्न 15 – कर्म से रहित होकर सिद्ध जीव कहां चे जाते हैं ?

उत्तर – कर्मों के भार से हल्का यह जीव स्वभाव से लोक के अ ग्र भाग में सिद्ध शिला पर चले जाते हैं।

प्रश्न 16 – सिद्ध शिला कहां पर स्थित है ?

उत्तर – सिद्ध शिला उर्ध्व लोक के अग्रभाग में स्थित है।

प्रश्न 17 – ऊर्ध्व लोक में स्वर्ग के दे व ही पाये जाते हैं फिर यह सिद्ध जीव कहां पर रहते हैं ?

उत्तर – यह सिद्ध जीव सर्वार्थ –सिद्ध विमान से बारह योजन ऊपर

सिद्ध शिला में रहते हैं जो लोकाग्र में है।

प्रश्न 18 – सिद्ध शिला कौनसी पृथ्वी में स्थित है ?

उत्तर – सिद्ध शिला ईष्तप्राग–भार नाम की अष्टम पृथ्वी पर स्थित है।

प्रश्न 19 – सिद्ध शिला का विस्तार कितना है ?

उत्तर – सिद्ध शिला का विस्तार 45 लाख योजन है इसे मोक्ष शिला भी कहते हैं।

प्रश्न 20 – सिद्ध परमेष्ठी त्रस हैं या स्थावर ?

उत्तर – सिद्ध परमेष्ठी न त्रस हैं न स्थावर वे मुक्त जीव हैं।

प्रश्न 21 – सिद्ध परमेष्ठी के कौ न सा भाव होता है ?

उत्तर – सिद्ध परमेष्ठीयों के प रम–पारिणामिक भाव होता है।

प्रश्न 22 – सिद्ध परमेष्ठी कितने होते हैं ?

उत्तर – सिद्ध परमेष्ठी अनन्तानंत होते हैं।

प्रश्न 23 – सिद्ध परमेष्ठी सिद्ध शिला में कब तक रहेंगे ?

उत्तर – सिद्ध परमेष्ठी सिद्ध शिला पर अनन्तकाल तक रहेंगे, वह पुन: संसार में नहीं आते। जैसे दूध दही बनकर घी बन जाता है परन्तु घी पुन: दूध नहीं बनता।

प्रश्न 24 – सिद्ध परमात्मा सिद्ध शिला पर किस प्रकार से विराजमान हैं ?

उत्तर – अपनी अंतिम देह से कुछ कम आकार में सिद्धात्मा खडगासन या पदमासन प्रदेशों से विराजमान रहते हैं।

प्रश्न 25 – सिद्ध परमेष्ठी सिद्ध शिला में किस आधार से रहते हैं?

उत्तर – सभी सिद्धों के ऊपरी भाग समान होते हैं एवं अंतरिक्ष में निराधार रहते हैं क्योंकि वे अशरीरी होते हैं।

प्रश्न 26 – सिद्ध परमेष्ठी ऊर्ध्व गमन करके अंतरिक्ष में क्यों जाते हैं ?

उत्तर –
1. पूर्व मे ऊर्ध्व गमन करने के सं स्कार से जैसे – कुमार चाक को एक बार घुमा देता है फिर वह अपने आप घूमने लगता है।
2. संयोग के अभाव होने से जैसे –तुंबी मिट्टी के लेप का अभाव होने से जल के ऊपर आ जाती है।
3. बंधनों के टूटने से जैसे –कोष फली में एरंड बीज पकने पर बंधन से मुक्त होकर ऊपर आता है।
4. स्वाभाविक ऊर्ध्व गमन होने से जैसे अग्नि की शिखा ऊपर को जाती है।

इन कारणों से आत्मा में गुरुत्व गुण नहीं होने से कर्मों से मुक्त होने पर स्वभाव से ऊर्ध्व गमन कर जाते हैं।

प्रश्न 27 – बाहुबली स्वामी कौन से परमेष्ठी हैं ?

उत्तर – बाहुबली स्वामी सिद्ध परमेष्ठी हैं।

प्रश्न 28 – ऐसे कौनसे परमेष्ठी हैं जिनमें गुणों के अ पेक्षा से कोई भेद नहीं है ?

उत्तर – अरिहंत तथा सिद्ध परमेष्ठी में अनुजीवी (अनन्त गुणों) की अपेक्षा से कोई भेद नहीं है अनन्त चतुष्टय के धनी दोनों परमेष्ठी होते हैं।

प्रश्न 29 – क्या अरिहन्त बने बिना ही सिद्ध पद को प्राप्त कर सकते हैं ?

उत्तर – नहीं अरिहन्त पद के उ परांत ही जीव सिद्धत्व को प्राप्त करते हैं।

प्रश्न 30 – वर्तमान शासन नायक महावीर प्रभु के सबसे अंत में कौन मोक्ष गये ?

उत्तर – सबसे अंत में श्रीधर केवली कुण्डलपुर से मोक्ष गये।

प्रश्न 31 – वह कौनसे सेठ थे जो मुनिव्रत को अंगीकार करके मोक्ष गये ?

उत्तर – वह सुदर्शन सेठ जी थे जो पटना से मोक्ष गये।

प्रश्न 32 – सिद्धों की पहचान बताओ ?

उत्तर – उनकी पहचान तो हम आगम से जानते हैं परन्तु वर्तमान में उनके ज हां पर सिर्फ चरण चिन्ह रह जायें उसको हम सिद्ध क्षेत्र कहते हें, वही उनकी पहचान होती है।

प्रश्न 33 – विशेष रुप से द्वितीय परमेष्ठी का सिद्ध नामकरण क्यों हुआ ?

उत्तर – क्योंकि उन्होंने अपने स्वभाव/आत्मभाव की सिद्धि याने प्राप्ति कर ली है वही सर्व सिद्ध है।

प्रश्न 34 – प्रथम तीर्थंकर ऋषभनाथ जी कहां से मोक्ष पधारे ?

उत्तर – प्रथम तीर्थंकर आदिनाथजी कैलाशपर्वत (अष्टपद) से मोक्ष पधारे।

प्रश्न 35 – अंतिम तीर्थंकर श्री महाप्रभु जी कहां से मोक्ष पधारे हैं ?

उत्तर – श्रीसन्मति जी पावापुरी जी(बिहार प्रान्त)से मोक्ष गये हैं।

प्रश्न 36 – श्री अरिष्ट नेमिनाथ जी कहां से मोक्ष पधारे ?

उत्तर – श्री नेमिनाथ जी गिरनार (ऊर्जयंत गिरी)गुजरात से मोक्ष पधारे हैं।

प्रश्न 37 – श्रीवासु पूज्य स्वामी कहां से मोक्ष गये थे ?

उत्तर – श्रीवासुपूज्य जी चंपापुरी जी (बिहार प्रान्त) से मोक्ष पधारे हैं।

प्रश्न 38 – श्री पार्श्वनाथ तथा सर्वाधिक केवली कहां से आत्म उपलब्धि की साधना करके मोक्ष सिघारे ?

उत्तर – सम्मेद शिखर जी से उपसर्ग प्राप्त तीर्थंकर तथा सर्वाधिक केवली भगवंत मोक्ष को प्राप्त हुए थे।

प्रश्न 39 – इन सभी क्षेत्रों में शाश्वत सिद्ध क्षेत्र कौन सा पर्वतराज हैं ?

उत्तर – समस्त सिद्ध क्षेत्रों में शाश्वत सिद्ध भूमि सम्मेदाचल पर्वत/सम्मेदशिखर जी ही जहां पर देवों द्वारा स्वास्तिक से सुरक्षित क्षेत्र माना गया है।

प्रश्न 40 – सिद्ध नामकरण वाला कोई मनुष्य सिद्ध हैं ?

उत्तर – 'नहीं' वह सिद्ध नहीं है चूंकि वह रागद्वेष मोह तथा सभी कर्मों के आधीन है स्वाधीन नहीं है।

प्रश्न 41 – सिद्ध की प्रतिबिंब/प्रतिमायें होती हैं ?

उत्तर – उनका आकार प्रकार न होने से उनकी प्रतिमा नहीं होती है। परन्तु लोक व्यवहार में एक सिर्फ आकार से निराकार को बताया जाता है।

प्रश्न 42 – क्या सिद्ध परमात्मा अनादि काल से होते हैं ?

उत्तर – 'हाँ' परमेष्ठी अनादि काल से होते आ रहे हैं।

प्रश्न 43 – सिद्ध क्या शरीर सहित है ?

उत्तर – 'नहीं' सिद्ध शरीर ,इन्द्रिय आदिक के व्यापार से रहित होते हैं उनका शरीर नहीं होता।

प्रश्न 44 — **आयु कर्म के पूर्ण होने जाने पर अरिहन्त जी का शरीर किस प्रकार का होता है ?**

उत्तर — जब आयुकर्म क्षय को प्राप्त होता है तो उनका वह अंतिम शरीर कपूर के समान उड़ जाता है।

प्रश्न 45 — **क्या पुद्गल के रुप में अरिहन्त जी के देह के अवयवों में कुछ भी नहीं बचता ?**

उत्तर — "हाँ" उनके शरीर के नख तथा केश बचते है तो स्वर्ग के अग्नि कुमार देव उनकों अंतिम संस्कार कर देते हैं।

प्रश्न 46 — **अरिहन्त जी आत्मा आयु कर्म के समाप्त होने पर कहां चली जाती हैं ?**

उत्तर — अरिहन्त जी की आत्मा लोक के अ ग्रभाग में सिद्ध शिला में जहां तक धर्मद्रव्य है वहां तक चली जाती है आगे धर्मद्रव्य का अभाव है सो आगे नहीं जाती एक स्थान पर स्थित हो जाती है।

प्रश्न 47 — **आत्मा को द्रव्य से मोक्ष कहाँ पर होता है ?**

उत्तर — जीव को द्रव्य से मोक्ष 'अयोग केवली' नामक चौदहवें गुणस्थान से ही होता है।

प्रश्न 48 — **जीव मोक्ष (मार्ग) किस नय से प्राप्त करता है ?**

उत्तर — जीवात्मा निश्चय नय से ही मोक्ष को प्राप्त करता है परन्तु निश्चय मोक्षमार्ग व्यवहार नय से ही प्राप्त होता है।

प्रश्न 49 — पद **अरिहन्तों ने कौन से कर्मों को नाशकर सिद्धत्व को प्राप्त किया ?**

उत्तर — नामकर्म, गोत्रकर्म, वेदनीय कर्म, आयु कर्म इन चारों अघातिया कर्मों को नाश कर सिद्ध पद की प्राप्ति की।

प्रश्न 50 — **नामकर्म के क्षय होने से कौन से गुण की प्राप्ति होती है ?**

उत्तर — सूक्ष्मत्व गुण की प्राप्ति होती है।

प्रश्न 51 — **गोत्र कर्म के अभाव से किस गुण के प्राप्ति होती है ?**

उत्तर — गोत्र कर्म के अभाव से अगुरुलधुत्व गुण की प्राप्ति होती है।

प्रश्न 52 — **वेदनीय कर्म के अभाव से कौन से गुण की प्राप्ति होती है ?**

उत्तर — वेदनीय कर्म के अभाव से अव्यावाधत्व गुण की प्राप्ति होती है

प्रश्न 53 — **आयु कर्म के अभाव से कौन से गुणों की प्राप्ति होती है ?**

उत्तर — आयु कर्म के अभाव से अवगाहनत्व गुण की प्राप्ति होती है।

प्रश्न 54 — **वे कौन से अन्य चार प्रकार के बंधनों से मुक्त होते हैं तब ही सिद्धत्व गुण को प्राप्त होते हैं ?**

उत्तर — (1) प्रकृति बंध (2) प्रदेश बंध
(3) स्थिति बंध (4) अनुभाग बंध
इन चारों बंधनों से मुक्त होते हैं तो सिद्धत्व पद को प्राप्त होते हैं

प्रश्न 55 — **प्रकृति—बंध किसे कहते हैं ?**

उत्तर — आठों ज्ञानावरणादिक कर्मों का स्वभाव रुप होना प्रकृति बंध है।

प्रश्न 56 — **स्थिति —बंध किसे कहते हैं ?**

उत्तर — मूल कर्म जो जीवों के साथ बंधे हुए हैं वे जितने समय तक रहेंगे। उतनी ही उनकी स्थिति का पड़ना सो स्थिति बंध है।

प्रश्न 57 — **प्रदेश—बंध किसे कहते हैं ?**

उत्तर — प्रतिसमय सिद्ध राशि से अनंत वें भाग और अभव्य राशि से अनन्तगुणा कर्म पुद् गलों का आत्मा के प्रदेशों के साथ संबंध

होता है उसे प्रदेश बंध कहते हैं।

प्रश्न 58 – अनुभाग बंध किसे कहते हैं ?

उत्तर – कर्मों का न्यूनाधिक फल देने की शक्ति के पड़ने को अनुभाग बंध कहते हैं।

प्रश्न 59 – कर्म बंधनों से मुक्त होते ही जीव कैसे कहाँ पर जाता है ?

उत्तर – समस्त कर्मों से मुक्त होते ही जीवात्मा ऋजुगति से सीधा सिद्ध शिला में ऊर्ध्वलोक पर ही जाता है अन्य विदिशाओं में नहीं जाता है।

प्रश्न 60 – मोक्ष का कारण क्या है ?

उत्तर – रत्नत्रय सहित आत्मा ही जो मोक्ष का कारण है और कुछ नहीं है।

प्रश्न 61 – वे कौन से परमेष्ठी हैं जो स्नातकोत्तर होते हैं ?

उत्तर – सिद्ध परमेष्ठी ही स्नातकोत्तर होते हैं।

प्रश्न 62 – वह कौन से परमेष्ठी है जो ज्ञान चेतना से सहित होते हैं ?

उत्तर – अरहन्त तथा सिद्ध परमेष्ठी ज्ञान चेतना से सहित होते हैं।

प्रश्न 63 – सिद्ध परमात्मा के निराकार पने का ध्यान करना कौन सा ध्यान है ?

उत्तर – निराकार परमात्मा का ध्यान रुपातीत ध्यान कहलाता है।

प्रश्न 64 – जीव सिद्ध होने के पूर्व कौन सा गुणस्थान होता है?

उत्तर – जीव सिद्ध परमात्मा होने के पूर्व में "अयोग –केवली" नामक चौदहवां गुणस्थान होता है।

प्रश्न 65 – अयोग–केवली गुणस्थान क्या कार्य करता है ?

उत्तर – योगातीत केवली की आत्मिक परिणति जो जीव के अघातिया कर्मों के क्षय सहित मोक्ष की प्राप्ति कराता है।

प्रश्न 66 – अयोग–केवली जीवों की संख्या सामान्य रुप से कितनी है ?

उत्तर – अयोग केवली जीवों की संख्या 598 है।

प्रश्न 67 – वह कौन से परमेष्ठी हैं जो किसी भी तरह से प्रशस्त धर्मानुराग नहीं करते हैं ?

उत्तर – वह प्रशस्त धर्मानुराग नहीं करने वाले सिद्ध परमात्मा एवं अरहन्त जी होते हैं।

प्रश्न 68 – णमोकार मंत्रराज पांचों पदों में सबसे छोटा पद कौनसा है ?

उत्तर – मंत्रराज का द्वितीय पद "णमो सिद्धाणं" ही सबसे छोटा पद है।

प्रश्न 69 – सिद्ध किसे कहते हैं वह कैसे जीव हैं ?

उत्तर – कर्मों से मुक्त जीवों को सिद्ध कहते हैं वह ज्ञानमय निराकार होते हैं।

प्रश्न 70 – लोक में कहे जाने वाले अनेक प्रकार के सिद्ध जीव हैं वह सिद्ध नहीं होते हैं ?

उत्तर – अञ्जन सिद्ध, पादुकासिद्ध,गुटिका–सिद्ध,खड्ग–सिद्ध एवं माया–सिद्ध,यह सभी सिद्ध परमात्मा नहीं होते हैं जो ज्ञानमय निराकार कर्मों से रहित वहीं सिद्ध परमात्मा कहलाते हैं।

प्रश्न 70 – समस्त परमेष्ठी में से कौनसे परमेष्ठी अमूर्तिक (अशरीरि) होते हैं ?

उत्तर – समस्त परमेष्ठियों में सिद्ध परमेष्ठी ही अमूर्तिक होते हैं।

सामान्य परमेष्ठी वाचक

प्रश्न 1 – वह कौन से परमेष्ठी हैं जिनका अनियत आहार/बिहार आदि होते है ?

उत्तर – अरिहन्त जी : आचार्य जी उपाध्याय जी तथा साधु यह चारों परमेष्ठी अनियत बिहार करते हैं।

प्रश्न 2 – कितने परमेष्ठियों को अतिथि कहते हैं ?

उत्तर – चारों परमेष्ठियों जिनकी कोई नियत तिथि अर्थात् जिनका आगमन एवं निर्गमन निश्चित ना हो उन्हें अतिथि कहते हैं।

प्रश्न 3 – वह कितने परमेष्ठी है जिनकी चारों आराधना सामान्य रुप से समान होती है ?

उत्तर – वह चारों प्रकार की आराधना आचार्य जी उपाध्याय एवं सर्व साधु के समान रुप से पायी जाती है।

प्रश्न 4 – वह चार आराधना कौन कौन सी हैं।

उत्तर – दर्शन–आराधना,ज्ञान–आराधना, चारित्र –आराधना एवं तप– आराधना यह चार आराधना हैं।

प्रश्न 5– वह कितने परमेष्ठीं हैं जो दश–धर्मों को समान रुप से धारण करते हैं।

उत्तर – आचार्य जी उपाध्याय एवं सर्व साधु परमेष्ठी दश–धर्मों को समान रुप से धारण करते हैं।

प्रश्न 6 – वह दश–धर्म कौन–कौन से हैं।

उत्तर – क्षमा–धर्म,मार्दव–धर्म,आर्जव–धर्म,शौच–धर्म,सत्य–धर्म,संयम–धर्म,तप–धर्म,त्याग–धर्म,आकिञ्चन धर्म एवं ब्रम्हाचर्य धर्म यह दशधर्म हैं।

प्रश्न 7 – वह कौन है जो सम्यदर्शन (सच्चे श्रद्धान) से दूर रहते हैं।

उत्तर – जो व्रत नियम,संयम तथा धर्मों को धारण नहीं करते वह सच्चे श्रद्धान से दूर होते हैं।

प्रश्न 8 – जीवों को किस कषाय के उदय से सम्यदर्शन गुण प्रगट नहीं होता है ?

उत्तर – जीव को प्रथम कषाय अनंतानुबंधी(क्रोध,मान,माया,लोभ) के उदय से सम्यगदर्शन प्रगट नहीं होता है।

प्रश्न 9 – मंदिर जी में पूजन–प्रक्षालन करने वाले पुजारी पंडित जी एवं उपाध्याय कौन से परमेष्ठी है ?

उत्तर – उपरोक्त सभी कोई परमेष्ठी नहीं होते हैं क्योंकि वह राग–द्वेष मोह तथ परिग्रह से युक्त होता है।

प्रश्न 10 – वर्तमान में भट्टारक जी कौन से परमेष्ठी होते हैं ?

उत्तर – इस काल में भट्टारक जी सामान्य श्रावक हैं वह कोई परमेष्ठी नहीं हैं।

प्रश्न 11 – णमोकार मंत्र में किसी व्यक्ति की प्रधानता है?

उत्तर – इस मंत्र में किसी व्यक्ति की नहीं परन्तु उनके गुणों की प्रधानता कही गयी है।

प्रश्न 12 – णमोकार मंत्र में जिन्हें नमस्कार किया गया है वह परमेष्ठी कौन से लिङ्ग/चिन्ह को धारण करते है ?

उत्तर – णमोकार मंत्र से जिन्हें प्रेणाम किया गया है वह परमेष्ठी जिनेन्द्र भगवान के चिन्ह (जिन लिंग) को धारण करते है।

प्रश्न 13 – वह कितने परमेष्ठी हैं जिनके छह आवश्यक एक समान होते है ?

उत्तर – आचार्य जी उपाध्याय जी एवं साधु परमेष्ठियों के छहों आवश्यक समान रुप से होते है।

प्रश्न 14 — वह छह आवश्यक कौन–कौन से है ?

उत्तर — समता, स्तुति–वंदना, प्रत्याख्यान, प्रतिक्रमण एवं कार्योत्सर्ग यही छह आवश्यक है।

प्रश्न 15— जीव को किस कषाय से उदय से श्रावकचर्या रुप देशसंयम/संयमासंयम गुण नहीं होता है ?

उत्तर — जीव को अप्रत्याख्यान कषाय (क्रोधमान माया लोभ) के उदय से श्रावक चर्या रुप गुण प्रकट नहीं होता है।

प्रश्न 16 — जीव किस कषाय के उदय से साधु/परमेष्ठी पद/गुण को धारण नहीं करता है ?

उत्तर — जीव प्रत्याख्यान कषाय के उदय से साधु पद को धारण नहीं कर सकता है।

प्रश्न 17 — जीवन किस कषाय के हृदय से यथाख्यात चारित्र को धारण नहीं करता है।

उत्तर — जीवात्मा सूक्ष्म संज्वल लोभ कषाय के उदय से अपने स्वभाव को नहीं प्रकट कर पाता है।

प्रश्न 18 — णमोकार माहात्म्य नामक ग्रंथ कितने श्लोक प्रमाण वाला है।

उत्तर — यह ग्रंथ राज 12 हजार श्लोक प्रमाण सहित पूर्वाचार्यो द्वारा रचित है जो वर्तमान में उपलब्ध नहीं है।

प्रश्न 19 — परमेष्ठियों में व्यवहार तथा निश्चय नय को साधन करने वाले कितने परमेष्ठी है।

उत्तर — व्यवहार तथा निश्चय नय को साधन करने वाले आचार्य, उपध्याय एवं साधु परमेष्ठी है।

प्रश्न 20 — णमोकार मंत्र के प्रथम पद का अन्वय सहित अर्थ क्या हैं।

उत्तर — 'नमो लिए सव्व अरिहन्ताण' अर्थात् लोक के सभी अरिहंतों को नमस्कार हो।

प्रश्न 21 — द्वितीय पद का अन्वय सहित अर्थ क्या है।

उत्तर — ''णमो लोए सिद्धाणं'' लोक के सभी सिद्धों को नमन होवे।

प्रश्न 22 — तृतीय पद का अन्वय सहित अर्थ क्या है।

उत्तर — ''णमो लोए सव्व आइरियाणं'' लोक के सभी आचार्यों को नमस्कार हो।

प्रश्न 23 — चतुर्थ पद का अन्वय सहित अर्थ क्या है।

उत्तर — ''णमो लोए सत्व उवज्झायाणं'' लोक के सभी उपाध्यायों को नमस्कार हो।

प्रश्न 24 — पंचम पद का अन्वय सहित अर्थ क्या है ?

उत्तर — ''णमो लोए सव्व साहूणं'' अर्थात् लोक के समस्त साधुओं को नमस्कार हो।

प्रश्न 25 — अरहन्त परमेष्ठी कैसे होते हैं उनकी पहचान बतलाओं।

उत्तर — अरहन्त जी शरीर सहित होते है। यही उनकी मुख्य पहचान है।

प्रश्न 26 — अरहन्त परमेष्ठी कहां पर होते है।

उत्तर — अरहन्त जी ढाई द्वीपों की 15 कर्मभूमियों में रहते है।

प्रश्न 27 — अरहन्त जी/तीर्थंकर कहां पर रहते है।

उत्तर — अरहन्त जी/तीर्थंकर समवशरण (सभा मण्ड) में रहते है।

प्रश्न 28 — अरिहन्त परमेष्ठी की प्रतिमा जी किस प्रकार होती है।

उत्तर — अरहन्त परमेष्ठी की प्रतिमा जी दिगम्बर नग्न तथा वस्त्र आभूषणों से रहित होती है।

प्रश्न 29 — तीर्थंकरों की प्रतिमा जी किस प्रकार रहती है।

उत्तर — तीर्थंकरों की प्रतिमायें चिन्ह अष्ट प्रतिहार्यों से सहित सांङ्गोपाङ्ग रहती है।

प्रश्न 30 – अरिहन्त परमेष्ठी से हमें क्या लाभ है ।

उत्तर – अरहन्त परमेष्ठी से हमें वस्तु स्वरुप का लाभ तथा संसार में सार–भूत क्या है चारों पुरुषार्थ (धर्म–अर्थ काम मोक्ष) की सिद्धी कैसी होगी यह लाभ है।

प्रश्न 31 – वर्तमान में अरिहन्त परमेष्ठी कहां पर है ।

उत्तर – इस काल में विदेह क्षेत्र में अभी भी अरिहन्त परमेष्ठी रहते है।

प्रश्न 32 – क्या इस क्षेत्र में स्थित इग्लैंड तथा अमेरिका में अरिहन्त परमेष्ठी रहते है ।

उत्तर – यह समस्त क्षेत्र भारत क्षेत्र के अंतर्गत हैं इसका काल में यहां पर तीर्थंकर/अरिहंत परमेष्ठी नहीं होते है।

प्रश्न 33 – बीते हुए समय/काल में कितने अरिहन्त परमेष्ठी हुए।

उत्तर – भूतकाल में अनंत अरिहन्त परमेष्ठी होंगे।

प्रश्न 34 – णमोकार मंत्र में क्रमश: पाँचों परमेष्ठी को रखा गया है ।

उत्तर – णमोकार मंत्रराज में क्रमश: पूर्वानुक्रम से पदों को नहीं रखा गया है।

प्रश्न 35 – क्या इस मंत्र राज को साधु परमेष्ठी भी पढ़ते/जपते हैं ।

उत्तर – इस महामंत्र को मुनिराज एवं आचार्य उपाध्याय भी पढ़ते है।

संदर्भ सूची

षट्खण्डागम पुस्तक 1,9 – श्री वीरसेनाचार्य जी

बृहद द्रव्यसंग्रह (टीका) – श्री ब्रह्मदेव जी रचित

कार्तिकेयानुप्रेक्षा – कार्तिकेय जी स्वामी

प्रवचनसार (टीका) – श्री जयसेनाचार्य जी

तत्वार्थ सूत्र(मोक्षशास्त्र) – श्री उमास्वामी जी

मूलाचार (टीका) – वट्टकेर आचार्य जी

जीवकाण्ड टीका – श्री नेमिचन्द्राचार्य जी

नमस्कार मंत्र स्तवन – मुनिश्री मानतुंगाचार्य जी

संयम धर्मप्रकाश

बालबोध धर्म शिक्षक

जैन धर्म बोधक भाग 1,2 – पं.चन्द्रशेखर शास्त्री,जबलपुर

त्रिकालवर्ती महापुरुष – श्री आदिसागर जी महाराज